दंपति-विनोद

COLLEGE

वर्णन

नंबर — ४

नाम पुस्तक — दंपति-विनोद

नाम लेखक — जोसीराय (?) — बीकानेर-निवासी

निर्माण-काल — (महाराजा अनूपसिंहजीका शासनकाल)

विषय — वार्ता - गद्यपद्यात्मक

ग्रंथसंख्या

विशेष विवरण

वर्णन हस्तलिखित पोथीरो जकेसूं नकल तय्यार करी

साइज - ११½" × ८" × ५½"

पाना - ४३६

प्रतिपृष्ठ पंक्तिसंख्या - ३०

प्रति पंक्ति वर्णसंख्या - २४ सूँ ३० तक

लिपि - देवनागरी

लिपिकाल - संवत १८३० (महाराजा गजसिंहजीरै शासनकालमें)

विषय - वार्ता-संग्रह

वर्तमान स्थान - राज्य पुस्तकालय, राज श्री बीकानेर

विशेष विवरण - डाक्टर टैसीटोरीरे [illegible] पोथी नंबर [illegible]
(पद्य गद्य वार्तांरो संग्रह) - Section I Part II
पृष्ठ [illegible]

पोथीमें दंपतिविनोदरो स्थान - पाना नंबर ३८(क) सूँ ६७(क) तक

BITS LIBRARY (RAJ.)

॥श्री गणेशाय नमः। दोहा। समरूँ देवी सरस्वती। मत
विस्तारण मात। वीणा पुस्तक धारणी। विघ्न हरण विख्या-
त।१। गणपति वंदू चरण जुग। कर जोरे नमु सीस।
सिध दे बुधि दे सुमत दे। जग वंदण जगदीस। २। बीका-
नेर सुहावणो। दिन दिन चढ़ते दौर। हिंदुस्थान मुजार
हद। नव कोटी सिर मौर। ३। राज करै राजा तिहां। कम-
धज भूप अनूप। सब-बंधी करणेस-सुत। राठोडां कुल-
रूप। ४। देस राज सुभ देख कैं मनमैं भयौ हुलास।
दंपति-विनोद की वार्ता। कहिस कथा स विलास। ५।
अथ कथा प्रारंभते। एकदा प्रस्थावै आबू विषैं वि
दग्ध मंडण इसै नांम सूवो रहै। माहा चतुर ग्याता।
सर्व सास्त्र प्रवीण। सास्त्र जोवतां सांभलतां वैराग
ऊपनौं जो असत्री संसार बंधनौं कारण छै। इसौ
जांण स्त्री रो त्याग कीनौं। अरु अचलेस्वर रै विखै
मदन मंजरी नांम सारका रहै। सर्व विद्या रीज्ञाता।
चौसठ कला जाणैं। अनेक शास्त्र...... मन मैं
वितर्क ऊपनौं। पुरुष रो त्याग कीनौं। सूवैरी वात
सारो सांभली-------री वात सूवै सांभली। सू
वैरैं मन मैं ऊपनी सारो देखां। सारों रै मन मैं ऊप
नी सूवो देखां। य्युं करतां सुवो सारो दोनुं मिल्या
शास्त्र विनोद री वातां क------सूवौ कहै छै।
॥श्लोक॥ अमेध्य पूर्णे क्रमि जाल संकुले। स्वभाव
दु------ग्रतिनौ। कलेवरे मूत्र पुरीख भाजने। रमंत
मूर्खा विरमंत पंडता.......येपि ब्रह्माद
यो देवा। रिषिय: कपिलादय:। योग रूप---
-- पिनारी वसंगता। १। वार्ता। माहो माही विवाद
हूवौ। घणा विवाद कीयौ। ताहरां सूवै सारो राजा

राजा ।विक्रमादित्य ऊपर दोय था---- आपरणे तपावस माहाराज श्री वीर ।विक्रमादित्य करसी। ताहरां आवतां आ---- पनैं राजा हैं आसीस दीवी। श्लोक। चिरंजीवं चिरं नंदे।चिरं पाल--- ---। चिरंमाश्रीत्य लोकानां।प्रपूरणे मनोरथानां ।१।आशीवाद------ पूछीयौ। सूवा सारो थे कठा आया। किसौ कार्य कहो। तद सूवै---- ---- महाराजा सूवीर परनारी सहोदर। परदुख कारण ते थांरे------ मातलोक रौ इंद्र राजा इंद्र राजा इन्द्र नौ स्वर्ग रो इंद्र उं तीन लोक रौ इंद्र पंच जन रौ प्यारा हार राजा इंद्र ही थारी प्रसंसा करै। आर्या। सत्यजुग वंदवारा त्रेतापांरघु नन्दने। द्वापुरे करण ।विख्याता कलयुगे राज विक्रमा ।१॥वच। सूवौ कहै छै महाराजा चिरंजीव राजा इंद्र तौ ऐकै ही पंखी-------- -------॥राजा कहै कासु कह्यो। सूवौ कहै महाराजा कोइल पंखी थौ। स्वर्ग रै विखैं गयो जाय सबद कीयौ। सबद सुंण इंद्र पुछीयो यो कुण रो सबद। देवताये पूछीयौ तुं कुण छै। कोयल कह्यौ मातलोक रौ जीनावर नाम कोयल छु इंद्र पुछीयौ मातलोक रै विखैं तो सिरखा कितारक जीनावर छै। श्लोक। नीलग्री कजपुकछवे राहं सजलं स्त्रीयां भमर कोकला दासी।खडे तेमधुरा सुरा।१। वार्ता। इंद्र सनमान दे विदाकी नी। यावात राजा घुघू सांभली। कह्यो कोयलनुं इंद्र सनमान दीयौ तौ मोनुं सामो हीज आसी।तद राजा घुघू इंद्रलोक नु चालीयौ। एक मजल गयौ

अरु कहरा लागो । राजा इंद्र अजे सांम्हो ना-यौ इसौ अहंकार कर आप्यौ चालीयौ । फेर बीजी मजल गयौ । फेर इंद्र कहै अजेस नायौ । राजा चूंचू कहै लागो इंद्र नु खबर न हुई का कन्हैअकलदार आदमी कोई नहीं । फेर चालीयो इंद्रलोक गयौ जाय शब्द कीयौ इंद्रसुरा कह्यौ यो अप सब्द कुरा हुवौ । खबर करो दंडीया दौडीया आय पुछीयो जो तूं कुरा पंखी कठा आयौ किसै कार्य । चूंचू कह्यो मोनुं न पीछाणो हूं राजा चूंचू सगले पंखीयां रो राजा हूं । मातलोक हूं आयो । थांरो इंद्र वडौ मूरख छै अजेस साम्हौं नायौ । का कोई समझावंरा वालो प्रधान नहीं । दंडी यां जाय राजा सुं कही । अरु चूंचू ने लेगया । ताह रां इंद्र पूछीयौ तौं सरीखा जेनावर मातलोक मांहे किताइक जीनावर केल करै छै । तद चूंचू कहै । आर्या । प्रथमे अहं द्वितीये लंबग्रीवा । रासभस्य पुत्र वासां वड कंत भक्षं तजं बका । खवै तेम मधुरा सुरा । १ । इंद्रवा क्यं । एकेन कंपते स्वर्गो । द्वितीये केन समायत: ताहा वज्रमइ धरती । किं त्रिजा वंताति रसा तल । २ । वार्ता । सूवो कहै महाराजा चिरंजीव राजा इंद्र तो एक ही पंखी रो शब्द सुन चकित हुवौ । महाराजा तो तीनलोक रा भरण छो । म्हांरो तपावस करो । तद राजा वीर विक्रमादित्य सूवे सारो ही हकी कत पूछ कहै छै । सारो पुरुष अपराध क्युं । ताहरां सारो कहै । दूहो । पुरुष तणों वेसीस नहीं । आप स्वारथ हेत । मारै अ गुरा अवगुरा बिना । रावन सकै कोई । २ । वार्ता । गुजरात देस माहें पाटरा सहर । तेथ रूपसेन नांमा राजा राज करै । तेरै वडी राजधानी तिरा रै लारै

सरी व्यापारी वसै तिहां सागर दत्त सेठ रहै तिण रै बेटो हरदत्त सेठ तिको श्री पतीसाह री बेटी धन मंजरी परणीयो। सो हरदत्त साह धन मंजरी मौलत क्रीडा करै छै। इसै वरखा रितु आई अकास विखैं मैं मेघरी आभा दीसै छै। दोहा। देख गयौ है दांमनी संजोगनी सुभाव। खिन चमकत खिन दुरत। चमकति दमकति दाव।१। बीजल करै झबूकड़ा। बादल वा ल कोर। पौहरे पौहरे बोलीया। सिहरे सिहरे मोर। चमकाति दामिनिं चहुं दिसा। मोर करत अति मंद। मुरझ मुरझ विरहा मरत। सुनि सुनि कोयल सद।३। आज उमंगे च्यार जंराा। छुटि जल हर की धोर रैंण पपीहो सेज पी। तर दादुर गिर मोर।४। वाय। च्यार च्यार कै विखैं बिजुली को चमत्कार करत सुजाणौ एक ग्रह ते निकसी। कुलटा नायका एक ग्रह विखैं अंग दिखाय प्रवेश करत हुई। त्यों देख जैंदै। एक मोर बोली त मोरन की मंडली बोली उझली सु जैसें गुरु कै पद उच्चार करतां शिष्यन की मंडली पढत होय। श्रवन विखैं पपीहा वार वार ध्रम ध्रम बोलैं। तिनके शब्द करि विरहनी व्याकुल होत भई। भुंय मंड हरित देखियन लागी। ज्यों भरतार के समीप आयां अस्त्री सोभायमान देखीयत होइ। अंबरनी लंबर सार खो देखन लागौ। भादू महीनें मेघ वरसै छै। बादर एक हो टूटया छैं। रात्र को समय छै। साह हरदत्त सूतौ छै। धन मंजरी जागै छै। ऐसे मांझ एक फेकारी बोली। कहै छै आज सुं सात दिन मेह वरसतां हुवा छै। हूहू शब्द करि बोली। दूहा। हूहू शब्द जंबक हूवौ। जाणी

बरत जाण। कोई चतुर समझै इसो। नाखे मृतक आंण।१।
वाय। हूं भूखंा मरूं छूं। इसौ कोई नहीं। एक मृतक नदी
मैं वहौ जाय छै तैंकी जांघ माहे नव रत छै काढ़
लै। अरु मृतक म्हारै आगैं राखै। फेकारी कहै हूं आघांत
सुं सात दिन री भूखी छूं। म्हारौ प्राण निकलै छै। या
वात चन मंजरी सुंणी जीवतं पंखी चौपदरी भाषा जाणैं थी।
फेकारी शबद सुणतां ही उठ फुलेल अर राजा मर्दनकर
कपूर पान आरोग अरु चाली। नासें प्रछंन मांटी हूंतौ।
हाथे हाथ सूझै नहीं। बीजली रै उजालै चली जाई छै।
नदी कराडै गई। दोहा। मडौ कालौ भूत सौ वरण नील
विकराल। दुरगत होइ डरावणौ सामे आवै स्याल।१॥
नाय। देखै तौ मडौ वहौ आवै छै। चन मंजरीनी
जली रै ~~कका~~ फबकार सुं मडै नु देख कपड़ा ऊंचा
कर नदी मैं पैस मडौ घींस बाहर काढ़ीयौ। दांतां सुं
जांघ फाड नैं नव रत काढ़ीया। मडौ ले स्यालणी
नु नाखीयौ। हरदत्त प्रछन देखै छै। रत ले चनमंजरी
कपड़ा आला देख सांण सुं सुकाइ घरां चाली। हर
दत्त प्रछन देख चरित्र सर्व देख आगौं आय सूतौ।
वांसा चन मंजरी आय सूती। परभात उठ पिता माता
भायां सुं कह्यौ। म्हारी स्त्री डाकण छै। ईं नु परीकाढ़ौ
नहीं तो हूं मुहले जाइस। पिता वाक्य। दोहा। पुत्रवि
ना सूनो सदन। जद्यपि जन बहु साथि। आप मूवौ पाछै
संपुत। तिण कुंण राखै आथ।१। वार्त्ता। दूसरौ बहू नुं
पीहर ले चालीयौ। आगौ मजल १ तलाव उपर वड छै।
तैं नीचै जाय वैहल छोडी। दूसरौ बैठो छै। तिसै काग
बोलीयौ। ताहरां बहू माथो धूण बोली। गाथा। जौ छंडी

भरतारो। अभक्ष भक्षणं बाला। इने भयं निवासो हिवै कंकर सिरे काटौ।१। वात। मुसरै आग्रह कर पूछीयौ।काग कासु कहौ। बहू कहै। दोहा। काग कहूं सुं कहै। हे ठतल वित्त। बीबी धरा निकाल लै। तरगस टांगु क्षेत्र। ।१। वात। फेर मुसरो कहै काग कहै सो कहौ। बहू कहै। दोहा। एक जु गुन्हो मैं कीयौ। मुसरै मांनी रीस। बीजो गुन्हो जौ करूं। नव तेरै बावीस।२। वात। मुसरै कहौ बहू समझाय कहौ। वहू कहै जीव भाषा समझुं छूं। आगै नव रत्न फेकारी बताया सो देखाया। अर पूछली बातसर्व कही। अरु काग तेरै रत्न बतावै छै। कहै छै मंनु चावलां सी चून घो। अर रत्न काढ़ल्यौ। ताहरां रत्न खोदलीया। बातांसै रत्न वहू ले मुसरो घरै आयौ। ताहरां हरदत्त कहौ हूंटू नहीं। ताहरां हरदत्त नुं पिता सीख दीवी। खंभाइच गयौ। जाय पईसा बौहत कमाया। तैहूं आगै दीप गयौ। आगैं फराकत जोवतां एक देव माया देहरो देख्यौ। पोहर १ दिन चढ़ै तै ताईं रहै पछै अलोप हुय जाइ। सो नगर माहें एक नायका रहै तिसरौ उ खेडौ। देहरै उपर होडमारै कूड कर धन लै। हरदत्त देहरो देख नायका सुं होडमारी देहरो देखण चालीया। राजा साच। नायका असला मसला करि दो पोरै गई। देहरो अलोप हुवौ। नायका जीती। वित्त खोस लीयौ। हरदत्त नुं लूडो कर तेली नुं दीयौ। हिवै घांणी फेरै छै। हरदत्त वाक्यां। श्लोक। न दोरवो दीयते आत्मा। न दोरवो दीयते पार। न दोरवो दीयते स्वामिन्। कर्म दोरवो हि दीयते।१। आर्या। बैठो आवै बैठो जाय। घांणी पेलै खूलर खाय। तेली नूं तेलरी रली। मकसूद दीयैं नूं खलखली। बात। इसै लिख खबर सागर दत्त सुं मेली। सागर दत्त चालराजु

तयार हूवौ। वहू कह्यौ सुसराजी थे मत चालौ हुं जाईस।
धनी तठासुं पीहर गई। जाय मरदी वागौ पैहर घरौआ
डंबर कर चाली। कितरेक दिने दीव गई। तिहां देस वास
री चास वास लीनी देहरा देख अर नायका सुं होडमारी।
प्रात कालही नायका नु पकड़ले चाली। नायका असला मस
ला घणां ही जतन कीया पिण पीहर दिन चड़तां हुयैहले
लेजाय देहरौ दिखायौ। होड जीती नायका रौ वित्त खोस
लीयौ। अरु आगौं वेश्या अनेक जीपकैं केई बांदा करबेठी
था हुता सु सर्व छोडीया तिणामैं हरदत्त नुं आपरै चाकर
राखीयौ। हरदत्त रै खवासा री खलरी। फिरकी अरु पैहर
घारी तेली की कछोटी ले संदूक में रखाई अरु और कपड़ा
पहराया। हिवैं हरदत्त चाकरी करै। तठां सुं बौहत द्रव्य
कमाय चालीया धांख भाईचा आया। तिहां हरदत्त नुं
कपडौ गहणौ द्रिव्य दे कह्यौ जा कमाइ खा। तिहांसु
धनी चाली पीहर आई कितरेके दिने हरदत्त कमाइ
घरे आयौ। दिन धनुं सागर दत्त चाल धनीनु पीहर
सुं ले आयौ। तहरां हरदत्त कहै अस्त्री डाकण छै। इण
नु घर मैं न घातुं। माता पिता सब मिल समझायौ
कह्यौ हरदत्त अविचारी न करु। पच्छै पछितावीस। श्लोक।
अपरीक्षित न कर्तव्यं। कर्तव्यं सुपरीक्षितं। पश्चात्भवत
संताप राजा श्राम्र विनासन। वात। इसा वचन कहि भांति
भांति कर्हि समझायौ पिण न समझै। तहरां धनी
री खल अरु कछोटी काढ हरदत्त रे हाथ दीनी। हर
दत्त समीदौ पडीयौ। तौ महाराजा पुरुष प्रत्यक्ष दुष्टी
होय। जैसा बायर नुं देखणा चाहीयै जो तिण तेली
रै लुंडे हुवै नुं छोडाई ल्याइ। अस्त्री इसी हुवै।
इति श्री दंपति विनोद सारका प्रथम कथा। १।

फेर राजा नीर विक्रमादित्य सभा जोड बैठा छै। आगै सरब बागीया ऊभा छै। बडा बडा अमरात बैठा छै राजा सु ख्याल सु बैठो छै सो राजा तीरश्चगरा सूवा साम्हौ जाय कहै छै। मदन मंजरी सारका कासु कहै छै। तद सूवौ कहै छै। काव्य। भाले भाग्य कला। मुखे शशि कला। लक्ष्मी कला नेत्रयो। दांते देव कला। भुजै जै कला जु चै प्रतंग्या कला। भोगे को कला। गुणे बल कला। चंता मरणसा कला। क्रोधे कार्त्री कला। तत्र प्राते दिने कौरणी प्रते राज्य ते।१। वात। महा राजा चिरंजीव सारो तो आपरै मुहडै झूठी पडै छै। राजा इंद्र जो अस्त्री सै संगत कीवी तो सहस्त्र भग हुवा। रावण पर अस्त्री सुं संगत कीवी तो लंका रो राज्य गयौ। आयौ। एकलख पूत सहस कोड न्याती। ता रावण कै दीया नवा ती। लंका सो कोट समंद सी खाई। तिस रावण की खबर न पाई। जो रावण पाछरो बैठो रहो हुवत तो कांहे नुं लंका जांवंत। दोहा। पावस पंथ कुटंब कल हंसामअ भेदीनाह। वांम कुसील हुंठा मच्छरी। दई विरतौ तांह। १। वात। गुजरात देस अणहल वाडौ पाटण। इंद पाल राजा राज करै तैरै सुभकर नांम प्रधांन महा बुध वंत महा चतुर विभचारी अनंत तिरा नगर मांहे अगर चंद बकाल रहै। महा धनवंत पक्ष परवार रौ धणी तिरा रै भार्या देवकी भार्या अनंत रूप लावन। दोहा। नैंन बैंन अति चातुरी। गज गोनी मन भीय। ऐसी नहीं तिहु लोक मैं और न आवै दाय। १। मंद चालै सुघर कोकिल वैनी नारि। ऐसा रूप निहार कै रही मैंनका हारि। २। हाव भाव विध विध करैं करै नैंन आंतै सैंन। सु घर पुरुष के हिय मैं लगै पैन तैं पैन। ३॥ वात। अगर चंद देवकी सै आसक्त हुवौ रहै। अठ देवकी सुभकर

सुं छनालो करै / मांटी इत्यादिक कोई जांणै नहीं / उंक्र
रतां केतेक दिने अगरचंद खंभाइच नुं तईयार हुवौ / ताहरां
भाई बंध मित्र सैंरा सासु इत्यादिक जोई जीयौ / सु मंगावणौ
कह्यौ / तद रात समै देवकी सुं कह्यौ थेई वंचुं मंगास्यो /
तद देवकी कहै मोनुं अस्त्री चिरत्र ले आवज्यो / जिकै मं
गायो सो वही नांवे मांड लीयौ / युं करतां तठा सुं खंभाइच
ने चालीयौ / उथ गयौ / तठा द्रव्य कमाय नैं पाछै फिरनुं
तयार हुवौ / ताहरां जिके वसत मंगाई सु वही जोय वस्त
सारी ही लीवी / तद मन मैं विचारीयौ / जो अस्त्री मंगामे
कासु छै / वही जोय अस्त्री चिरत्र मंगायौ छै / सारी खंभा
इच फिरीयौ / सु कोई वावडै नहीं / हाट हाट पूछीयौ जेनुं
पूछै सो कहै / आगौं पूछो आगलो पूछै आगै पूछो / कही
कह्यौ नगरनायका रत्न सेनारे छै / अगर चंद कहै / दोहा /
परवसि पिउ परवासि जुच्छनु / पर घर लोयरा आस / पर
हच्छहिजे क कडा पंडिय चार त्रास / १ / वात / ताहरां अगरचंद
नरत्न सैना रै गयौ / जाय पूछीयौ / अस्त्री चरित्र मोनुं देवौ
ताहरां रत्न सैन कह्यौ साह अगर चंद स्त्री चरित्र तौ थारै
घरे टीज छै / अगर चंद कह्यौ मोसुं ऐसी हांसो मत करौ /
जौ लागै सो खरच ल्यौं / अरु स्त्री चरित्र द्यौ / नायका
वाक्यं / त्रिया चरित्त न लभ्ये जो खरचै बहु दांम /
विरलौ को पावै कदा / इह दुर्लभ कांम / १ / त्रिया चरित
अनेक हैं / रे वांणीक गिवार / सिसर विईस न जांणई
गुण औगुण वैहवार / २ / पोठ भरी पुस्तक चलै त्रिया
चिरत्र को भेद / रागी पिंडत पूछीयौ / जामैं पायौ
खेद / ३ / वार्त्ता / अगरचंद नु रत्नसेना कह्यौ / जो पांच
हजार सोनईया मोनुं देवौ तौ उथली थारै अस्त्री चरित्र
ले द्यौं / कह्यौ भलां / कौल कर वेस्या नु ले चालीयौ /

ज्युं पाटगा सुं मजल दोय नजीक आया। आगै अगरचंदमी
हल दीठी बलै छै। अमोलस दौरादेवकी नुं सुभकर सूता
छै। रत्न सेन कलो जो अस्त्री चित जाय। जिको स्त्रीच
रीत्र कहीजै जिको यौ छै। अगरचंद सुभकर प्रधान
रो माथो बाढ नै देवकी रै उठरी रै में मंदीर नै
नैछ्या अगरचंद साथ छोडीयो तेच गयो। वेश्या पइ
सा लै आपरै घरे गई चलती हुई। हिवैं अगरचंद
कितेक दिने घेरे आयो। सबेक डूबो मिलीयो। जिकै
जिकुं मगायो सो आंगा दीयो। रात रै समै मोहलगा
यो। तारां देवकी कह्यो साहजी म्हां मगायो सो
ल्यावो। इगा वस्तु नुं कासुं करस्यो। देवकी हठ पकड़ी
कही वात समझै नंही। तारां रूस बैठी। तारां अगर
चंद तो कामातुर। आंगो यारीस करैसी। आगो धरी
कस्तूरी मांहें गरकाब कियां कार आगै कीयो। तद
देवकी खोलगा बैठी। खोलै त्युं लोही भरीयो कपड़ो
खुलै। तारां पूछै उ कासुं छै। अस्त्री नै मगायोसो
छै। युं करतां करतां सुभकर प्रधान रो मांथो निकलीयौ
देख नैं कह्यो स्त्री चिरत छै। स्त्री देख चुपकर रही। पछ
तांवगा लागी। दोहा। जीमती पीछैं संचरै। साजो पहिली
होय। काज न विगसै आपगो। दुरजन हंसै नकोय
।१। वात। महाराजा स्त्री इसी अपराधगी होइ। आप
रौ चिरत आप ही लखायो। तैं कर कह्यो वेसासको
ई नहीं। जै संगत सु तो पाप लागै। परा वांगा
कीयां ही पाप दुख पाइजै। इति श्री दंपति विनोद
सारो कथा द्वितीय।।२। फेर राजा वीर विक्रमादित्य
सभा जोर बैठौ छै। आगैं अनेक देवता सेवा करै
छै। खांन सुरतांन खडा छै। महाराजा पुरुष लंपटी

दुष्टी पापिष्ट। दुराचारी दुरात्मा। निरमोही होइ। दोहौ।
काम लोचना नार सुं कीनौ बहुत विलास। आय पड़ी
जांजं आपदा भाजौ संकर दास।१। बात। राजा कुरौं कुंरा
काम लोचना। कुंरा संकरदास। सारौ कहै। कनौज देस
कनक सेन राजा। राज करै बडी राजधांनी। तिरांरै चौसठ
रांरांणी। सात कुंवर। इंद्रकुंवर चंद्रकुंवर। कामसेन। वसुदेवा
नागेन्द्र। संतन कुमार सोमेस। एक कुंवरी कामलोचनी
हरभांरा नांमैं प्रधांन। सो राजा कनक सेन भोगी पुरुस
सो वसंत रितु आई। वनस्पती पुरातन पत्र तज्या। नवा
पल्लव धर्‍या। जो भरतार आयां स्त्री जीर्ण वस्त्र उतार
अर उत्तम वस्त्र तथा ग्रहणा पहिर्‍यो होय। सीत मंद सु
गंध त्रिविध पवन बहै छै। पुष्प नकर बेल सोभत हुई
कोकिला शब्द करती हुई भमर गुंजार करते हुए। पुहप
निके सुगंध करि मत्त हुवो। ऐसी बाग बन की सोभा
देख माली बाग के रक्षक नें तसलीम करि वीनती करी
राजा धिराज बाग को मुजरो ल्यौ। दोइ घडी नजर कीजे।
राजा कही जाय जाबता करो राजलोक सुधा आवां छां
कारंज कौ पांणी माली जोतै ही छोडि दीन्हौ। सबरुख
रुख पांणी होय रह्यौ। पुरांणौ पान तथा जोलोन
जर कहीं आवै न छै। सो झाडूदार सिगरे झाडू दे फिरे।
महल ठांम ठांम जरकसी बिछावंणा हुवा। एक चहब
चाक पूर सौं भरै। एक कस्तूरी सौं भरै। एक चहबचा
मैं केसर घोलै। एक मैं कुमकुमा घोलै। जहां तहां सुग
ध मई होय रह्यौ। तितनै राजलोक की आवादांनी हुई।
आगैं खोड सवरख की मरदांनी वाग। यह हां आई।
सोना की छड़ी हाथ लीयां आई। पाछै राजलौक आयौ
सुमांनुं अमरावती राजा इंद्र की मानौं कैलास देखन आयौ

इसौ सौभत राज लोक हूवौ। पाछैं तै राजलोक पधारै।
राजा आंवतां अखाडो मांड्यो। अः आखाडै देखतां गधर्व हा
हा हु हु अपछरा मेनुका त्रिता चीत्रा तिलोत्तमा उरबसी
छह राग अरु छतीस रागणी री गर्व गालीयौ। अैसो
समीत्रा देख कामलोचनां मन मैं विचारीयो। हुं रैवाड
सर्वबरी हुई। जोवन रो फल लीजैं तो जोबन सफल होय
।दोहा। हूनी काफल एह। सफल जन्म करूं माहरो, नित नित
वधतौ नेह। मीठ मांगु कीजीयैं।१। वात। इसै सांझ आपरैं
मुहल आई सो जाली माहे बैठी एक ब्राहमण संकरदास
महा रुपवंत देख्यौ। दोहा। रुप जिसौ कद्रप जिसो उद
धि जिसौ गंभीर जिन नुवलभ मेहसौ सिससो अमल
सरीर।१। वात। महा चतुर महा ग्याती। इसौ देख खलत
हुई। विकल हुइ गई। मूर्छागत हुई गई। सखीयां क्रम
क्रमें सुं छांट सचेत कीवी। दोहा। छांटे पाणी क्रम क्रमां
नाडी ढोलै वाइ हुइ सचेती कामनी। कहै सखी समझा
य।१। वात। सखीयां सुं कह्यौ जो म्हारो चित्त संकरदास
ब्राहमण सुं लाग्यौ। दोहा। ज्युं जलचर जल विन दु
चिंत सुचिंत होय जल पाय। विन देखे दुख होत है देखे
दुख दुरि जाय।१। वात। सखियां कह्यो जो तुं कुंवरी
फूल सुखे थारी म्हारी प्रतंग्या किसी भांति रहसी फेर
कुंवरी कहै। दोहा। करक करै जामैं चुभी लगे प्रीत कै
बांण। सखी बिन मिलीयां ~~सहुणां~~ सज्जणां छूट जाय
जै प्रांण। सखी वाक्यं। मात पिता आग्या विना। वात अैसी
जी होय। विप्र अग्रु साख विण भलां न कहसी
कोय।१। वात। सखीयां भांति भांति समझाय रहांपिण
कुंवरी कहै जो मोनुं जीवाडौ तौ अैो कांम करसौ। नहीं
तो इण दुख मरीस। अर थानुं सराप देस्स। ताहरैं सखीयां

ब्राह्मण संकर री नाम ठांम पूछ ले आयां हिवै कुंव
री संकरदास चूड रा टिगला कर परणीया। ड्योढै
सभै बैठा छै अर छोकरी नु जेहड दे अर पावड सां
रौं ऊभी राखी छै। जो राजा की रांणी [illegible] खिडकी
का सखी आवै तौ जेहड बजाय जो। इसा कहि पावड
सांरौ ऊभी राखी छै। इसै मैं कुंवरी संकर दास कथा
वार्ता करि रसलुब्ध हुवा। तिसै मैं सखी उंघती सु जेहड
हाथां छूट गई। जेहड पवड सांरो पड़ती बाजी। ठणाठण
शब्द हुवौ। ब्राह्मण नु उतार दीयौ। हिवै कुंवरी जो आय
जोवै तौ कोई नहीं। छोकरी ऊंघी हाथ जेहड खिसगडी
छोकरी जगाय कह्यौ कुंण कर्म कीयौ। पाछा जाय बैठी
नाहरां कहै। गाहा। ठंण ठण ठणकार सुणीयं। तिण
कायर हुय भाजगयं। दतीयं तंपिणरे पद सीयं। उतरसै
ती संगत ग्रहीयं। हुई रसलुब्ध मिलो मिल रहीयं। हाथ
हाथ दई तैं काइ न सहीयं।१। वात। कुंवरी आपरै मोह
गाह कहै छै। राजा रांणी आपरै मौहल एकांत बैठा
गाहा सुणी छोकरी साथ पुछायौ गाहा किसै भावमायै
थां कही। सो कहो। कुंवरी कहा। यौ महाराज सोनारपड
तौ देख गाहा याद आई। राजा भाव सांभल चुप कर
रह्या। फेर सभै पाय ब्राह्मण संकर दास नुं बोलायली
यो। नाहरां कुंवरी कह्यौ ब्राह्मण सुं मोनुं आधान रह्यौ
कासुं करसां तद ब्राह्मण कह्यौ मौनुं वात सांबहीजाय
नहीं। कुंवरी कहै छै। सोरठौ। जासुं कीजै नेह तासुं
ऊंड निवाहीयै। सो कहि कुंवरा सु नेह। तूटै काचे सूत
ज्युं।१। ग्रही टेक ना छंडीयै। जीभ चांच जर जाय। मीठौ
कहा अंगारलौ। ताहि चकोर चुगाय।२। काव्यं। आघा
त्पिनो स्तिर:किल काल कूटं कूर्मो रवित सु धरणीय

पृष्ट भागो: । अंभो निर्लिंहति दुस्सह वाडवाग्नै । अंजी कृतः सुकृतः परि पाल संती । पांते ।१। वात । ब्राह्मण कहै महाराजा इतरूपै इसौ कह प्रात समैं संकर तीर्थां रौ कहि निकल गयो । वांसै कुंवरी कह्यौ । दोहा । काच कथीर अधीर नर । क बहु न उपजै पेम । परसराम कसणी सहै कै हीरा कै हेम ।१। तहरां मन माहै विचारीयौ प्रतिग्या रहै नहीं कुंवरी विष खाइ मुई । हिवैं सारौ कहै छै । महाराजा धिराज महाराजा चिरंजीव पुरुष इसो जिदर कठोरचित अपराधी हुवै । इसी भांत सुख भोगवनैं कूद गयो । तै पुरुष रौ वेसास कोई नहीं । इति श्री दंपति विनोद सारौ कथा तृतीय । ३ । फेर राजा वीर विक्रमा दित्य सभा जोर बैठौ छै । मुंहडै आगौ वडा वडा प्रधान उमराव खांन सुरतांन खडा छै । जोतकी वैद्य संगीती चारण भाट कवी स्वर । प्रमुख सर्व बैठा छै । राजा खुस्याल होइ सूवै साम्हौं जो य कहै । मदन मंजरी सारो कासु कहै छै । सूवौ सलांम आशीर्वाद करै । श्लोक । विहंग वाहिनं यस्य त्रिकूचा यस्य भूषण । सालपावांम भागोच । सदैव तुव रक्षतु ।१। वात । महाराजा चिरंजीव सारिका झूठी छै । मैं अनेक शास्त्र सुणीया तिण मांहे स्त्री सदा अन्याइ । अबला कहावै काम इसौ करै मांटी मारतां जोवैं नहीं । दूहो । डाढौ सीतल वन दहै जल पथर भेदंति । अबला विरूची जुं करैं जं देवो ही न करतं ।१। चंडाल पुर नगर चतुरभुज राजा राज करै । चिंतामण प्रधान । वीरम नांम सोनार वसै महा द्रिबवंत लखमीपात्र तिण सोलह विवाह कीधा । सु सोलैही विभचारणीयां । सोलांहीरै त्याग कीनौ । गाथा । नार दंड परतज्य । सैण दंड कुभोजनं । तसकराय सीस खंड दंड मित्र दस दंड अबोलणां ।१। वात । इम जांणा सौलांही

रौ त्याग कीधौ। हिवैं कनक पुर नगर रै विषैं कै सव सोनार रहैं। तिं[illegible]री बेटी वरसां सात मांहै नाम जंगली। ति[illegible] सुं वीरम [illegible]ह कीनौ। एह वै समीयैबा लक थकी स्त्री घरे ले आयौ। [illegible] स्त्री री रक्षा करै परस्त्री सुं संग करंगा न दै। एम करतां वरस सोला रीहुई। पर पुरुष वंछना करै। एकदा प्रस्तावैं पाडोस रा घरे आई हुंती। तिरा सोलां स्त्रीयां रो वृतांत कही यौ। जंगली [illegible] भल रही। श्लोक। कुसंगा संग दोषेरा साधु जावंत विक्रया। एकयोहर प्रसंगाराां। गलै वंधाई घंटका।१। वात। तिवांरै पाडोसरानैं पूछीयौ जांव मांहै हुती कुंरा थै। तियैं कहीयौ बाई सरडफीफी थै। तौ कह्यौ भलां सिंघावौ मांटी आयौ तौ गाल देसी। हुतौ बाप री बेटी जो मांटीरैं माथै जारअरोहुं। तौ सोनार रीबेटी एहवैं प्रसतावै वीरम सोनार री बैहन री बेटी रौ वीवाह थै। तिवारैं भाई वीरम री बहू नैं नरगाद बुलावंरा आवी। तरैं वीरम कहै रांड म्हारी बैंरां सोलैं विगाडीयां। नैं इरा हीनुं विगाडसौ। इरानुं हुं नहीं मेल्हुं। तुं परही घरे जा। बैहन घरे गई। बैहन मेल्ही। जंगली रै डील आग लगी। देखौ मोनुं बंदी खानैं राखे छै। घंरा देखौ जिका वात करुं। दोहा। मात पिता हूं ऊपनी कुलनै पुं नही कार। मित्र मंगाउ पति कन्हा। तौ थासुं कुल आचार।१। वात। एहवै प्रस्तावै जंगली घर मांहै थी। सोनारा कि[illegible] तोला दोयरा लेनैं बिहुं पानां रा बीडा मां घात नैं ऊंची बैठी। तिसडै एक पुरुष सुंदर वसंत जारआवतौ दीठौ। तिरा नुं चीठी मांहि लिखन कहीयौ। पांन चीनी न सोनो नाखीयौ। बीडौ न आधो सोनौं सरडफीफी नैं दीजौ नै थे सरफीफी रै घरे जोजो

BITS LIBRARY BITS

जार कहीयौ तथास्त जार दुती रै घरे गयौ दुती आदर
दीनौ। सर्व गंगली री वात कही सरौ सांझै वेगा आव
ज्यो। पर पुरुष स्त्रीयांरी वात समझुं छुं। वसंत घरे गयौ
सर्व कीधी सोनो ले वीरम रै घरै गई। सोनी कहै क्यों
आया। दुती कहै सोनैरा पइसा करणां। सोनी कहै सोनौ
तोनुं थे घरमांहे बांसौ। घरमांहे गंगली आमती थी। दुती
तहां गई। गंगली संन्मान दीन्हौ। घडी २ रहे नै सर्व वाता
समझाउं। हुं जावुं तठा पछै कहे म्हारो पेट दुखै छै। जि
का आइ दुती तिणारी दिष्ट हुई। आंरा नै पेट मसलावौ
इसौ कहै। इसो परपंच करनै बैठी छै। तितरै सोनार
आयौ न कहीयौ सोनौ पईसां पांच सौ छै। दुती पईसा
ले घरे गई। तितरे गंगली रुदन करणा लागी पेट
दुखै छै। आक्रंद करै छै। दुती घरै गई न जारा नै मोटौ
मारौ लीनौ। तिणा समय वसंत जार आयौ। कह्यौ गंग
ली तोनुं मिलाईस। रुहवै समै गंगली भरतार नुं कहवा
लागी रे अभागीया तुं कुंण घर मांहें ल्यायौ। तिणारी
दिष्ट हुई। अन उणानुं आंरा जो मोनुं मुकारे। म्हारो पेट
सांझो हुवै। अन्यथा मरुं छुं। हिवै संध्या समै वीरम
दुती रै घरै गयौ। म्हारै घरै पधारो थांरी भोजाई रो
पेट दुखै छै। हाथ फेरौ। दुती कहै रातरो समै छै म्हारी
आघमी रात मारै माहें छै। तै उपाड नैं माथे लेजालो
तो हुं आउं आवुं। सोनी कह्यो भलां। वसंत नु मारैमा
घाल ऊपर गलसौ बाधौ। वीरम माथे लीयौ। दुती
सोनी घरे ले आयौ। माटौ मालीयै ऊपर मेलीयौ। दुती
सोनी नु कह्यो थे बाहर जावौ। हुं समाचा करीस हिवैं
जार नुं बार काढीयौ। गंगली जार मन भावंता भोग
कीया। मास २ दुती जार सोनार रै रह्या। जाहरां गंगली अपत

हुई तारां मांटी नुं कह्यौ हुं समाध हुई। थे सरडकीरी
नु सीख देवो। आप हूं पूछौ तो देनै सीख दीवी। सं
भ्यां समै सोनी माथै मारौ लेनै सरड कीकी साथ मार
ग माहें सांड लड़तां थकां वीरम नुं धको लगीयो मारो
पडीयो नै फूटो मांहथी जार नीसर नैं हाथ मां भाटो
झाल नै वीरम नुं मारण लागौ। मैं पेसाब करतां
ऊपर मांटी नाखीयो। दूती कहै म्हारौ चित खेरुं कीयौ।
एक बांह जार पकड़ी। एक दूती पकड़ी दरबार डुं खां
चै। मुंदड़ी दूती नुं दीन्ही। माला जार नुं दीवी। पछै आय
स्त्री रै पगे लागौ कहीयो सोलह स्त्रीयां थी इधकीता
नुं नमस्कार। तीणै कारण कहुं छुं माहाराजा धिराज
महाराजा चिरंजीव स्त्री माहा दुष्ट अपराधी निपट कठोर।
कहावै अबला काम इसा करै। इति श्री दंपति विनोद
सूवा कथा चतुर्थी ४। फेर राजा वीर विक्रमा दित्य
सभा जोड़ बैठो छै। आगे वडा वडा वाजींत्र ऊभा छै
अनेक देवता जै जै शब्द करै छैं। छ राग छतीस
रागणी गायन हुवै छै। आप पंच डंड रौ छत्र ऊभो
कीयौ छै। मणि मय रत्न जड़त सिंघासण बैठो छै।
इसै मैं खुस्याल होई राजा सारां साम्हौं जोइ कहै छै।
विद्यमान सूवो कासुं कहै छै। सारो कहै छै। सूवौ
खिलाफ वात करै छै। जाणौ छै हुं चतुर थको वातां
करूं छुं। पण सो कूड हूं साच कहूं छुं। श्लोक। स्वा
धीनोपि कलत्रो। नीचपरदार लंपटो भवति। त्रिआसर
तीरे। काक कुंभोदकं पिब। १। वार्ता। मेदपुर नगर तिहां
राजा मानधाता राज करै। वडी साहबी दलै गाजै
जैरै धरती ऽ स्त्री रै रूप रहै तिण सुं अत्यंत प्यार
धरती राजा नुं बोल दीन्हो। जो हुं राजा रै साथ बल सं।

सो राजा परीक्षा लैंण नु भोमीयां। माथै जाबै कूडौ
ही कहायौ। राजा काम आयौ धै के साथ हुवौ धरती
कह्यौ हुं कै साथ हूं मो पर कितराही राजा हुइ गया।
।श्लोक। नाहं कस्य कुले जाता। नाहं कस्य वरांगना। ख
खुरखलु धारा। वीरभोग्या वसुंधरा।१। केते पिंडत पल्लार
केते गये व्युपल। वीर विचक्षण हुय गये। तो परण
धरण अलह। वात। धरती इसौ कह्यौ। यौ जाब राजा
नु मालम हुवौ। राजा मानधाता दले पांगलौ हूवौ अगलां
नुं पांणी। पाछलां नुं कीच। ता पाछलां खेह उडै आग
ला धरती चालै पाछला सवा गज लीद माहैं चालै। ताहि
पाछला लीद आगै चल सगै नहीं। इसौ राजा मानधाता
हूवौ। तिण रै दल री संख्या।। कवित्त।। चक्कवे मान
नरंद भूमि भुगवै निरंतर। बारैसै वर नारि पद्म द्वादस
मिलि पक्खर। हस्ती पद्म सप्त। उठ गिण अरब चित्तर
बीस अरब बाजित्र। धनरवधर अरब बहुत्तर। नर नंरद
नरपती। महा जोध जोधानर फेरवै आंण चिहुं चक्कवे
इसौ मान महिप त्रवर।१। नगरी जोजन बीस। बास
पंण बसै अनंत तस। द्वादस सहस बाजार बसत
चक्कवे दखिण दिस। सरवर सहस सपत्त। अष्ट
सै कूप बखांणौं विमल वाइ पंच सै नीर निरमल
भरि आंणि। दिन दिन गुडी उछलै। सदानंद आंदरली
कुंकुम नगर नित भुगवै। सुमान धाता चक्कवै रली।
२। वार्त्ता। इसौ राजा मान धाता चक्रवर्त्ति हुवौ। छः
खंड रौ भुगता हुवौ। तिण मानधाता रै एक डीकरी
नांमे चंद्रकांता हुई। खोड़ शवरिती अंनंत रूपवंत महा
चतुर ज्यात ~~बत्तीस~~ बत्तीस लक्षण संयुक्त सारख्यात देव
कुमर इसी चंद्रकांता। आसा पूरणी रौ दरसण करै। ईसर

गवर पूजै। दूहो। गवरी ईसर पूज कर रहै ले जो
नाम भव सुधरै बंधन करै। पावहि मोटौ संभ।१।
वात। इसौ नित्य घरू क्रम करै। कुंवरी रा इसा चित्र
देख राजा रांणी मन आतुर हुई जौ वाई वर जोग हुई
ताहरां राजा मन मैं विचारीयौ जौ हुंणा किणानुना
लेर मल्हुं। इसौ जोण स्वयंबर रचायौ। देस देसनुं
कागद दीया। सर्व राजा देसाधिपाति आय भेला
हुवा। स्वयंबर रचीयौ छै। राजा सर्व भेला हुवा
छै। पंकत कर विराजै छै। आगै नृत्य हुवै छै।
दोहा। भूपरूप नीकें वनें देख रहे हैं सर्व। कहा सु
भट नाटक कहा। जायौ इंद्रको गर्व।१। वात। राजा
सर्व खुस्याल सु बैठा छै। मन उछाह छै। उजांणो
छै मोनुं वरसी उजांणो छै मोनुं वरसी। चंद्रकातां रै
हाथ वरमाला छै। सर्व राजवी बैठा छै। चंद्रकांता
फिरै छै देखै छै। नाटणा मुहडै आगै विरद बोलती
जाइ छै। राजा वीयांरा। कुंवरी देखती जाय छै। जिको
राजा जिसौ छै। तिसा भाट पा वखांणा करै। कुंवरी
सांभलै। इसै भाटणा जपतरा वखाणा करतां सु कुंवरी
जगपत पंमार रै माला पहरावी। जगपत सुं चंद्रकां
ता रौ व्याह हूवौ। बहुत उछाह सु हुवौ। घणौ दाइजौ
दीयौ। दोहा। गाम सत सत्तर दीये। हैगै वीस हजार।
रथ पायक सिन्या सुवरण। ताको अनंत न पार।
१। वात। इतरौ दायजौ दीयौ। गोल गुलाम दासी मा
दुकी धाय वडारणायां दीयां। तठा सुं चालीया जगपत
रै देस आया। तठै जगपत नैं चंद्रकान्ता अनंत सुख
भोगवै लागा। मांहि २ मादुकी दासी सुं राजा बोलै।
रांणी लखीयौ। रांणी राजा सुं घणौ ही पालीयौ मिना

जगपत मानै नहीं। दोहा। चंद्रकांता इम-चवै। जगपत राजा जोय दासी कै संसर्ग तैं घर घर मागी भीख। १। एक दिन रांणी सिंगार करै छै। सद्‌रस्त रौ समा जम छै। चांदणी रात छिटक रही छै। चंद्रमा अमृत श्रवै छै। चंद्रमा रात री जोत एक हु गई छै। न जांणीयै चंद्रमा छै कि रात उज्जल छै। ऐसी उजली हंस हंस कु पासै बैठो देखै नै छै। जल नृमल हूवा कमल प्रफुलत हूवा छै। वनस्पती रस श्रवै छै। इसै समयै चांदणी बिछावणा कीया छै। रांणी सिणगार सजैतीज छै इसै मांझ माटुकी दीवौले मौहल चढ गई। रांणी दीठो। रांणी रीस कर झरोखै कूद पड मुई। तिणा सुं क हूं छुं महाराजा चिरंजीव पुरुष इसो लंपट हुवै। तिणासुं किसी भांति वस हुवै आवै। गुलांम घरां बीवी अरु राजा मानधाता री कुंवरी क्युं ही न जांणी। पुरुष महा लंपटी महा धूरत कुल्ला। इति श्री दंपाते विनो सारो कथा पंचम। ५। फेर राजा वीर विक्रमादित्य सभा जोर बैठो छै। आगै वडा २ वाणीया हाथ जोर ऊभा छै। गायन गावै छै। नाटक नृत्य करै छै। चारण भाट विरद बोलै छै। पंडितां री पंक्त बैठी छै। देवता जै जै शब्द करै छै। आंनन्द खुस्याल सुं राजा सूवा साम्हो जोय अरु कहै छै। जो मदन मंजरी सारो कासु कहै छै। तहरो विद्या मरा सूवो आसीस देवै छै। श्लोक। उत्तम वल्ली रि पुजा कन्या। सा कन्या यस्य वल्लभा। तस्य हरिरिपु स्वामी। सदैव रक्षितु। २। वात। माहाराजा चिरंजीव सारका अकल बाहरी कूडी वाता कहै छै। काही शास्त्र री वात कहै तो जाणी जै। मनकल्प करै छै।

।गाहा। अन्न रमइ निरर कइ अन्नं भासेइ चिंत एअन्नं।अ
न्नसेइ दोसा। कवा कुवडी कांमिनीजय्हु। वात। अ। ~~भोज~~
भोगीपुर इसै नांम एक नगर तिहां रामसेन राजा राज
करै। तिणरी बडी साहबी।लाख पाखर पडै तिणा सहर में
चौरासी चौहटा नवबारी नगरी।सोमाहा ~~छता~~पी राजा
तिणरे कालंतर करेली सुणीजै नही।सदा ही सुख भोगवै
छ दरसण। छिनुं पाखंड रहे एणली दिसा विखैं जाकी
कीर्त्ति छाइ। छतीस राज कुलीजा की सेवा करैं। सजन स
हित उमराव साहित परवार सहत भुंजाई जीमैं। नाना प्रका
र का षटरस भोजन करै।कपूर साहित तांबोल आरोगै।कुं
कुम कस्तूरी इत्यादिक लेपन करै।पाछैं शुक सारिका कतू
हल करै। तीसरै पौर सभा मांहि बैसे।न्याव तपावस
होवै।पाछै संध्या वंदन करै।पाछै सिव तत्व की साधन
करै। स्त्री संघाते सुख भोगवै। इसी भांत सु नित्य क्रिया
क्रम करै। पिण छोरुं नही।तै राजा रामसेन बहुत चिंता
तुर। देवी देव मनावे जप जाप घणा ही करावै।एचिंता
नित्य मेव रहै। संसार में पुत्र विना क्युं नहीं श्लोक।अपुत्र
स्य जातं नास्ति। ~~स्वर्गो~~ स्वर्गो नैव च नैव च। तस्मात
पुत्र मुखवा इष्ट्वा पस्चात धर्म समाचरेत।१। वात। दे
देवी पूजतां केतीक दिने राजा सुं भुवनेश्वरी देवी प्रसन्न
हुई।सुपनैं आय कह्यौ राजा थारै पुत्री हुसी। गाहा।
दिवारा वरं सिद्दारा दरसरां। गुरु नरंदसन मानं।जई
भोम दिव्यं नइ।मापजै पुनरेहा।२। वात। देवता वर सुं बेटी
हुई। राजा खुस्याल हुवौ।अरु कह्यौ कुंवर जायौ।कितराही
दिन वितीत हूवा। सर्व लोक जांणै जो राजा रै कुंवर छै
कुंवर रो नाम प्रजापति दीयौ। वरस ७ तथा ८ हुवौ ताहां
सिलारै बरछी दे घोडै चढै।भोमीया सह ~~ढब~~ गया तुं

करतां कितरे हेक दिने राजा भीमसेन मगध देस रौरा जा तिरारौ नालेर आयो। ताहरां राजारांणी अरु विचारीयौ जो म्हारै तो कुंवरी। अबै नालेर कासुं करां सोच पडीयौ। ताहरां राजा रांणी अरु कुंवरी तीनां ही सोच कर विचारी जो नालेर लीजैं तौ कुंआ कुड फाटै न लीजैं तो परा कुड फाटै। दोहा। कै पीय आवै मारीयौ कै पीय आवै मार। बिहुं प्रकार हे सखी मादल खूमैं बार।१। वात। राजा रामसैन इसी विचारी जो राम करसी सो होसी। दोहा। देव जोग तैं सब हुवै। राजा रंक स कोइ। करण हार करता पुरुष। करता करै सु होय।१। वात। श्री परमेसर सारै नालेर घणौ उछाह सुं घणौ आडंबर सुं लीयौ। घणी सझाइ सुं सामैलो कर नालेर लीयौ। वीवाह थापीयौ। घणौं आडंबर सुं जान कर चालीया। घणा उमराव वाणीया घणां चारंण भाट मंगत जिन विरद बोलै छै। बाहरतौ खुस्याल सुं जांन चाली जाय छै। घणा घोडा घणां रथ, घणा हाथी। इसै आडंबर सुं चालीयौ जावै छै। अर मन में चिंतातुर छै। जाणौं छै कपट फाटसी। हे दईव कासुं कीजै। इसौ सोच करै छै। धान पांणी भावै न छै। रात्र नींद आवै न छै। इतै मजल पांच तथा ६ वीतीत हुई। उतपरी सीव लंघणा पारकी सीव मांहें वडीया। सु आगे एक वडौ वृक्ष देख मेरौ कीयौ। तिंण पर एक भूतांरो पातसाह अस्त्री संयुक्त रात्री समै क्रीडा करै छै। सो भूतणी कहै छै तूं पातसाह महरवांण कहीजै तो स्त्री छै अरु परणीजण जाय छै। ईयौं नुं अस्त्री रो पुरुष करै तो जाणी जै। भूत वाक्यं। काव्यं। उद्यत जद भानु पश्चमायां दिसायः विचरति पुन मेरु सीत तो जाति वह्नी।

विकसति यदि पद्म पर्वता ग्रेसिलायां। तदांन चलं तंभाव नी करम रेखा।१। भर्ता चरामोगाणीको वासिष्ठ।सूर्यादिकेतो बलयो। पिलंग्र।सुखंन भुक्तं दिन मेकमीता।स्यात् पूर्वजन्म लिखितं न चलि विधाता।२। वात। फिर स्त्री कहै जैणवे चा री लिखियौ मिटै नहीं तौ थारी किसी सत्ता।ताहरां स्त्री रै कहै भूत आय कुंवरी नुं पूछीयौ जो तूं परणीजणनें चाली सो कासुं करीस।कुंवरी कर नामस्कार कर कह्यो थारौ दरसण निरफल न होय सौ करौ।ताहरां पातसा कह्यौ मोसुं कौल कर ज्युं हुं म्हारौ।लिंग तौनुं दीयौ पारो उतार मैं लीयौ।ताहरां कुंवरी कह्यौ तथास्तु और कह्यौ जौ पीरतो म्हारो मोनुं देई थारौ तु ले जायो इसौ कौल कर तठा चालीयौ।हिवै कुंवर खुस्याल हुवौ दिन दिन फूलतौ जावै छै।घणौं खुस्याली सुं वीवाह कीयौ।सब परवार खुस्याल हुवा वीद वीदंणी खुस्याल हुवा।हिवै मनकपट कर उथीवरस १ रहीयौ।जाणीयौ जो पाछौ जाईस नौ आपणा आयु च भूत उरा लेसी।हुं जेसड़ो छूं तिसडौ ईज हो इसौ इसौ जांणा वरस १ रहीयौ।कुंवर रै कुंवर जायो हिवै भूत आपरै ठिकाणौं बैठो थो सो कहीं जोग लुंठाजोरा वरी भूत नुं गरभ दीयौ।श्लोक। उपकारो नैव कर्त्तव्य। जाइसे ताइसे नरे।उपकार प्रसादेन भूतो भवति गर्भत १। वार्ता। तेसुं बेटी जाई।नांम करणरा दीयौ सो कहुं छुं माहाराजा प्रत्यक्ष देखो।अस्त्री इसी अन्याई हुवै।पुरुष भूत भलाई कीवी तौ गरभ रहीयौ।कौल कूडी हुई गई।इति श्री दम्पाती विनोद सूवा कथा। बत्तमी:।५। फेर राजा वीर विक्रमा दित्य सभा जोर बैठो छै।आगै वडा२ वागीया ऊभा छै।देवता जै जै

शब्द करै छै आनंद खुस्याल सुं राजा सारो सांम्हो जोय
कहै छै मदन मंजरी विदयमरा सूवो कांसुं कहै छै।
फेर सारो कहै छै सूवो झूठो छै। मूरख थको वातां
वर्णाय वणांय कहै छै। काग कुत्तां कुमाणसां जीभां
उगरा ताह आडी दीजै जुंई घणी। दूर वसीजै तांह॥१॥
वात। महाराजा चीरंजीव कुसमावती नगरी तिहां रिण
जीत राजा राज्य करै। सो बडो राजा वडी साहबी
तिरा राजा रै सात रांरां। तिरारै सुख निधान नांमैं
प्रधांन सो बडो अकलदार बुधनिधान मतीसागर। दोहा।
राज नीति रत राज रित सुचि सर्वज्ञ कुलीन। धर्मी सुर
जलसील तुल्य। मंत्री मंत्र प्रवीरा॥१॥ सो राजा रिराजीत
बडो प्रतापीक राजा। सो भोगी पुरंदर सोमद अंध सो
थको गैर मौहल रहै। राज काज री वात पूछै नही।
छमास गैर मौहल रहै। सो देस सारो ही ग्रासीये दबा
इ लिया छै। दिलो दिन भोमीया जोरा उभा रह्या। राजा
छठै मास १ दिन मोहलां देवै। तै दिन सिकार खेलै। राज
काज री अरज करंरा पावै नही। अरु अरज करै तै नुंगर
दन मारै। तिरा सुं अरज कोई करै नहीं। राज छै सु सुख
निधान नुं सांपीयो छै। सुख निधांन बुध घणी ही केव
लै परा भोमीया भूम दबावंता जावै छै। मुंह तोलाणां
घणींपा ही करै तोही रहै नहीं। इसै मांझ एक दिन
राजा सिकार खेलरा नैं चढीयो। साथै बडा उमराव सुख
निधान मंत्री छै। मारग जाय छै एक घुघु पासै बौ
बोलै छै। तिसैं राजा प्रधांन नुं पूछीयो जो घुघु कि
सुं कहै छै। तद मंत्री विचारीयो हिमैं अकल कांम छै
आंपा राख अरज कीजै औसर छै। खर अवसर रौ
बोलणो सरलो जो सद विरा अवसर रो बोलणो रुडो

मांरगास रद। १। वात। कह्यौ महाराजा चिरंजीव घणां वरस जीवै र पूत दोनु हीं सगा छै सु एकैरी दीकरी एकैरौ दीकरौ। सो दीकरै वालौ पीहा मांग छै। सो दीकरी वालौ कहै छै। दोहा। च्यार सहर के वित्त कौ दईस बोहली दात घर म्हारौ नान्हो नहीं करै ब्याह की वात। १। वात। जो मासच सुरतो रहि देस थसूना होसी भोमीया दवाय लेसी। देस उजड होसी। वित्त घणां री हलसी। ताहरां दाउजो घणौं रीज देईस इसौ कहै छै प्रधान सु राजा कहै छै सो नगर किसा कुंरगा सो मंत्री कहै सो माहाराज रा देस ताहरां राजा कोपाय्र त हुई और प्रधान नुं कह्यौ म्हारी धरती मारै इतो प्रथवीमैं कुंरगा छै। पैमाल करूं जैसें रामचन्द्र रावणरी गत कीवी त्युं। दोहा। कौन भूमीयौ भूम पर दौड करै छै आल। तिंरा ज्युं तोडुं छिनकमैं करूं मारपैमाल। १। वात। तद मंत्री कहै रत्नपुररौ राजा सुरसैन धरती मारै छै। राजा कहै इणि साइत रत्नपुर साम्हा मेरा होय। तीसरै पोहर कूच। इतरै सबै साथ। य भेलौ होवै। राजा चढीयौ सुरा हांम हांम कुंवर पूत चढीया। साथ भेलो होय ताही चढ़ चालीया। से इसा चालीया जैसैं श्रांवण भाद्रवै कै लोर चलै। आंवत ही तुंग र होय पडीया। सो जांणौं हांम हांम धारोला वरसै छै। तरवारां रा चमचमात हुवै छै। सो जांणौं चिहुं दिस बीजली भबत्कार करै छै। इसौ लोक भागा। राजा सूरसैन रौ बेटौ धांरौ हुतो सो पुरव तिणौ धाले छुटो। मारतां मारतां जाय रत्नपुर लागा। लोक त्रिहस निहस कर दीयौ सरब भाज जाइ गढ चढीया। राजा रिणजीतरी जैत हुई। इसै मांझ राजा सूरसैन री बेटी कुरंग नयना राजा रिणजीत देख

मोहित हुई। कहै बडौ भोळी पुरंदर सुराणीयौ हुतौ सो इणौ हीज (?) है। संसारमैं जीव तण्य धन जो इणानु वरीजै तौ। इसौ हठ लीयौ। अर माता पिता सुं कहायौ। जो मीनुं इण राजा नु परणा... । नहीतर कावर भ्रष्टणा करीस थांनु सराप देइस। राजा सूरसेण सुण चुप हु रह्या अर कह्यौ परमेश्वर करै तौ छोकरी किणहीरै न जामै। दोहा। बेटी हुती जद कदी जीवन पावै सुख। सौगा करै आई घणी वधती वधई दुख। १। श्लोक।। वरं वनं वरं व्याघ्रं स ...नं विभक्षणं। व्यं ध्यानं विवरा वास। न सुता मुख दर्शना। ।२। वात। राजानुं दोनुं वाता जाब देणौ कठण। परणावणुं करी। तद राजा रि जीत सुं सलाह कीवी अर नालेर मेल्ही यौ। राजा रिणजीत कुरंग नयना रा इसा वचन सुण खुसी बहुत हुवौ। राजा सूरसेन फेरा फेर... दिवाय दिलगीर थकै विदा दीनी। उठा सु राजा रिणजीत चाल कुसम पुर आयो। तिमैं राजा कुरंग नयना सुं नाना प्रका रा सुख भोगवै छै। इक दिन रौ समायोग छै। ऊंचा गोख बैठा छै हास विनोद वातां करै छै। आप आप रै देस रा वातां करै छै। राजा कहै छै देखौ इहां कैसी खडी किसी सरसाई छै। हां माहाराजा खड खडहीज छै। म्हांरै देस खड नहीं आंब नीबू बहुत। राजा कुइक तामस बुधि आईगई। दोहा। अरदल आया आदमी जाय तिहरो नास। कंता तेरे देसमैं बांधव भाखिहें घास। १। वात। सो खड कहा होय। तारेरा कुरंग नयना कहै माहाराजा इतरो नैहसरणो नहीं। सूरा तो कायर होवै। का- पर सूरा होय। नर स्तां हसबो नहीं। कहा करैं सु होर। १। वात। महाराजा इसौ गरब न कीजै। जो थै म्हे मारीया थै म्हे मांजीया। जबसुं विणा सु उपजै।

दोहा। कंसा सुर कैरव करूरा। रतपत रावरा रावरा। गरब प्रमाण गनाड़ीया। राज रिप मंडाण।१। वात। तो राजा थे कासुं। राजा इसा बचन सुणतही हुइ कोपांत। अर काढ़ि खड्ग राणी रो माथो छेदी नांखीयौ। तिरा माहाराज पुरष रौ बेसास किसी भांति कररा) उगावै। बातां करतां हीज अबला स्त्री मार नाखी। इति श्री दम्पति विनोदे सारो कथा सप्तमं।८।

फेरा राजा विक्रमादित्य सभा जोर बैठौ छै। वडा वडा उमराव वागीया ऊभा छै। देवता जै जै सब्द करै छै। च्यार वीर बैठा छै। रत्नमें संघासरा बतीस पुतली संयुक्त तिण संघासण बैठो छै। राजा खुस्याल सु सूवा साम्हौं जोय कहै छै। सारो कासू कहै छै। सूवो कहै। काव्यं। निवसतु तव गेहे नीश्चला सिंघ पुत्री। तव वदन सरोजे भारतीमातु नित्यं। प्रविस तु भुजदंडे चंडकाह तस चून। न चलतु तव चित पाद पद्मान्मुरारे।१। वात। माहाराजा सारका रविलाप बातां करै छै। म्हारी वात नुं सास्त्र साख दै। स्कंद पुराण माहे कह्यौ छै स्त्री रो वेसास करसी सो रैरसंघ कुंवरनी परैं दुख पावसी। राजा हैं आस्चर्य ऊपनौं सो किसी बात। सूवो कहै। दोहा। अस्त्री वागल कूकरी तीनौं एक सुभाव। राती मुख चुंबन करै। विरती काटै घाव।१। वात्ता। वरधन पुर नगर सिंबंजत राजा राज्य करै। तै राजा रै वडी राजधानी। माहा प्रतापीक राजा जिरा आठौं दिस वस करी। छ खंडरौ भुक्ता चक्रव। जैसा दृशा। नौं नारी नाणी चौरासी चौहटा। छ दरसण रहै। छिनवैं पाखंड वसैं। च्यार आश्रम वसैं। राजा सर्व धर्म माहि प्रवीरा। देवी देवता सबरी सेवा करै तौही संतत न होइ। सो राजा बहुत चिंतातुर। सो तिरा कारण जपजाप करावै। यज्ञजाग करावै तौही संतत न होइ। तठरां पंडित प्रधाने भेला

होइ कह्यौ जो राजा आगै ही कह्यौ छै जो क्षत्री रै संतत न होइ तौ रिषिश्वरां नुं पूजै। रिषीश्वरां रै आशी वाद सुं भलां होवै होवै। आगै राजा दशरथ रै पण संतत नहीं। ताहरां शृंगी रिषी आणीयौ उणारै वचन सुं पुत्र हूवौ। तिण कर राजा श्रृंगीरौ पोतरौ तेडीयौ राजा वात वांनी रिष तेडीयौ। रिष आयौ सो राजा सित्रांजीतरे सात सौ रांणी तिणमांहे दोय पटरांणी। एक कनक सुं दरी। एक काम लोचना। सो दोनांहीनुं राजा कह्यौ जो रिषरी सेवा करौ। जिण भांत रिष प्रसंन होइ सो करौ हिवैं राजा रै हुकम आपरी गरज जिण भांत रिष प्रसंन होइ तिण भांति खिजमत करै। रिष राजानुं अठारै ही पुराण सुणाया। तिण स्कंद पुराण मांहे कासी खंड मांहें कासी विसनाथ रौ बडौ प्रभाव निकलीयौ। ताहरां उण रिष स्तोत्र १ सर्वार्थ विश्वनाथरै समरण रौ दी यौ। चं द्रायण व्रत संयुक्त राजा जिण भांत कह्यौ तिण भांत पूजा करै अरु पुराण सुणौं। पुं करतां वरस १ माहादेव प्रसन होइ कह्यौ राजा थारै संतत लिखीयौ नहीं अरु पुराणरै प्रसाद अरु म्हारै प्रसाद अरु म्हारै प्रसाद जप आराध सुं हूं आइस पिण सुख कोई नहीं। राजा कहै राज कहौ सु सत पिण राजरौ दरसण अरु वचन निर फल न होइ। दोहा। जाति न लहै अपुत्रीयौ पिंड न पितर लहंती तीयौ कारण पुत्र मुख दीठा सुख चांहि॥१॥ सिव भणति तौं पाइयै पुत्र भलो माहराज सुख दैणौ चिरजीवणौ राखण कुलकी लाज।२। राजा करुणावंत हुइ हीरा भाखीयौ। महादेव तुं षमान होइ आय अवतार लीयौ। कनक सुंदरी रांणी रै पेट अवतार लीयौ। मास ९ राजारै पुत्र हूवौ। जोतषीयांनुं तेड़ पूछीयौ। जोतषीयां

कह्यौ गलांत मांहे आयो छै। श्लोक। जातो न जीवति नरो
मातुरनि ष्टो भवेत्त्वकुल हंता यदि जीवति गल्लांते बहु जज
तुरंगो भवेन्नृप।१। जोतषीयां कह्यौ जीवै नहीं अरु कदाच
जीवस तो चक्रवर्त्ती होसी। अस्त्री सुख होसी नहीं। परंगी
मांहे अस्त्रीसुं घात होसी। हिवै कुंवर नाम वैरसंघ दीयौ
कुंवर मोटौ हुवौ घोडै चढ़रा लागौ। सिकार खेलरा
लागौ। एक दिन सिकार खेलतां खेलतां कही जिनावर
वासैं घोडौ दीयौ। आपरी भोम छोड पराई भोम गयौ
आगै दरियाव किनारै जिहाज लोक बैसै तमासौ देखण
नुं कुंवर वैरसंघ जिहाज बैठौ। इसौ वचन कहि जि
हाज बैठौ। गाहा। दीसै विविह-चरीयं जाणीजै सजन दुजना
विसेसो। अपाणं चकलजै हिडजै तेण पुहवीये बालु।१।
वात। हिवै कितेक दिने जिहाज जाय पार लागौ। सबै
लोक आप आपरै कार्यै लागा। हिवै कुंवर सु कमाल अकेलो
बैठो। आमंणा दूमणो थको समदरै उपकण्ठ बैठौ इलोल
समंदरा किलोल जोवै छै। भूखौ अकेलौ कोई सैंधो
नहीं। पर भोम कठै जाईजै किणनुं बतलाईजै। ताही राजस
अंग बैठौ। तमासौ जोवै छै दूहो कहै छै। ~~गाहा~~। ~~पंथीडा~~
पंथीडा देवल सरणा। कै सरवर री पाल। पंथी होय दयावणो
ज्युं ज्युं पडै वियाल।१। वात। सारौ दिन भूखै ही वितीत
कियौ युं करतां रात्र पडी उपलीज सूतौ। रात्र पौहर १
गई ताहरां उण भोम री अदिष्टायक इंद्र री चूहड़ रौण
देवी नाम सरवंग लोचना समंदरौ तमासौ देखण आई
देखै तो पुरष १ सूतौ छै सो महा प्रतापीक वरस १६
षोडस मांहे माहा सुंदर। दोहा। सूर वीर अति साहसी
रूप जिसौ मकरंद। तेज प्रताप सूर्य सो अरु दाता जो
इंद्र।१। वात। इसौ पुरुष देख खुस्याल होय कुंवर नुं जगायौ

कह्यौ स्वांमी राज अठै कुं सुख कीयौ।राजस्थानक पधारौ ताहरां कुंवर कह्यौ तूं कुंण नायका कह्यौ हुं राउ राजरी चेरी। राजरा पाव पखालीस हाथ जोड मुख आगे ऊभी रहीस राज फुरमासी सो सुकबा करीस।राज चाल म्हांरौ स्थांन देखौ।मोनुं इंद्रजी राजनुं इसौ समै देख करण कर मेल्ही जो तुं जाइ सेवा कर अर ठिकाणौ पुहचाये।सो राज पधारौ हुं पैलै भव री स्त्री छुं।इतरा दिन राज वियोग हुवौ।हिवै श्री माहादेवजी रै इंद्र सुं प्रसन हुवा।तद मेलौ हुवौ।इसा हि रा दीरा भाख अर स्थानक लेगइ।कुंवर सरवंगा रै डेरै गयौ ढोलीयौ बिछाय दीयौ।मनसा भोजन कर आगी सेवा सस्नुखा करण लागी।हिवै देवता समांन सुख भोगवै छै।यूं करतां कितरैक दिन हुवा हेक दिन स्वर्ग रै विचै झाडूरै वास्ते वारी आई। इंद्र सभारै विचै।ताहरां कुंवर सुं कह्यौ जो हुं जो इंद्र रै मुजरै जाइस तुं स्वामी तमासौ देखण जावैं तौ पूरब रै बाग जाये दखण रै बाग जाये पछम रै बाग जाये।पिण उतर बाग मत जाये।इसौ कहि नै इंद्रलोक गई।पाछै थी कुवंर आठै डै खेलतौ तमासौ देखतौ पूरब दखण पछम देख उतरै बाग गयौ।बाग फिर देखै तो आगै माथा पड़ीया छै।मुंडीयां कुंवर नु देख हंसीया। दोहा। वैर कुंवर कुं देखकै हसैं जु मुंडइयांह।आज अम्हां काल तम्हां वारौ वदईयांह।१। वार्ता। कुंवर विसमै हुवौ जो अठै इंण रोही मैं माथा कठा क्युं हंसीया सोच करतां २ फिरतां देखतां। परवरौ देहरौ दीठौ। देहरै मांहे जाय नमस्कार कर कह्यौ स्वामी ए कुंण आश्चर्य र माथा किसै सबाब क्युं हंसीया कासुं कहै। ताहरां यक्ष यक्ष कह्यौ जो आ चंडाली जिकौ पुरुष

आय मिलै तिणसुं भोग भोगव अर बाजौ मिलै ताहरां आगलैं नुं मार दै। तद कुंवर कही तिणरो कारण कांसु। यक्ष वाक्यं। श्लोक। मृग मीनस ज्जनानां तृण जल संतोष वहिती शत्रीनां लुब्धकधावर पिसु नानि:। कारणावै रिणयोत्र:।१। कारंः कहै: ताहरां यक्ष कह्यौ आ चंडाली जिको पुरुष आय मिलै तिणसुं भोग भोगव अर बीजौ मिलै ताहरां आगलैं नुं मार दै अर बीजो आय जुडीयै। ताहरां तो तुंही मारसी। स्यातें हसीया। ताहरां कुंवर कहै जो हुं उबरुं। ताहरां यक्ष कहै जो आज वेला छै। जो जीवतो निकलणो ही तेवड़ हुवै तो आ वरीयां छै। तौ राजसुं उबरुं। कह्यो हूं तनुं ले निकलीस पिण इतरा थोक करै तो लेजि सकुं। कुंवर कह्यो कहौ। यक्ष कहै हुं घोडै रै रूप ले चढाइ निकलीस अर खबर हुई आगै ताहरां गजबीज उदमाद घणा ही करसी जो बीहीस तो नांख देईसां जो नहीं बीहै तो अर नहीं ~~बीजै~~ भीजै तो हाव भाव स्नेह स्त्री रौ चित्र रौसी कलाप करसी जो तू मन भीनो अर आंख उघाड जोयो तौ हुं नाख देईस अरु उवा मार नाखसी इतरां बातां जो मन दृढ राखै तौ आज समै छै तौनुं पुगाउं। अर समद पार कियां पछै अखमारे जो इतरौ धीरज राखै तौ आ वरीयां छै। कुंवर कह्यो थावै सारै पुं। यक्ष घोडै रै रूप लयौ। अर कुंवर असवार हुवौ। ले नीकलीयौ। सुं करतां कितरीक विरियां पछै खबर हुई। ताहरां इंद्रलोक थी सरवंग सुंदरी डेरै आई देखै तौ कुंवर नहीं। तां हरां जाणीयौ जो यक्ष ले निसरीयो। ताहरां वासै हुई जाया प्रठी देखै तौ यक्ष लीये जावै। ताहरां गाजबीज

घणों ही ।बीहायो। पिण कही भांत बीहैं नहीं। पछै हाव भाव कटाक्ष पूर्ब बातां घणांही चेतारियां कह्यो पुरुष निठुर होय पापी होय प्रीत दुसमणांरें कटै तोड़ चालीयो आवै छै। सो भलां आवो पिण हेक मोसुं कटाक्ष करनज देख ज्युं हुं जावुं। तोही भीनो नहीं। घणां ही विलाप करि फिर गई कह्यो मोसुं संग कर साबती देही माथै कोई गयो नहीं सू इण यक्ष सुं जोर हालै नहीं तै साबते नाद आवै छै सो मेनुं दुख घणोही आवै छै। जो म्हारी भाफमैं आयो जोवै। ईसो कहि पाछी फिर गई। हिवैं यक्ष समंद पार कराय उतारीयो। कह्यो तूं हिव निचंत थारै घरे जा कोई भय नहीं। ताहरां कुंवर यक्षनुं नमस्कार कर विदा दीवी। कुंवर कितरेक दिने घरे आयो राजा सितंजतनु मिलीयो। राजा रांणी खुसी हुवा। पडल खुलीया। नगर लोक खुसी हुवा। ठोड ठोड उछाह हरख हुवा। हिवै कहै छै माहाराजा चिरं जीव राजा वीर विक्रमादित्य कलयुगरौ इंद्र या देख नारी प्रत्यक्ष राक्षसी। तो स्त्री तै किसी भांति वेसास उपजै। अर जे नर वेसास करै ते नर पसू। इति श्री दंपति विनोद सूवा कथा अष्टम: । ८ । ।

फेर राजा वीर विक्रमादित्य सभा जोर बैठो छै वडा वडा उमराव वागीया बैठा छै देवता जै जै सब्द करै छै। चारण भाट विरद बोलैं छै गायन गावै छैं नाटक नाद्रोकार होय रहीयो छै। च्यार वीजआ छै रतमैं संघ्यासण बत्तीस पुतली संयुक्त तिण सं घासण बैठो छै। माथै पर छत्र छै राजा खुस्याल सुं सारो साम्हौं जोय कहै छै। विदग्धमण सूवो वासुं कहै छै। हिवैं मदन मंजरी सारो कहै छै। माहाराज

चिरंजीव सुखौ विलाप वातां करै छै। दोहा। मन मैला तन ऊजला मुखै चूर्त तन मधार बाहर चंदन बांवनो अंतरगत अंगार।१। वात। हंसावती नगरी केतध्वज राजा तिणरै हंसध्वज इसै नांम कुंवर। महा प्रतापीक तिणरै अनेक रांणी तिणमैं दोय रांणी अनंत रूप एक कामसेना अरु एक काम लोचना। सो हंसध्वजरै एक नाई। देवीदांन सुं मित्राई प्रधांन थापीयौ। सो राजा केतध्वज देवगत होतां कह्यौ। बीजी सबै बात कीजै पिंण नाई सुं मित्राई न कीजै। प्रधांन कीजै तौ राजरै विणास होइ अर बीजे ही लोके समझायौ। दोहा। नरानां नापरो चूर्त पंखी नांम च काग क अस्त्रीनां वेस्याधूर्त मिह्लक।१। वात। इम करतां एक दिन राजा हंसध्वज देवीदांन रै हाथ ताली दीधां महल मांहि गयौ कांमसेना रै काम सेनानै नाई देखी देखतांही मन ललचाणौ। उठाथी आय देवदत्त नामं तपसी एकै गुफा तपस्या करतौ थौ तिहां जाइ सेवा करण लागौ केतेक दिने तपसी प्रसंन होइ तूं मांग ताहरां नाई कह्यौ मोहणी विद्या अरु भेष वरावर्त्त दोय विद्या द्यौ। तपसी सुं प्रसंन होय गुटका दे कह्यौ मुख मांहे राखे मनसा करीस सो होसी। अरु थारौ नांम देवदत्त कहजे सिद्धरौ हुकम छै। हिमैं राजा री सेवा करै। फंद भंद देखै जो कोई अवसर देखूं। यौं करतां करतां राजानुं प्रुनवती थी। राजा तिसीयौ थौ १ बावडी पांणी पी आंवखां बैठौ छै तिहां कामसेना राजा री कुमरी राख्रहरणचोर ले अर उण हीज बावडीआय पांणी पीयौ। तिसैं वासां बाहर आई माल नांख चोर भाज गया। नाई कह्यौ यौंही चोर राजानुं पकड़ चौरंग कीयौ नाई भाजपाछौ

आया। मालदा चोर कामवती नगरी रै चौटै मैं नाखीयौ।
नुं कता नाई पाछौ जाय उंराहीज घोडै चढ़ रा जा
हंसध्वज रौ रूप कर रांणी कामसेनां रै महल गयौ। अवी
खवास बडारणां खमां खमां करण लाग्यां। महल जाय
बैठौ बीजो राज काज कोई कीयो नहीं कामातुर पड़ो
जाय बैठौ। दूहा। समझायौ समझै नहीं कोइ हुवौ
सुभाव। मैं मते मंजारसुं। कहै सु आवौ आव।१। वात।
। ताहरां रांणी मनमें विचारीयौ राजा सदाही मनस
चीर थौ। आज थौ कासुं सुभाव हुवौ। का उ राजा न
हुवै। अरु कासु भाव फिरियौ। ताहरां रांणी कह्यौ
वडारंण। हाथरा काव्य रौ जाब पूछीयौ सो कहो। सो
जाब आयौ नहीं नाई ब्रह्म पड़ीयौ। ताहरां नाई कामवती
नगरी पाछौ गयौ। हिवै हंसध्वज पड़ीयौ थै अन
पाणी खावै न पीवै। ताहरां राजा कामसेन नुं खबर हुई
जो चोर धांन खाय न पांणी पीवै। ताहरां राजा काम
सेन कुंण थै अन पांणी क्युं न भखै। लोके कह्यौ
जो महाराजा फुरमावै थै थारौ वडौ भाग तू मरंणाइं
वचीयौ ताहरां फेर राजा हंसध्वज कह्यौ। दोहा। कण
कृष्णा सुकानिला हंसा सो धवली कृता मयूरा विज्ञाये
न सोमो चिंता कारिष्यासि।१। श्लोक। ललाटे लिखिता
ओन षष्ठी वासर जागरे तो हरि शंकरो ब्रह्मा शक्तामेधं ति
ना न्यथा।२। वार्ता। ए वचन सांभल राजा कामसेन
मनमें विचारीयौ जो कोई वडौ राजा स धीरसत
पुरुष थै। राजा हाथ जोड़ कह्यौ राज पधारौ म्हारै
बेटी कुंवारी थै। राजनं परणाईस राजरी सेवा करीस
ताहरां राजा हंसध्वज कह्यौ तूं आंणौ। राजा कामसेन
हंसध्वज नुं ले जाय परणायौ हिवै कुंवरी सेवा करै थै

सु उथ-चौरंग राजा कहीजै छै। हिवैं पनवती उतरी छै दिन थोड़ाहीज आय रह्या छै तिसैं समीपै बहुडि नाई देवदत्त आय मिलीयौ। राजा बोहत सनमान दीयौ दोहा। भलौ भलाई नां तजे बुरो बुराईवेष। हंसध्वजराजा कनैं मूंडरा मरतो देख।१। वात। चौरंग राजा नैं देवदत्त एक भोजन जीमैं एकै सिज्या सौवैं। इसौ रलीयात गाढो रहै। एक दिन राजा कामसेन देवदत्तनु बोलाइ नैं कह्यौ थे एकरा देसरा वासी एक थांरा रहरा वाला तूं वडोसत्पुरुष छै सांच कहै म्हारैं जमाई कुंण छै। कह्यौ म्हारै घर तौ नाई छै। एथ तो थांहरो जमाई छै कहीयैं तौ मारीयै। राजा मन मांहि जांणी देवदत्त नुं सीख दीवी। जमाई सुं मनमें द्रोह धरीयौ ताहरां भोजनमें विष घाल थाली मेल्ह दीवी। ताहरां चौरंग राजा नैं देवदत्त जीमण बैठा। थाली चौरंग राजा जीमै छै अर रकेबीमैं देवदत्त जीमतां हीलाल वौं फाट सास निकल गयौ। मर पडीयौ। इसैं राजा हंसध्वज हाहाकार कह्यौ भलौ दई भलौ दई इसैं हाथ हिलोलतां हीं हाथ पग आय गया। दोहा। खड़ै खड़ो संपजै। बुरुयै बुरौ लख। सुंदर राजा के गई भरडो मकडी रख।१। वात। या खबर राजा कामसेन नुं गई। कामसेन दुखी हुवौ। कामसेन पूछीयौ चौरंग नुं राजा हिवैं तो साच कहौ। ताहरां चौरंग कह्यौ हूं राजा हंसध्वज हंसावती नगरी रो राजा। मोनुं माता पिता रांणी प्रधांन सगलेही पालीयौ थो जो नाई सुमित्राई मत करौ दुख पायसौ इतरां बातां हुयां। हिवैं राजा हंसध्वज तठासुं चलाउ हुवौ। राज कामसेन ज्युं राजवीयां जोग विदा दीनी। राजा आपरौ देस

आयौ। सहर मांहि उच्छाह हुवौ। राज लोक बधाई बाजी। कामसेना नाना प्रकार सुं संणगार सजवा लागी छै। इसैमैं राजा सुं पाछली वात देवदत्तरी मालम हुई। कही माहाराजा कामसेनारे महल गयौ हुतौ। पिण कामसेना घष्ठ कीयौ। राजा रै मनमैं संकल विकल आई। जो राणी सुं टलीयौ नहीं राजा कहै जो मोनुं मंत्री प्रधान कहतां कहतां ही न कीयौ तो रांणी कासुं। सरब लोग कहै माहाराजा या बात न होइ। जो कामसेना सील खडै राजा कहै रे हुं जाणूं इसा इसौ कहि रांणी सै त्याग कीयौ। तौ माहाराजा सलामत प्रत्यक्ष देखौ। हाथरै कांकण आगे किसौ आरीसौ। सर्व लोकां मिल लोकांनु राजानुं समझायौ पिण समझौ नहीं। अर कामसेना तो आपणौ सील राखीयौ। तो पुरुष रो वेसास किसी भांति करणो आवै। इति श्री दम्पति विनोद सारिका कथा नवम:। ९।

फेर राजा वीर विक्रमादित्य सभा जोर बैठो छै। वडा वडा वागीया आगे खड़ा छै। च्यार वीर चौराश सिध पुठ आगे बैठा छै। तत्रमैं संघासण माथै पंच डंडरो छत्र धरीयौ छै। जै जै सबद होवै छै। वडा वडा उमराव आगे ऊभा छैं। राजा खुस्याल सुं बैठा छै। राजा सूवा साम्हौं जोय कहै छै सारो कासुं कहै छै। ताहरां सूवौ कहै छै। गाथा। जलम शेम पच्छयं। आधा सेप रविपाण गयगमण। जाणंति बुद्धिमंता महिला चरियं न जाणंति। १। गंगा इवालुयाराय। सायर जल सद्ध विन्दु परिमाणं जांणंत बुद्धमंता। महिला चरियं न जाणंति। २। वार्ता। माहाराजा चिरंजीव सारो ढेठी छै। अस्त्र भाखणौ कूडी कूड बोलै। हुं ब्राह्मण वंसी छुं। दुज वाक्यौ जनार्दन। दोहा। नारी वा गुलनाहरी। मत को करो वेसास। तन धन

जोबन सुख तै विरती करै विरागस/१/ । वा०/ स्वस्थान
पुर नगर सूरसेन राजा राज्य करै / बडो प्रतापीक तिरा
राज्य मै देवीनदंन नामै ब्राह्मण रहै तिरा रै भार्या मदना
नांम अति चतुर रूप वंत पिरा निर्धन सु मजूरी कर पेट
भरै / ब्राह्मण करा व्रत कर पेट भरै / एकदा प्रस्तावै राजा
~~नभसेन~~ नभसेन द्वारका जात्री कर आपरै देसनुं फिरतो
आय उतरियौ / सो दिन १० रह्यौ तिरा रै लसकर मांहे ब्राह्मणि
मदनावती मजूरी करै / सु राजा रै नजर पड़ी / राजा नभसेन
रौ मन ललचाणौ / जो या ब्राह्मणी नुं आपहरीजै / सो ब्राह्मणी
नुं दान पुन मजूरी करावै / मदनगौ / चालतौ ले जाई / ललचा
ही की / राजा चालता ब्राह्मणी लालच बांधी आप ऊभी
रही / राजा आप हर ले चालतौ हूवौ / हरां ब्राह्मणी वि
लाप कीयौ पिरा ले चालतौ रह्यौ / ले जाय आपरै ठिकाणै

आप लखणा मांडी नांखणा कल्या जो मास ० दांन पुंन्य कराण

यौ पछै राजा कहिसौ सोहूं करीस। अरु जोर करतां तो सराप देईस। राजा वात सुंणा ब्राह्मणी नुं दांनसाला मंडाय दीवी।

।दोहा। दांन कियां सुख उपजै दांनहिं दोलत होय। दांन थकी सजन मिलैं दांन तणां फल जोय।१। वार्त्ता। ब्राह्मण जिको आवै तिणानुं दांन पुंन करै। या वात परसिद्ध हुई। उणा ब्राह्मण नु गयां पाछै आपणा घरां नांई नाहरां ब्राह्मणां जोवा लागो दीकरो विलाप करण लागो। सो कहैही ब्राह्मण जोवैं कहै। बेटो जोवैं। कितरेक दिने ब्राह्मण उण आयौ। कहौ तुं जाय समझ रे आपणा हुं आवुं छुं। ब्राह्मण नुं विदा दे अरु पाछी जाय मनमें विचारी राजा जीवते निसर सगुं नहीं। तांसै वाहा होती तौ राजा नुं मारीजै तो भलां। सो सोच नैं जाय राजा नुं नख घाव सुं मारे द्रव्य ले आई आगै कुंभार रै

घर माहैं कहीं देवजोग नाग ब्राह्मण नुं डसीयौ। आगै ब्राह्मणी आय देखै तो ब्राह्मण मूवौ छै। तद विचारणला गी ओ राजा नुं हुं मारि मारि आई। आगै मोरी मूवौ कहै आंइ कांसुं करां सोचै छै। श्लोक। अन्यथा चिंतत कार्यं दैवेन कृतमन्यथा राजा कन्या प्रसादेन भिलको व्याघ्र भक्षक:। ।१। वार्त्ता। भवत्त विचार छोडै तद तीसरी मुं कता कनक पुर नगरी आई। आगै विचारै तो कठै जावां ताहरां छोडौ बेचनैं वेश्या यां सुं आय भिली। किताही वक्त हूवा ताहरां बेटो फिरतौ फिरतौ नगरी आयौ। वेश्या रूप पात्र देख मन ललचाणों अरु उणासूं चूकौ। इसै मांहि पूर्व स्नेह जागीयै स्तनैं पानों आयौ परभाते उलखीयौ। यौ तो म्हारो बेटौ उण उलखी म्हारी माता। तद पस्यातप करण लागौ व्यास कन्हैं गया। कह्यौ माता छोरूं री दूष लागै तो किस विध उतरै तद व्यास कही रथी बणाय माता पुत्र दोनुं बलै तो पायाश्चित उतरै। ताहरां रथी बणाय दोनुं आय बैठा। लोके तमास गीरैं रथी जगाय दीवी। रथी जगी अरु सेक लागौ ताहरां ब्राह्मणी निकल गई पुत्र माहे बलीयौ। वेश्या रा केस बलीया देही घाला हूवा। वि रूप हुई। विकराल थकी गांव नुं चाली। ताहरां लोके देखो सब कोई। दोहा। लाख सयाणां प कोड़ बुध कर देखो सब कोइ। अंण हुंणी हुंणी नहीं हूंणी होइ सु होइ। वात। तणां उजेणा आई। आय अहीरणयां सुं भिली। एक अहीर घर घाल बैठी। एक दिन गूजरी यां सु गोरस री माटकी लियां जावै छै। उजैणारो राजा सिकार नुं चढीयौ जाय छै आगै जलेबइ तमाम करती आवै छै। इसै मांझ अहीरीयां नुं धकौ लागौ। सगल्यांरी मटक्यां गिर पडीयां। हिवैं सब गूजरीयां रोवा लाग्यां। उवा अहीरी ब्राह्मणी हंसवा लागी।

तांहरा राजा आश्चर्य देख पूछण लागो। हे गुजरी वीज्यां रै उजाड़ हुवै रोवंण लाग्यां तूं हंसी सो वात कहि। तद आ कहै। इंण नुं कासुं रोवुं।१। काव्य। हित्वा नृपं पति मवेष भुजंगं दष्टवा। देसांन्तरे विधि विसा गणिका सुता। प्र प्रसंगमथगम्य चित्तं प्रविष्टं। सोचाम गोप गृहणी कथमच भक्तं।१। वार्त्ता। जो इतरां दुखां सूं नीं नहीं तौ इण म[illegible] रो कासुं सोच। कहूं छुं महाराजा चिरंजीव स्त्री इसी हुवै। इसा करम करै तिणरौ वेसास किसी भांत करणा आवै। इति श्री दम्पति विनोदे सूवा कथा। १०।

फेर माहाराजा वीर ~~वि~~ विक्रमादित्य सभा जोर बैठौ छै आगै वडा वडा वागीया उमराव खांन सुरतांण खड़ा छै। खवास पासै वांण हाथ जोड़ खड़ा छै रत्नमणमैं संघासण पर बैठो छै। आस पास पूतली संजुक्तवेष्ट त रत्न जड़त छत्र माथै पर चरीयां थकां च्यारूं दिस चंवर ढुलै छै। आगै च्यारे वीर चौरासी सिद्ध बैठा छै। देवता जै जै सब्द करै छै। चारण भाट विरद बोलै छै। गायन गावै छैं नाटक नाद्रोकार हुवैं छै। राजा खुस्याल सुं सारो साम्हौं जोय कहै छै। सूवौ का सुं कहैं छै। मदन मंजरी सारी कहै छै। माहाराजाधिराज चिरंजीव सूवौ खिलाप वातां करै छै। बे अकल मतहीण छै। अस्त्री सुं विवाद कियां कदे पौहचै नहीं। पुरुष स्त्री रै सदा आधीन रहै। पुरुष कमाई आंणौ पिण कीयौ प्र स्त्री रो वरै पड़ै तो आणीजै [illegible] बराबर बीजौ कोई नहीं। समझ देखो अकल रौ काम छै। एप झगड़ै रौ काम कोई नहीं। दूहा। सात विसन जा संग रहै कूड़ कपट चट मांहि गुण कीयां औगण करै तानर किसी वसाइ।१। वात। गु जरात देस जूनो सहर तहां सूरधीर नाम राजा तिणरै

अनंगलोचना नांम रांणी अनंत रूप पात्र तिलोतमासमान नव जोबना षोडष वर्ष री। अनंत चतुराई। रूपदेव राजा आसक्त रहै रांणी रै। सो राजा महा प्रतापीक। दुर दांत दले पांग लै। आंण दांण न्याव नीत चलै। सो राजा एकदा प्रस्तावै सिकार अहेड़ खेलवा गयौ थो सु बहुत वेला लागी रांणी रुत सिनांन कर सूती थी। रात चांदणी सरदकाल री थी। चांदणी री विसाइत कीवी थी। दास दासीनुं पिण नींद आइ गई। रांणी अनंगलोचना क्युं जागै छै। क्युं आंख मिलै छै। इतैमैं रांणी पर गुरुड टीटोड़ी री वाह सुं पाछै जातै रौ उछाह हो पड़ीयौ। राजा पूछीयौ ए कैसी वात। सारो कहै खंभाइच रै कांवै दरीयाव वहै जल तरंग हलोल लेवै तिहां समंद रै कांठै टीटोड़ी ईंडा च मेलहीया अर पग ऊंचा कर सोवै। ताहरां समंद पूछीयौ तूं पग ऊंचा कर सोवैं छै सो किसै कारण। ताहरां टीटोड़ी कहै छै। दोहा। पै दोयग ऊंचा करै मत गिर पड़ै अकास। उलंभो हम दीजीयै। प्रथमी होइ विणास। १। वात। जे पग ऊंचा न करूं तो आकास विगर थांभे छै। गिरपड़ै प्रथमाद दबै तिण पग ऊंचा करूं छुं। ताहरां समद अहंकार आवसुंण मनंमें हंसि कह्यौ। ईंडा म्हारे उपकंठ न मेल्ह छोल सुं वहे जासी। ताहरा टीटोड़ी कह्यौ मजाल छै। सबलने बलाई घणी छै। दोहा। सायर गर्ब न कीजीयै गर्बै होइ विणास। गर्ब काज रावण तणौ कीनो रामजी नास। १२। नान्हौ जोण न रोडीयै डरकीजै दे वेण। कै इजारै चिडकली की हाथी री हांण। वात। टीटोड़ी सबलजाब कीया ताहरां संमद छोल सुं वहा गयौ। ले जाय छिपाय मेलहीया। ताहरां टीटोड़े जाय पंखीयां आगै पुकार कीवी जो थां थकां समंद म्हारा ईंडा वहाया। सो इण बातरी

खोड घांसु चै। घणी हीरा दीधा आखी। ताहरां सगलाही पंखीयां कह्यौ जु समंद कुण मात चै। का तौ इंडा दें नहीं तर चूंचां सुं पांणी उछालौ। अर चूड़सुं भरौ दूर नाखौ इसौ विचार कर सर्व पंखी मिल्या। टीटोडै रै साथआय समंदनुं कह्यौ इंडा दे नहीं तौ पांणी चूंचांसु उलीचस्यां अरु चूड़सुं भरस्यां। दोहा। निबला सबला संग रहैं सबला करै विराम। निबला पौहच सकैं नहीं सभा दीयै श्रीराम। ।२। वार्त्ता। निबला सबलां कांई घणा रहैं पिण परमेसर डर कर बुरी नहीं करै चैं। समंद गुमज कर जाब दीयौ नहीं देखां ए पंखी कासुं करैं। हिवै पंखी पांणी चूंचां भरि नांखि आवैं। आवतां चूड़ सुं चूंच भर आंणा समंद मैं नाखै। युं करतां घणा दिन हुवा। न पांणी खूटै न बूरीजै। न समंद इंडा आणा देवै। ताहरां सब पंखी मिल विचार करि राजहंस नुं मेल्ह नैं गुरुड़ नुं तेडीयौ। गुरुड़ आयौ तांहरा समंद आय पगै पड़ीयौ। इंडा आंणा दीया। उठा जयकर गुरुड चालीयौ। चादै वलताजुं नै उपर वहतां रांणीं अनंग लोचना पौढी नजर आई। इ च्छा सरूप अनंग लोचना नुं गरभ रह्यौ। युं करतां गर्भ मोटौ हुवौ। अनंग लोचनारै दीकरी जाई। राजा सुर चीर रै घोर कोई न थौ जोतषीयां नुं तेड़ वेला लिराई। जोतषीयां कह्यौ सुखणी कोई न हुवैं। दुकषरै वियो ग मरसी। सो आग सुंदरी नाम दीयौ। मोटी हुई युं करतां जोबन प्राप्त हुई। मांगा दिसौ दिसारा आवैं। रूप इसौ न इंद्राणी न अपछरा इसी काइ नहीं सो अनंग सुंदरी बापड़ा जोतषीसां वाता मा बाप रै मुख संभल खित्र काई मैं आई। जो म्हारौ लिखत चै जो भरतार दुख होसी। तौ श्री रिणछोड़ रायजी रौ दरसण कर नहै

पांरा ग्रहण करीस। इसौ नेम धालीयौ। दोहा। अब
नि वनाई नां वनैं बनी न अनवन होय। तांतैं जांनि हचिंत
रहौ करता करै सो होय। १। वात। मा बाप ही वीहारीतात
बात ढीली कीवी। यु करतां कितरे हेक दिने द्वारिकानुं
चाली। चालतां लाघडी गांव आया। सोभाग सुंदरी रै रूपरी
प्रसंसा सुणी। ताहरां उण गांवरौ वासी रामदत्त ब्रह्मचारी
उण गांव मांहे एक ब्रह्मचारी रहै तपस्वी। तिंण आगैं
आगम वीर विद्या सो रामदत्त ब्रह्मचारी तिणरी सेवा
करतौ। सो सोभाग सुंदरी री प्रसंसा सुण ब्रह्मचारी
नु कह्यौ इणानुं मिलीजैं तो जीवतव्य सफल। ताहरां
तपसी एक गोली दीवी मुख मांहि राखी तिंणासुं
बारा बरसरी कंन्या हुई। ब्रह्मचारी साथ करनै दौदी
सोभाग सुंदरी री जाय बैठौ। ताहरां सोभाग सुंदरी भीतर
बुलायौ। कंवारी डंडोत करि कह्यौ कासुं आज्ञा। ताहरां
तपसी कह्यौ म्हारी बेटी बेहव छै। इंणा नु पिंण द्वारिका
भेटण री इच्छा छै। सो हुं साथ ले जावंत फिरण हुं वृद्ध
हुवौ। हालण सक्त नहीं। तिणारौ सोच छौ राज पक्षां
हुं निचंत हुवौ। इणा नुं भली भांतिसुं तीर्थ कराय घिरतां
मोनुं ओरण देया। अरु धरणौ कुरब कायदौ राखजो। नजी
क सुवांणजो। जीमण पांणी रौ राज पकी निचंत हुवौ।
इसी भलावंण दे पाछौ आयौ। तठासुं आप्पा चालीया।
हिवैं सोभागसुंदरी पूछीयौ बाई थारौ नांम कासुं। कह्यौ
राम लीला। ए दोनुं भेल्यां सोवैं भेल्यां जीमैं। युं करतां
कितरेक दिनै द्वारकाजी जाय परसीया। पछै सारी सोरठ
फिर परसी तीरथ कीया माहो माहि सूतां सोभाग सुंदरी
कह्यौ बाई तुं तपसी री दीकरी तो आगैं बोहत विद्याहो
सी। काई पुरुष हुवणरी विद्या सीखी छैं। ताहरौ कह्यौ

मो आगैं विद्या छै।जो तूं वचन कौल दैं।थासुं थाइ वडा
रांयां पासै रांखे एकांत हुवैं तौ तोनुं देखालुं।ताहरां एकांत
हुई। गोली काढ़ी।सु पुरुष हुवै वेई सुख भोगवैं।यूं
करतां मास ६ सुख भोगवतां तिणासुं गर्भ रहीयौ।
हिवै सोभागसुंदरी मनमैं जाणीयौ गरभसुं कठे जाऊं।
ताहरां उथली काष्ठ भषण कीयौ।तिणासुं माहाराजापुरुष
सौ अन्याई हुवै।बलकर गर्भदे चलतौ रह्यौ।उणा दीठौ
जो मांम रहै नहीं।ताहरां बल मुई।इति श्री दम्पतिवि
नोदे सोरा कथा एक।दश:।११।
फेर माहाराजा विक्रमादित्य सभा जोर बैठौ छै।वडावडा
वाणीया आगे खड़ा छै।च्यार वीर चौरासी सिद्ध मुह आगे
बैठा छै।रत्नमें संघ्यासण बत्तीस पूतली संयुक्त।माथै
पर छत्र धरीयां बैठौ छै।जै जै सबद होवै छै।खुस्याल
सुं सूवै साम्हौं जोय कहै छै।सारो वासुं कहै छै।ताहरां
सूवौ आसीर्वाद दे कहै।काव्यं।आयुर्द्रोण सुते श्रियां
दशरथे शात्रुवयं राघवे। ऐश्वर्यं नहुषे बलं हलधरे मानं च
दुर्योधने शीलं शांतन योगातिश्चय पवने सत्यं चक्रती सुते
विज्ञानं विदुरे प्रभवत्त्व कीर्तिश्च नारायणे।१।वार्त्ता।
माहाराज चिरंजीव सारा खोटी वातां करै छै।कूडा
बोली छै।इणारां वैंगरी क्युंकरि परतीत आवै।दूहो।
नारी चारी लख गुण।औगुण लख विच्यार। तिणा
कारण गोरख जती।नारिन चारी बारि।१।बात।मार
वाड़ देस मांहें पूनाधर गांव तठै राको वाणीयो रहै।
बड़ा दबेसरी तिणा रांकै रै पुत्र थौ।भंणा नामैं तिणानु
मेदपुर परणायौ।तिणारी अस्त्री मृगनामैं साह हरीदीरी
बेटी तिका सासरै होती।सो उ उणा काल सांझ रौ समीयौ
छै।मुंधां स्नान करंणा बैठी थी।सो उणारो रूप देख मृ

ले चालतौ रह्यौ। घड़ी २ ४ च्य हुई मांटी सांभली मृगां
नहीं। आडोसी पाडोसी पूछीयौ। पल्हौ ढूंढीयौ न पाई।
ताहरां गांव मांहैं ढंढोरौ दिरायौ। तौ ही पग पाच्यौ
कोई नीसरे नहीं। बाहेर सुं आवै तिणनुं पूछै। युं करतां
कितराइक दिन हुवा। सो घोभरण गहलौ हुवौ फिरै। दूहौ।
रे प्रिये तुं किहां गई। आवौ करौ सनेह। तुझ बिण मुझ
नैं क्युं सरै जिण सुं घाती देह। १। वात। युं करतौ फिरै
एक दिन उपासरै गुरांनुं वांदण गयौ। गुरां आगै वातसु
णी हुती सो घोभणनुं देख चेले हासी कीवी। घोभण
बाइ कठै गमाई। घोभण कहै हसीजै नहीं चेलाजी दिहाडौ
कहै। दोहा। दीहावं कांन कहै ज वैरीअकरंत। दीह पलटे रावरां
पय नीर तरंत। १। वात। ताहरां गुरे कह्यौ घोभण साह
भला हुसी। ताहरां घोभण पग झालनै कह्यौ। पूजसुं
भलां हुसी। हाथ जोड़ वेनती कीवी। पूज प्रसंन करौ म्हारी
बाइ ~~हुं भूत ले गयौ~~ केथ गई। ताहरां गुरे चक्रेश्वरी रौ
आह्वान करि कह्यौ थारी बाइ भूत ले गयौ। ताहरां
घोभण कह्यौ भूत ले गयौ क्युंकर आणीजै। किसी
भांति आसी। ताहरां गुरां एक रुकौ तुरकी लिख
दीयौ। कह्यौ गुजरात पाटण तेथ भूतांरौ पातिसाह छै
तेथ गुरुवार नी राति सामहैं मुकर पाटण रै उगवरौ तलाव
छै तेरे डावै पासै रिण छै। तेथ जाइ उभौ रहौ। पोहर
रात गीयां दरबार जुड़सी। ताहरां तुं रुको सामहौ करे।
जाहरां तोनुं नजीक तेडाइ वात पूछै ताहरां हकीकत
कहै। इसी वात गुरे कही ओ सांभल घेर आयौ। संबलौ
बांध चालीयौ पाटण गयौ। जमै रात रै दिहाडै कह्यौ
था तिकै ठिकांणै उभौ रह्यौ। इसै राति पोहर एक गई
ताहरां पातसाह आइ दरबार बैठौ। साह रुको सामहैं कर उभौ।

घड़ी १ हुई ताहरां पातसाह कह्यौ औ मानिष पुकरु करा छै/ डीयां आय हजूर ले ऊभौ कीयौ ताहरां पुकारीयौ/ पातसाह सलामत म्हारी बाइर नारि बारै भूत आंराणी छै/ ताहरां पातिसाह आपरै चाकरां नु हुकम कीयौ/कठैही कोई भूत इणरी जोरू ल्यायौ छै सो पैदा करौ/तद चाकरां कह्यौ पातिसाह सलांमत बीसल नगर वासी अबदल नांमै भूत छै तिको ल्यायौ छै/पातिस्याह कह्यौ सताब पैदा करौ/उस भूत कुं पकड़िल्यावौ/डंडीया दोड पकड़ि ल्याया/पातिसाह कह्यौ/इनकी जोरू पैदा करि/भूत कहै मैं न ल्यायौ/तद भूत नै दुररा मारीयौ ज्युं कहै हूं आंण देसूं/तद उण भूत रै साथ डंडीया जाय नैं पातिसाही हजूर बाइर ले आया/ पातिसाह वाणिरै हाथ दीवी/वाणीयै कह्यौ आगैं जातो वले खोस लेसी/ताहरां पातिसाह रुको लिख दीयौ थो भंरा मुगा नु ले घरे आयौ/सो मिरघां गहिली हुई गई कितेक दिन सावधान हुई/ताहरां मिरघां रो मन घर सुं लागै नहीं/आर्या/निरताल वातड़ली रसी/माया घेहड़ा नाखीहसी/अस्त्री एक भरतारा खिसी/जेहा बीहा तेहा आसी/१/भला पुरुष देखै तिणांरै संग लागी फिरै/घररा काम काज सुं मन लागै नहीं/मांटी घणु समझावै पिण मानै नहीं/पर पुरुष सुं रत्त रहै/एक दिहाडे कहीं री साथ उठगई/ताहरां बोभरा विरकत होइ गुरां आगै दिक्ष्या लीवी/तिण सुं कहूं छूं/माहा राजा धिराज चिरंजीव जिण बाइ रै वासतै इतरा श्रोत्र कीया/उदमाद कीया तौही आपरी न हुई/तिण वास्ते स्त्री रो वेसास किण भांते आवै/इति श्री दम्पतिविनोदे सूवा कथा द्वादश/१२/

फेर राजा विक्रमादित्य सभा जोड बैठौ छै/इंद्रसभा

सारीखी सभा सोभै छै। सूवा री वात सुणी राजा
सारो सामो जोई कह्यौ सूवौ कासुं कहै छै तहरां सा
रे कहै छै। महाराजा सलांमति सूवौ लबाड़ छै। जांणतो
~~खोटाय~~ खोटायां करै छै। माहाराजा पुरुष स्त्री विणा
किणही काम रो नहीं। दूहो। करमारांद जारांद कहै अस्त्री
समी न आवै। सुख दुख भेला भोगवै मरतां होवै साथ।
।१। महाराजा चंदावती नाम नगरी। काम सेन राजा राज
करै। बडौ प्रतापीक राजा। तिण रांणी रै गुणमंजरी नाम
स्त्री। सो अति वल्लभ। बहुरूप गुणां लावण्य करि राजा
नुं अति प्यारी। पिण संतति नहीं। श्लोक। विनस्यं यथा
गेहं यथा देहं विना आत्मना। तरुर्विना यथा मूलं। विना
पुत्रं कुलं तथा।१। तिण सु राजा रांणी नगर रो लोक सबै
दिलगीर। सो राजा संतति काज सोमेसर महादेव रो देहरो
करायौ कैलास बाग करायौ। तिण माहें नव लाख पेड़
सब ऋति फलै रहै। बाग माहै देहरौ तठै राजा नित्य
पूजा करै। चंद्रायण व्रत करै। रांणी गौरी व्रत करै। अरु
पूजा करै। युं करतां बारै वरष हुवा। एकदा प्रस्ताव राजा
पूजा करै तौ थौ। तिण समय एक धीवर आई। महादेव
नुं नव मछली चहोड़ी। माहादेवजी कह्यौ जारे धीवर थारै
६ पुत्र होसी। ताहरां राजा कह्यौ हुं कपूर कस्तूरी चंदन
केसरि सुं चरचसुं चंद्रायण व्रत कष्ट करुं। तो ही मौनुं एक
ही पुत्रादेस कीयौ नहीं। इण मछीगर नुं तैं एतै सारतनव
पुत्र दीया। का मोनुं ही पुत्र दे नहीं तर कमल पूजा करीस।
खड़ग ले कमल पूजा करणीं मांडी। ताहरां कह्यौ आ थारै
ही पुत्र होसी। पिण तु परणावे मती। परणायौ तो मरसी।
इसौ वर दीयौ। युं करतां रांणी नुं आधान रह्यौ। पूरे दिहाड़े
पुत्र जायौ पुरंदर नाम दीयौ। रमतां खेलतां मोटौ हुवौ।

बाग वाडी सिकार खेलै। दिसौ दिसांरा मोगा आवै राजा परणावै नही। कंवर मनमें विचारीयौ राजा तो परणा वै नहीं। तौ दिसावर देखसूं। तीरथ करसुं। दूहा। तीरथजात्रा करणा कुं चालै राजकुमार। दुनियां देखणा तनकलणा इहै चित्तमैं धार।१। वात। इसौ विचार सीख मांग। एक खवास साथ ले नैं कवर चालीयौ। अरजनपुर आयौ। अरजनपुर रौराजा अरसंघ तिणरै कुंवर चंद्रभांणा सु मिलीयौ मांहि बहुत प्रीति। सो कुंवर चंद्रभांणरी सगाई। लुद्रवे पाटणरौ राजा लुद्रसंघरै बेटी सूहव तिणसुं कीवी। सो बालक थकां कीवी थी। सो पछै देव संजोग सुं कुंवर चंद्रभाण गलतकोष्ठी हुवौ। सो परणावै नहीं। लुद्रसंघ बडौ प्रतापीक राजाअरु अरजनसंघ पण बडौ राजा मांहो मांहि अत्यंत प्रीति सो कोष्ठी करि परणावै नहीं। छोडि पिण सकै नहीं। कवरी सूहव मोटी हुई। माहा रूपवंत वर्ष १५मैं हुई। सो माईत देख न सकै। श्लोक। पंच वर्ष भवेत् गौरी कन्या च सप्तवर्षका। कान्ता च नव वर्षा च। मंगला द्वादश वर्षका।१। माताचैव पिताचैव पिताचैव। जेष्ठ भ्राता तथैव च। त्रयस्ते नरकं यांति। दृष्ट्वा कन्या रजस्वला।२। सो कन्या देखणा जोग्य नहीं। मारणारा इलाज घणां ही कीया। सो मोत बिना मरै नहीं। सो कुंवरी सूहव नुं देखनैं माईतां करमऊपर छापनैं साहौ थाप मेल्हीयौ। सो अरजन संघ राजा नुं राणीनु संगलानुं चिंता उपनी। जो कुवर तो कोष्टी। आगै कासुं जाब देस्यां। युं करनैं आडंबर सुं जान करनै चढीया सो कुंवर चंद्रभांणा पुरन्दर नुं पिण आग्रह करी साथली यौ। सो आनरौ राजारौ वडौ बखाण तिसोही पुरंदर रौ बखाण रूप तिसै ही घोडै चढीयौ। पिण कोष्टीतै राजा दिलगीर थकौ चिंतवै छै। कोई उपाय जो खुस्याली हुं

सारीखी सभा सोमैं छै। सूवा री वात सुणी राजा
साथ साम्हो जोई कह्यौ सूवौ कासुं कहै छै ताहरां सा
रो कहै छै। महाराजा सलांमति सूवौ लबाड़ छै। जांणतो
~~जाणतां~~ खोटायां करै छै। माहाराजा पुरुष स्त्री विणा
किणही काम रो नहीं। दूहौ। करमाणंद जाणंद कहै अर्ध
समी न आवे। सुख दुख भेला भोगवै मरतां होवै साथ।
।१। महाराजा चंदावती नाम नगरी। काम सेन राजा राज
करै। वडौ प्रतापीक राजा। तिण नै राणी गुणमंजरी नाम
स्त्री। सो अति वल्लभ। बहुरूप गुणां लावण्य करि राजा
नुं अति प्यारी। पिंण संताति नहीं। श्लोक। विनस्यं यथा
गेहं यथा देहं विना आत्मना। तरुर्विनायथा मूलं। विना
पुत्रं कुलं तथा।१। तिंण सु राजा रांणी नगर रो लोक सबै
दिलगीर। सो राजा संताति काज सोमेसर महादेव रो देहरौ
करायौ कैलास बाग करायो। तिंण माहें नव लाख पेड़
सर्ब जाति फलै रहै। बाग माहै देहरौ तठै राजा नित्य
पूजा करै। चंद्रायण व्रत करै। रांणी गौरी व्रत करै। अरु
पूजा करै। युं करतां बारै वरष हुवा। एकदा प्रस्ताव राजा
पूजा करै तो थो। तिंण समय एक भीवर आई। महादेव
नुं नव मछली चहोड़ी। माहादेवजी कह्यौ जारे भीवर थारै
है पुत्र होसी। ताहरां राजा कह्यौ हुं कपूर कस्तूरी चंदन
केसरि सुं चरचसुं चंद्रायण व्रत कष्ट करूं। तोही मोनुं एक
ही पुत्रादेस कीयौ नहीं। इण मछीगर नुं तैं एकै साइत नव
पुत्र दीया। का मोनुंही पुत्र दे नहीं तर कमल पूजा करीस।
खड़ग ले कमल पूजा करणीं मांडी। ताहरां कह्यौ जा थारै
ही पुत्र होसी। पिंण तु परणावे मती। परणायौ तो मरसी।
इसौ वर दीयौ। यु करतां रांणी नु आधान रह्यौ। पूरे दिहाड़े
पुत्र जायौ पुरंदर नाम दीयौ। रमतां खेलतां मोटो हूवौ।

वाग वाडी सिकार खेलै। दिसौ दिसांरा मोगा आवै राजा परणावै नही। कुंवर मनमें विचारीयौ राजा तो परणावै नहीं। तौ दिसावर देखसूं। तीरथ करसुं। दूहा। तीरथ जात्रा करवा कुं चालै राजकुमार। दुनियां देखण तनकलणा इहै चित्तमैं च्यार।१। वात। इसौ विचार सीख मांग। एक खवास साथ ले नैं कवर चालीयौ। अरजनपुर आयौ। अरजनपुर रौ राजा अरसंघ तिणरै कुंवर चंद्रभांण सु मिलीयौ माहि बहुत प्रीति। सो कुंवर चंद्रभाणरी सगाई। लुद्रवे पाटण रौ राजा लुद्रसंघरै बेटी सूहव तिणसुं कीवी। सो बालक थकां कीवी थी। सो पछैं देव संजोग सुं कुंवर चंद्रभाण गलतकोढी हुवौ। सो परणावै नहीं। लुद्रसंघ बडौ प्रतापीक राजा अरु अरजन संघ पण बडौ राजा माहो माहि अत्यंत प्रीति सो कोढी करि परणावै नहीं। छोडि पिण सकै नहीं। कुंवरी सूहव मोटी हुई। माहा रूपवंत वर्ष १५मैं हुई। सो माईत देख न सकै। श्लोक। पंच वर्ष भवेत् गौरी कन्या च सप्तवर्षका। कान्ता च नव वर्षा च। मा[?]ला द्वादश वर्षका।१। माता चैव पिता चैव पिता चैव। जे[?] भ्राता तथैव च। त्रयस्ते नरकं यांति। दृष्ट्वा कन्या रजस्वला।२। सो कन्या देखणा जोग्य नहीं। मारणारा इलाज घणां ही कीया। सो मोत बिना मरै नही। सो कुंवरी सूहव नुं देखनैं माईतां करम ऊपर थापनैं साहौ थाप मेलहीयौ। सो अरजन संध राजा नुं राणी नु संगला नुं चिंता उपनी। जो कुवर तो कोढी। आजै कासुं जाब देस्यां। युं करनैं आडंबर सुं जान करनै चढीया सो कुंवर चंद्रभांण पुरन्दर नुं पिण आग्रह करी साथ लीयौ। सो आनरौ राजा रौ बडौ बणाव तिसोही पुरंदर रौ बणाव रूप तिसै ही घोडै चढीयौ। पिण कोढी तैं राजा दिलगीर थकौ चिंतवै छै। कोई उपाय जो खुस्याली हुं

वीवाह होई। ताहरां राजा अरु कुंवर चंद्रभाण आलोचकह्यौ पुरंदरनु फेरा दिरायदै तौ भलां पछै मार नाखीजै। इसौ आलोच ~~कह्यौ~~ करि कुंवर चंद्र भाण पुरंदर सुं कह्यौ। मित्र तुं एक उपगार करि। कुंवरी मोनुं परणीदे। अरु कि णीनुं कहे मतां। पुरंदर कह्यौ परण हुं देसुं पछै थे जाणौ। इसौ विचार कीयौ। जाहरां सामेलैरी बेला हुई ताहरां पुरंदरवींद करि तोरण वदायौ। लुद्र पुर सहर राजा रा लोक कुंवरी वींद देख सौह खुसी हुवा। जो कहता वींद कोढ़ी छै सो कूड हिवै तोरण वांदे चंवरी मैं जाय बैठा खुसी हुवा। जो कहता वींद कोढ़ी छै सो कूड़। पुरंदरनै सहव हथलेवो जोड़ीयौ। कुंवरी नुं उच्छाह छै। इसामैं कागल छापकीयौ थो सु कुंवरी री साड़ी रै पलै पुरंदर बांध्यौ। दूहो। कामसेन राजा प्रिया गुण सुंदर अभिराम। चंन्द्रानन परी तिहो कुंवर पुरंदर नाम। ।१। इसौ दूहो लिखि साडी रैलिख पल्ले बांध्यौ। परण नैं जानी वासौ आया। कुंवरी पला छोड अपूठी गई। इतां मैं पुरंदर अरु खवास घोडै चढि रौला बोलामै निकल गया। जोंणीयौ मार नाखसी। राजद्रोह वेचरी बात आगम छै। तिण निकल गया। पाछै चंद्रभाण नु पुरंदर निकलीयै री खबर हुई। तद चंद्र भाण पश्चाताप करि कह्यौ हाथां गयौ। सोहीज हुंणी। रातिसरवण हर गया। ताहरां चंद्रभाणनु देखनै कुंवरी राजलोक सगलां विचारीयौ। औ कासुं अचरज। उसौ दीसतौ थो इसौ क्युं हुवौ। कासुं जाणी जै। पछै ७ दल मीर थकां ही भात दे मुकलावा कर चलाया। कितरेक दिने अरजन पुर आया। हिवै कुंवरी सहव दलगीर थकी सा जाणी रहै। इसै तीज आई। सब सखी खेलण निक ल्यां। इण नुं पिण निहोरा करि कपड़ा पैहराइ लेगयां।

सो वरसां री साड़ी पहेरी। अकस्मात छापरो कागल साड़ीरैं पलै बाध्यौ दीठौ। सो वाचीयौ। खुसी हुई। जो परणीजण वालौ तौ बीजौ छै। भलां जांणीजसी। उछाह सुं रमखेल घरे आई। आपणां लोकां नुं बात कही। कुंण राजा कामसेन। कुंण गुंण सुंदरी रांणी। कुंण चंदानयरी। कुंण कुंवर पुरंदर। ये खबर ल्यौ। खबर ले अर कुवरी रूहव सासरै सुं पीहर रौ मिस कर चंदा नगरी नुं चाली। कितेक दिने चंदा नयरी गई। घणां सहेल्यां रै झूलरैसुं इतमाम सुं राजलोक भीतरि गई। गुरण सुंदरी रै पगैपड़ी गुंण सुंदरी कह्यौ बाई थे कुंण छौ। पगौ क्युं पड़ौछौ। रूहव कह्यौ हूं थांहरी बहू छुं। कह्यौ कद परणी किणी बहू। तद छापरौ कागल काढ़ दीयौ त्यह कोई आश्चर्य होइ कुंवर नुं पूछीयौ। पूछतांही कुंवर मृत्यु हुवौ। ताहरां रूहवनैं सकोई निभ्रछण लागा रूहव पिण दलगीर हुई माहादेवरैं देहरै जाइ मरण लागी। कह्यौ म्हारा आव्या बरस दे अर जीवतौ करौ। नहींतो प्रायश्चेत देईस तरै माहादेवजी कुंवर जीवायौ। लोग सोह खुसी हुवा। कुंवर पुरंदर न रूहव सुख भोगीया। तै कहूं छुं। माहाराज चिरंजीव अस्त्री इसी हे छै तिण आपरौ त्याग करणौ मांडीयौ। पुरुष परण नैं मरण सुंडरतौ नीकल गयौ। बाग्रसाटैं तौ सिर दै छै। तौ आपरी धणीरी परणीं क्युं छोडी जै। पुरुष इसौ निठुर छै। इति दंपति विनोद सारो कथा त्रयोदशम:। १३।

हे राजा विक्रमादित्य सभा जोड़ि बैठौ छै। लोक सर्व मुंह आगौ खड़ा छै। परधांन उमराव सर्व बैठा छै। सर्व सभा जुड़ी छै। इतामैं राजा खुस्याली सुं सूवा सांम्हौ जोइ कह्यौ सारो कासुं कहै छै। सूवौ कहै छै

माहाराजा म्हारो बार बार आपरी बडाई करै छै। फिण
स्त्री जाती महा खोटी छै। तौ हूं कहूं छुं। श्लोक। कवय:
किं न पश्यंति। किं न भक्षंति वायसा। मद्यपा किं न
जल्पंति किं न कुर्वंति योषिता। कासमीर देस किसोर
संघ राजा। बडौ तेजस्वी राजा। तिंरा रै संग्रामसंघ
नाम कुंवर सो महा रूपवंत। कामदेव सरीखौ। सो
पर स्त्री लोभी। तिंरा राजा रै धर्मदास नाम मंत्री। तिण
मंत्री रै केवल नाम नामैं ~~मंत्री~~ पुत्र सो बडो बुधिवान।
तिंरा केवल नैंन अरु संग्रामसंघ कुंवर माहो माहि
बहुत प्रीति। बाग वाडी तालाब सैल एकठा नीकलैं।
एक दिन सहरमैं कुंवरपाल नामैं वकालरी बेटी बरस
१५ री माहा रूपवंत अत्यंत लावन्यता देखि कुंवर संग्रा
म संघ अरु कुवल नैंन जाय गली मैं घेरी। कुंवर कह्यौ
मोसुं अंगीकार करि। भांति भांति कांमाच्छ कहै लुंकटी
ताहरां इसा कह्यौ हूं सासरै चालूं तद आवज्यो म्हारौ
कौल छै। कुंवर कह्यौ यथासक्त। फेर एक दिनरै समैं
कुंवर अरु कवल नैंन सैल नीकल्या छै। पणघटपर
खड़ा नजरबाजी करै छै। इसैमैं राजा किसोरसंघ
उंचै गौरव बैठै दीठा। देख मंत्री पुत्रपर कोप हुवौ।
जो म्हारो पुत्र इसा बिगाड़ीयौ। फिरा कासुं करै कुंवर
रौ मुलाइजौ सबलौ। राजा प्रच्छन कहै कोई ईसौ
जे इंसारै विछोड़ा पड़ै। तौ कुंवर सुधरै। ताहरां एक
दूती कह्यौ माहाराजा। मोगु सो पाऊं। इंसारी प्रीति हूं
तोड़ाईस। राजा कह्यौ भलां। हिवै एक दिन समैं पार
दूती कंवलनैंण नै कुंवरथी आघौ ले अर कांन मैं सुड
फड़ करि चालती रही। कवलनैंन सुं कुंवर पूछीयो कासुं
कह्यौ। इसा कह्यौ क्युं कह्यौ नहीं। तद कुंवर ~~कोप हुवौ~~।

रै मनमैं भ्रांति उपनी। ए मित्र जोग्य नहीं। एक दिन दूती वलै दूंहीज करि जई। फेर कुंवर पूछीयौं इंरा कह्यौ क्युं ही कह्यौ नहीं। तद कुंवर कोप हुवौ। जाइ राजासुं कह्यौ माहाराजा इंरारी आंखि कढ़ाये अंन भखीस। यानीं नहीं पुत्ररै दुख मंत्री दुमनौ होसी। का निसरि जासी। दूहो। बुधिवान जो होइ इहै नांति चलैसदा। रारी वैप रसोई मंत्री दुमनौं ना कीयौं। १। अरु निकल जाय तौ मंत्री हीरा राज्य होइ। श्लोक। नदीतीरेषु ये वृक्षा। पा चनारी निरंकुशा। मंत्रीहीन भवेद्राजा तस्य राज विनस्यति। इसौ विचारि कुंवर रौ मन राखरा नासतै हुकम कीयौ। इस इंरारी आंखि काढि आंरा। कुंवर नु दिखालौ। प्रधान पालीया। मृगरी आंखि आंरा दिखाई। प्रधांन पुत्र प्रछंन राखीयौ। कितरेक दिन व्यतीत हूवां कुंवर फेर सैल नुं निकलीयौ हुतौ। तिसै समै कुवरपाल साहरी बेटी मासैं चालै छै। कुंवर देख साच हुवौ। तद विंरा यांरा मनमैं विचारीयौ। जु कुंवर सुं म्हारो बोल हुतौ सौ अबै मेलौ न होइ। ताहरां पाछै रहि कुंवर सुं चेष्टा करी दोइ लोटा पांरा सुं भर एक लोटो रेड दीयौ। ऊपर चावल मेलीया। तिरा ऊपर सोपारी धरी। केसरि सुं पूज चालती हुई। ताहरां कुंवर देखि बहुत दलगीर हुवौ। मौनुं क्युं ही कह्यौ नहीं। पिंरा इंरा चेष्टारो तौ क्युंही काररा छै। तद कवल नैंन याद आयौ। आज ऊ हैं तौ संदेह भांजै। बौहत पश्चातप कररा लागौ। जेधिकार मौनु। फिर पाछौ डेरै आयौ। नेम लीयौ जो कवल नैंन विना जीऊं नहीं। ए बात राजा सुंरा। राजा नैं दोनुं बात कठंरा परा कासुं कैरै सैंसार मैं पुत्र विना सर्व अलूरौ। काव्य। सर्व शास्त्रमनेक चापि पठितं। किं

नेन वाणी विना। आग्या राधन होम जाप नियमं। किं तेन दानं विना। तांबूलं यदि भोज रेग भवेत। किं तेन कांता विना। सर्व्व रत्नं भवति नो गुण निधि: किं तेन पुत्रं विना।१। राजा इसौ विचारि कवल नैंण बोला इ कुंवर पासि मेलीयौ। सो सुं मिल्यौ। कह्यौ मित्र मैं आविचारयो काम कीयौ। विश्राम पाय कुंवर पूछीयौ। मित्र एक संदेह छै। जो तिण दिन आपांनु मिली थी सो किणी पांणी सासरै चाली। तद कवल नैंण कटी इशारो ओही विचार। जो दोइ लोटा भर ल्याइ सो कह्यौ थे दोइ साथी हुता एक लोटो ढोल दीयौ कह्यौ एक साथी कठै। अर सो पारी मेलही सो सोपार सहर छै। चावल मेलीया सो चोरवै साह रै बेटै री बहू। केसर सुं पूजी सो केसर नाम छै। ए सहनांण। पाछै आवज्यो थांने बुलाया छै। कुंवर सुंण हर

... चालीया।

सो पारस सहर गया। नांम ठाम पूछि घर ठावौ कीयौ।
जाय मालणरै घरै डेरौ लीयौ। मालण नु कह्यौ म्हांनु रसोई
करदे। मालण कह्यौ हुं चौखे साहरै बेटैरी बहु रै फूलांरी
माला गुंथुं छुं। कंवल नैण कह्यौ माला हुं गुंथीस। तुं
म्हांनुं रसोई कराइदे। फूलांरी माला गुंथी मालणनुं एक
[illegible] दीयौ। कह्यौ म्हांरी हकीकत मालम करे। सो माला
मालण मुजरे लेगई। केसर माला पहिर बौहत राजी हुई।
कह्यौ माला किण गूंथी। मालण कह्यौ म्हांरै कई उतरीया
छै तिण गूंथी छै। अर उवां थांसु वेनती कराई छै।
जो सहर रै गोखै कुंवर मिलीयौ हुतौ सु अठै आयो छै।
तिणांनुं कासुं जाब छै। ताहरां केसर ~~सेत~~ सेत स्यामनैण
करि रीसांणी। अर थांनुं तो क्युं कह्यौ नहीं। कंवरजी
दिलगीर हुवौ। कवल नैण कह्यौ इण बात रौ कारण छै।

सेत स्यांम नैंणा कीया सो चांदणौ पक्ष उतरै/अंधारौ
पक्ष आवै/पछै अंधारै पक्ष आयै मालणनुं रु. ५) दि
कह्यौ आज मोंहरी मालम करे/जो ज्वांनु कासुं जाब
छै/मालणि जाय मालम कीवी/केसर बोहत सनमान दे
कह्यौ/रात घड़ी २ जाइ तद पाछलै झरोखै आइ ऊभा
रहिजो/मालणीं जाय कह्यौ थांनै राति घड़ी २ गई
बोलाया छैं कुंवर सुणि बहुत खुसी हुवौ/राते उठे
जाय ऊभा रह्या/कुंवर डेरै पावडु सांणौ चढि उपर
गयौ/कवल नैंणानुं विदा कीयौ/कह्यौ राते घडी २
पाछिली रहै ताहरां थे उठे आवज्यौ/हिंवै कुंवर अर
केसर मनोरथ पूरण कीया/पाछली रात्री मंत्री कुंवर
नु ले डेरै आयो/इसी भांति बौहत दिन रह्या/तद ~~कवल~~
कवल नैंणा कह्यौ युं वणा घोडै चढिबे हुं चौखवैसाहरै
गया/कह्यौ साहजी ए मांहरै भाईरी वहु छै/इणनुं
थांहरै घरे राखौ/रुपीया पांचसौ म्हानुं द्यौ/तितरे मास
६ भाई घिरां आवसी/ताहरां रुपीया हाजर देनैं लेजासां/
घिरां इणनु केई अस्त्री कन्हैं एकांत राखज्यौ/साहलोभ
लगौ कह्यौ म्हारौ पुत्र परदेस कोठी छै तिणरी बहु
कन्हैं राखसुं/कवल नैंण रुपीया ले डेरै आयौ/हिमैं
केसरी कुंवर सासता सुख भोगवै छै/हिमैं कितेक दिहाडै
साहरौ पुत्र घरे आयौ/वधाई हुई/रातिरौ मालीयै जायौ
और अस्त्री स्वरूप नवीन देख आपरी अस्त्रीनुं पूछीयौ/
ए कुंण छै उण कह्यौ एकण रजपूतरी स्त्री अडांणी
छै/हिंवै स्त्री भरतार बेहुं जणा हास्य विलास सबै
कौ पिण केसरीनुं रुक संग्राम संध बिना क्युं ही भावै
नहीं/दूहो/संग्राम संधकै साथ दिन २ सुख पायो अधिक/
ताहि कहै इण गाथ/कह्यौ न जावै सेसतैं/१/जाहरां साहपुत्र

सूतौ। ताहरां केसरी कुंवरनुं कह्यौ। इण पापीनुं मारि हेठै दह वहै छै तिणमैं नाखयौ। कुंवर सुंहीज कीयौ। पछै कुंवर डेरै आयौ। प्रभात हुवौ ताहरां केसरी सुसरैनुं कह्यौ थांहरौ बेटो रजपूतरी बेटी बहूने लेनकिलीयौ। सम्ह सुणी चुप हुइ रह्यौ। हिवैं दिन ४ पछै कुंवर अरु कवलनैंण दोनुं घोडै चढ़ि। रुपिया ताजर ले चोखवैसा रै घरै आय कह्यौ साहजी रुपीया ल्यौ। भाईरी वहू द्यौ। तद साह वातां वोलावै। कुंवर रीस करि कह्यौ म्हारी वहू दे क माथौ बाढीस। तद साह डरतै कवलनैंणनुं कह्यौ जे आ हुई। हिवैं म्हारै पुत्ररी वहू छै। घौररी द्रव्य ल्यौ। जंजाल काटो। ताहरां कवलनैंण कुंवरनु समझाय केसरीनुले वले द्रबले चालता हुवा। सूवौ कहै माहाराजा चिरंजीव युं देखौ आपरौ मांटी मारि औरसुं चालती रही जांहमांहे इसा आचार तिकांरी परतीत क्युंकरि आवै। इति दंपति विनोदे सूवा कथा चतुर्दस: ।१४।

फेरि राजा विक्रमादित्य सभाजोड़ि बैठौ छै। सर्ब उमराव मुहता कन्हैं बैठा छै के उभा छै। यथा पूर्वोक्त विराजै छैं। राजा खुस्याली सुं सारो साम्हौं जो कह्यौ सूवौ कासुं कहै छै। सारो बोली माहाराजा सलामत सूवां री कूड़ी वातांरी किसी परतीत। म्हारी वात सांचरी छै वले कहूं। दूहो। कामी मैं कामी वडौ। चल्यौ न कुलरी कार। बेटै सागरदत्तकै दीनी लज्या डार।१। राज ग्रहीनाम नगरी। तहां श्रेणीक राजा राज करै। तठै वडौ व्यापारी सागरदत्त नाम सेठ रहै। तिणरै केसव नांम पुत्र। तिणरौ जूनै परणायौ। सो अस्त्री मही चतुर। रूपवंत घरणाई। युं करतां कितरेक दिने सागरदत्त सेठ विसरांमीयौ। सेठ री वहू पिण विसरांमी। सो केसवदत्त देवा वेस्या रमुं

लागौ तिणां सु द्रव्य खाधौ / तिण केसवरौ एक सूहटौ सो
पालै / बीजा पिण भाई भांडौरू सगा तैंणा स कोई वरजै पिण
किणही रो कह्यौ न मानैं / रात दिन उपहीज रहै / ताहरां सूवौ
कहै / दूहो / वेस्या नेहजूवार धन / काती डंबर डार / पाछल
पोह अऊत घर / जातन लागै वार / १ / कालर खेत कपूत घर
कचा कलां कुवाव / महल विछोहां बंधवां ज्युं पेहांद
खणावाव / २ / परनारी कै खरौं / औगुण हैं गुण नांहे /
गरथ गमावै गांठ कौ लछण पंचा मांहि / ३ / इसी भांत
घणौ ही समझायौ पिण समझै नहीं / द्रव्य सोह खाधौ
वेस्या दीठौ हिवैं निर्धन हुवौ / हिवैं किणीं कांम रो नहीं
निगरथां पुरुषा सीठां सरिषा / इ नांचण दीठौ इणरै सूवौ
इण नूं पालतौ / तौ द्रव्यतौ मैं खाधौ ही हिवैं सूवै
नुं मारूं तौ साता उपजै / तद वेस्या कह्यौ के सब द्रव्य
ल्याव के सूवौ ल्याव / तद गरज रौ बाध्यौ सूवौ लेगयौ
सूवै कलाप कीया / रे पापी दुराचारी मौनुं रांड मारसी रे
केसव थारै इस्त्री अपछरा सरीखी जिणरै पेट अवतार
लीजैं साख्यात पारवती रौ अवतार / इसी थारै इस्त्री
तैं इतरौ माल गमायौ / तूं निर्धन हुवौ हिवैं मोनु स्वरण
रांति रै वास्तै यै द्यै / सो थारी किसी गरज सरसी / थारी
गरज काई नहीं सरै / अर मोनुं रांड मारसी / बाहिर ही
कह्यौ पिण चौकल कर नै सूवौ लेजाय वेस्या नुं दीयौ
कह्यौ रे सूवा म्हारै आवतां तूं पालतौ हिवैं तोनु किसी
मौत मारूं / सूवै कह्यौ दुसमण नैं स्युं / वैश्या कह्यौ पांखां
कीयौ तोनुं पांखां खोसि नाखि दीयौ आघे बिली मारसी /
/ दूहो / रक्षण हारे छीपा कुं नीमैं कोरा / मूल नगौ मुंग फल
जल मंगल जोरा / १ / ताहरां सूवौ वेश्यानी नजर वचाइ / रि
गस्तौ २ पांखीती खाल मैं जाइ बैठौ / वेस्या जतन कीवी

नहीं। सूवौ जीवरा जेवड़ी नसपरनालमैं बैठौ पींजरौ दांणौं पोरणी चुगै नैं पिंड पालै। अरु पश्चाताप करै। श्लोक। उपदे शो न दातव्यो। याहशे ताहशे नरे। तसपवानर मूर्वैरा सु गृही निगृही कृता।१। केसव नुं वेस्या सीख दीवी। त्यां वैतौ आव ताहरां जाइ बाइर नुं वेचरणी मांडी। ताहरां सैंरा सगा मिल चीढ इकौरा दे काढीयौ। वेस्या दीठौ हिवैं स्नेह आयौ तद केसवैं रौ मांचौ सूतां लेजाइ बावनी रोही मैं मैं लिआया। तिरा समीयैं वेस्या आपनुं धिकार कीयौ। दैव जोग हुंणा पदारथ। केसव पंरा परभात हुवै रोही मैं जागीयौ देखै तौ किसी ठौड सूतौ छुं। वेस्यारौ सोस पालिनैं घरै आयौ हिवैं वेस्यारै पिरा वैराग आयौ। ठाकुर द्वारै जाय कथा कीरतन सूणौ। पछै माताजीरै देहरै जाय कहै। माताजी मोनुं सरगरी वांछा छै मोनुं सरगरी पालखी आवौ। नि त्यमेव जाय इसौ कहै। एक दिन समै पाइ केसव वेस्या रै घरमैं पौसि जिकुं हाथ आयौ सो लेगयौ। वेस्या रोइ रही। विना दीठैं किरानुं कहीजैं। हिमैं कितेक दिनें सूवै रै पांखां आई। ताहरां आय केसव नुं मिलीयौ। केसव कह्यौ रे सूवा कोई इसौ दाव उपाव जे वेस्यानुं समझा दीजै। केसव सुं मसलत करि सूवौ देहरैं जाइ बैठौ। जिरा वेला वेस्या आवै तिरा वेला देवीनुं सवामंरा फूल चढै। तिरामैं सूवौ जाय बैसै। वेस्या आय कहै मोनु सरग दे। ताहरां सूवौ बोलीयौ हुं तुष्टमान हुवौ तोनुं आज सुं सा तवे दिहाडै पालखी आवसी। पिरा इतरौ करै तैं जिराएै धन लीयौ छै तिरारौ पाछौ दे। बीजौ बांभरानुं दे। बीजौ बाकी न्यात मैं खरच अर आव ज्युं पालखी आवै। तद ज्युं कह्यौ त्युंही कर फेर परभात देहरैं आई। अनेक लोग तमासगीर भेळा साथै हुवा। बोली म्हाराज

कह्यौ त्युं कीयौ छै। वले सूवौ उणहीज ठोड बैठो बो
लीयौ। आ माथै भद्र होइ आव ज्युं परभाते पालखी
देवां। ज्युं कह्यौ त्युं वले करनैं वेस्या आई बोली माहारा
ज हिमैं सरग घो। ताहरां सूवौ बाहिर आय बोलीयौ
रे लोकां रांडरौ माथौ मूंडीयौ। श्री ठाकुरां री मातजी
रौ हुकम छै। ढोला दे सहर देहरैं सुं परी काढो। ताहरां
लोकां हो हो कर ढोला मार परी काढी। तिण कहुं छुं
माहाराजा चिरंजीव पुरुष इसौ अन्याई हुवै। सगा सैंण
भाई बंध समझायौ इस्त्री समझायौ। सूवै समझायौ
पिण न समझ्यौ। किणहीं सू पूरी न पाडी। निदान
वेस्या सुंहीं पूरी न पड़ी। तिण करि माहाराज पुरुष
रो केसो वेसास आवै। इति दंपति विनोद सारो कथा
पंचदश: ।१५।
हिवैं वलै माहाराजा विक्रमादित्य सभा जोडि बैठा
छैं। पूर्वोक्त सभा बिराजै छै। इसामैं सूवा साम्हौं जोय
राजा कहै छै। सारो कांइं कहै छुं। सूवौ कहै छै माहारा
जा चिरंजीव सारो री बात री क्युं परतीत आवै। आतौ
बाता बराय कहै छै। पण वलै कहुं छुं माहाराजा सांभ
ले। दोहा। नारी तौ पैनी छुरी मति कोई लावो अंग।
दस सिर रांवण का गया परनारी कै संग।१। राती तौ पति
संग रमै विरती करै विणास। तारमणी क्युं च्यौयैं। पर रही
ये नणास। विश्वभर नाम्रा पाटणी तठै सुंदरसेण नाम
राजा राज करै। तिणरै चंद्रलेखा रांणी। तिणरै मेघ
कुंवार पुत्र। तिणरै प्रधान नाम मनकेश्वर सो माहाराजा
प्रतापीक बडो न्याय वंत। तिणरैं गंगले नामैं ब्राह्मण पुरो
हित। तिणरैं रंभका इसै नामै इस्त्री महा चतुर। सो भलै
कुलरी देख परणी हुती। सो चंचल भरी जोबन वंत। सोउणनुं

रीझावरा नुं अमल गोली बंधेज दारू घरा ही खावै
पिरा रंभका प्रसन्न होवै। जंगलौ राजा रौ प्रोहित सर्व
बातां मिलै पिंरा रंभकारौ दिन रंजै नहीं। फिरण यावै
नहीं। जंगलौ आसक्त हुवौ रहै। वेसास न करै। एक दिन
राजारै पितारा पिंड भरांवणा नुं मेलहीयौ। घणौ सनमान
सुं मास ५ री खरची दे। साथै आदमी दे चालीयौ। वांसै
घरी भोलांवणा राजा नुं भाई बंधानु दे चालीयौ म्हारी
स्त्री लघु छै। ~~भोली~~ भोली छै। परायै संग विगड़सी वि
णी रै घरै फिरण मती दीज्यो। क्युं कहै सौ ओंण दीजौ
दूहो। पीहर वास विदेस प्रिय। रित वसंत मन लोभ। कुस्ती
संग प्रसंग नर। ए त्रिय विणासण थोभ।१। मुंहडै आगै
छोकरीयां राखि चालीयौ। आ कामांध दिन २ या ४ रही
हिवै रह्यौ नजाय। ताहरां मझमती नाम छोकरी नुं कह्यौ
कोई भलौ सौ पुरुष ले आव। मोसुं रह्यौ जावै नहीं। मझ
मती बाजार गई पिरा कोई जोग जुडीयौ नहीं। राति पोहर
१ जातां पाछी आई। कह्यौ बाई संच कोई जुडीयौ नहीं।
ताहरां काम पीड़ित होइ नैं पिंगल उपरि सोइ रही। हाथ
पग पटकै निसासा नाखै। कहै रात क्युं बोलसी। दूहो।
करक कलेजै मैं चुभी। काम देव की पीर। पुरुष बिना
क्युं नीसरै तनमै पैठौ तीर।१। यु करतां राति वीति हुई
प्रभात हुवौ। सु कुल री लाज सुं दिन वितीत कीयौ। संध्यां
हुई। ताहरां सुरमो कारि कटोरौ भरि राति घड़ी १ गई ताहरां
नीकली मारग जोया हुलीयां रा ठिकाणां जोया। उठी परी
फिरी पिण पुरुष कोई मिलीयौ नहीं। तद गांव सुं बाहर
गई। आगै नदी वहै छै। नदी रै पैलै पार अवधूत १ भांगी
रौ मातौ घूमै छै। सो दीठौ। तिरै एक मडौ वहतो आय
नीसरीयौ सो हाथ सुं कपड़ा बांधि कंधा मडै उपर बैसी

पैलै पार जाय जिंदानु बोलायौ। चूरमौ खवायौ। राति उथै ज रही। आपरौ दिल राजी करि उठै सुं मडै ऊपर बैस भींगे कपड़े घरे आई। सोइ रही और गांवमैं पिंगा परवाड़ा घरांही कीया। यु करतां मासे छह जंगलौ पिंगा घरे आयौ सबै कुटुंब सु मिलीयौ। राते रंभका सुं मिलीयौ। दासी इसै नांम रजपूत चाकर नवौ राखीयौ छै। सो नीचै सूतौ छै। सो तिंगा आगै जंगलौ कहतौ म्हारी स्त्री सीलवंत पति भक्ता छै। घरां वखांगा करतौ। सो हिमैं जंगौ रंभका दोनुं महलमैं सूता छै। तद रंभा जागीयौ औ मारग रौ आयो थाकौ सूतौ छै। इंगासुं तौ गरज का सरै नहीं। तद सूतौ देख रंभा फकीर पास चाली। हेठै आई तद दासी विचारीयौ आ राति एकली केथी जासी। इसौ जांगी दासी वांसै हुवौ। आ चाली-चाली नदी लोप जिंदै पास गई। जिंदै री साई कह्यौ रंडी मोड़ी क्युं आई। युं कहि पावड़ी री पुठ मैं मारी। इगा हाथ जोड़ै कह्यौ जीवै फकीर पातिसाह म्हारै घर रौ धगी आयौ तिंगा वेला लागी। जिंदै कह्यौ खसम कुं मार आवैं तो आव। तद रंभा घरे जाइ मांटी नींद मैं सूतौ थौ तैनुं नख प्रहार कीयौ। दूहौ। हुकम पाय जबनेसको। रंभा आई क गेह। नख प्रहार पति मारीयौ। दासी देखै एह। १। मांटी नुं मारि जिंदै पास आई। कह्यौ फकीर साहिब फुरमायौ सौं करि आई हूं। जिंदै विचार्‌यौ जो आपगौं खसम बातां सटै मारीयौ तौ मोसुं क्या प्रीति राखैगी। इसौ जांगा फकीर कह्यौ। रंडी तूं आपगौं घर जा। मेरे तुझसुं काम कोई नही। रंभा कह्यौ आज तौ अंगीकार करौ। फेर नहीं आऊं। फकीर मानै नहीं। रंभा कहै। दूहो। दया हीगा दुष्टी खरे। इनसुं कैसी प्रीत। खसम लगावै अंग पर जिंदा किसके मीत। रंभा घरे आइ सोइ

रही। दासौ पिण प्रछन आइ सोइ रह्यौ। प्रभात दरबार जाय सुंदरसण कनै पुकारी। कह्यौ म्हारां मोटीनुं रात सूतानुं दासै रजपूत मारीयौ। तद राजा रा हुकम सुं दासै नुं बांधि ल्याया। राजा पूछीयौ रे इसौ काम क्युं कीयौ। तद दासौ आश्चर्य पाय हस्यौ। राजा कह्यौ। इण हासा रौ कारण कि सौ। साच कहे जीव बचावौ। ताहरां दासै कह्यौ माहाराजा ऽस्त्रीरी अगम बात छै। ऽस्त्री इसी ही छै। तिमारौ पाछलौ विरतंत कह्यौ अर कह्यौ देखौ इण रै सुहमैं र पावडीरी चोट छै। देखतौ साची छै। राजा न संदेह हुवौ। दासैनुं छोडि दीयौ। तौ माहाराजा चिरंजीव ऽस्त्री क्युंकरि भली इसा कर्म आप करै। कलंक औरनुं लगावै। तिणरी किसी परतीत आवै। इति दंपति विनोदे सूवा कथायां ऽशः।१६।
फेरि राजा दिवांण जोडि बैठा छै। यथा पूर्वोक्त विधि सुं विराजै छै। राजा सारो साम्हौं जोइ कह्यौ सूवौ कासुं कहै। सारो कहै माहाराजा चिरंजीव सूवारीवात इसीज छै। पिण परतक्ष देखौ पुरुष इसौ ही छै। राजा इंद्र असी हजार ऽस्त्रि छोडि गुरु गोतमरी अहल्या सुं विगूतौ। गौतम श्राप दीयौ। रांवण साठ हजार ऽस्त्री मंदोवरी सरीखी पटरांणी थकां सीता आप हरी तिण सुं लंका रौ राज गयौ वले देखौ। दूहो। पर रमणी रमतौ रहै। सीख न मानै सोइ। रत्नसेन रावत परै। जावण हारी जोई।१।
सुभपुर पाटण तठै देवीसिंघ रावत ठाकुर तिण रै रतन सेन नामैं बेटौ। तिकौ परमार खेमराज चाकर रै वासी रै परणीयौ। बडा उछाह सुं वीवाह कीयौ। सो देवीसिंघ री बेटी कनक सुंदरी महा रूपवंत बडी चतुर। घणौ दायजौ दीयौ। दासी दास दै नै हलाणौं कीयौ। सो एक चेडी नामैं खवासी दीन्ही। सो ठाकुराणी सरूप हुतीज।

पिरा खवास अत्यंत रूपवंत।दूहो। इसी न देवल पूतली। इसी न देवा रंभ। इसी न अपछुर इद्रमैं जांरो हुवी संभ।१। इसी देख कुंवर रतनसेन रौ मन ललचायो कनक सुंदरी सासरे गई। कनक सुंदरी अरु रतनसेन बहुत प्रीति। हिवैं चेडी सुं कुंवर रै लगन हुई। युं करतां केतक दिने कनक सुंदरी जांणीयौ जे चेडी भली नहीं चेडीनुं राीही पाली पिरा-चसके। लगो लागो सो क्युं रहै। कनक सुंदरी वाक्यं।दूहो।चेडी चंचल पियं विरल सुंदरि रहै उदास। गाडर आणी उननुं बाधीचरै कपास।१। कंवरी इसौ कहि मान भंग हुई। तद रतनसेन सुं वीनती कीवी हो राजकुमार जे राजा मुज गुलांम सुं संगति राखी तौ सुरंगमैं पड़तां रौ एवै मायो ग्रह्यौ। एवै पगाग्र ह्या। पछैं मायौ मुंड नै छोड दीयौ। घर घर भीख मांगतौ फि रयौ सो दासी री संगत ऐसी हुवै छै। भांति भांति करि समझायो पिरा समझै नहीं। पछै केताक दिनां अकस्मात चेडी मुई रतनसेन रै मन भ्रांति पडी। जो चेडीनुं कनक सुंदरी मारी। र तनसेन रौ मन भंग हुवो। कुंवर रतनसेन मन उदास रहै। स्त्री लोलप्य फिरै। भली ऽ स्त्री देखै लार लागै ऽऊ करै।
।श्लोक। देसमेकसभामेकं स्त्रीमेकं शास्त्रमेकत: एकेनसेव्यतेय स्तु। कुतस्तस्य विवेकता। कुवरि घोडै-चाढि १ आदमी साथे लीयां फिरै। भली स्त्री देखै तेघ मांरीनु बांधि नाखै। आप डेरानुं भोगवै। नदेखै वाणीयौ न देखै बांभण। न देखै क्षत्री। सो राजा रै रुद्रसंघ नामै बडौ राज उमराव हुतौ सो। तिरारी ऽ स्त्री रूपवंत देखे। उधे बंध लगाया। युं करतां मास ५ ऽ ६ उठै गयौ। ताहरां रुद्रसंघ नु खबर हुई। तद कुंवर नुं पालीयौ। तुं म्हारै माथारौ धणी जीवरौ धणी छै। पिंण बाहर रौ धणी न छै। या बात कुंवरजी म्हांनै माफ करै। घणुं ही कह्यौ पिंण कुंवर रहै नहीं

ताहरां रुद्रसंघ विचारीयौ जो ८ पीढी रौ देस छोडणौ आयौ पिण इसी करूं जे घणां दिन याद करै। एक दिन रुद्रसंघ हेरु राख्या। रतनसंघ रुद्रसंघरै घरे आइ पोढीयौ इसो रातिरै सभै कुंवरनुं मुसके बांधि। बेईजत करे रुद्र संघ रातोराति समाणसौं नीकालि गयौ। परभाति चाकर आइ जोवै तो कुंवरजी बेहाल पड़ीया छै। झोली घालि घरे आणीया। स्त्री कनक सेना हाडा कीया। काव्य। आदौ धर्म धुरा कुटुंब निचिया क्षीणे चस धारणी। सद्भावे चसबी हीते च भगिनी मंत्रे च मंत्रप्रदा। शोक व्याधि पुरे प्लुते च जननी सिज्या सने कामिनी। संचे त्ये तिन विघते त्रि भुवनो भार्या समो नो सुखं। १। तै कहुं छुं माहाराजा त्रिं जीव स्त्री इसी छै न पुरुष इसो अनाचारी छै। प्रतषि देखौ। इति दंपति विनोदे सारो कथा। १८।

बले राजा सभा जोड़ बैठौ छै। यथा पूर्वोक्त सभा विण जै छै। सूवा साम्हौं जोय राजा कह्यौ सारो कासुं कहै छै। तद सूवौ कहै माहाराजा आतौ अपजोड़ीयां बातां कहै छै। दूहो। भीयां जीयां पाणीयां तीना एक सभाव। ऊंचा ऊंचा पर हरै। नीचां सेती भाव। १। विशालपुर नामैं पाटणी। विजैसेन राजा राज करै। तिणरै कनक सुंदरि पटराणी। तिणरै कुंवर कामसेन। तिण रै सात मौहल। तिण मैं रूप मंजरी माहा स्वरूप। कुंवर रौ बडौ प्रेम। दूहो। हंस चलण कदलीह जंघ। कटि केहरि जीमी षीण। मुख सासिहर खंजन नयन। कुच श्रीफल कंठ वीण। १। इसी रूप मंजरी। सो सातै ही विभाचरणी। सो एक प्रांहीज जाय। आपआपरी इच्छा सुं फिरि आवै। युं सातै ही सुख भोगवै। युं करतां घणां दिन हुवा। एक दिन सातै ही श्रावणी तीज खेलण नुं चाली। खेलतां गावतां रामचंद्र सै नाम ब्राह्मण रूपली दीठौ। बीज्यां

बीजा पुरुष जोया। रूपी ब्राह्मण नुं देखि अतिआसक्त हुई। नांव पूछीयौ। बांभण रूपी नुं जोय अतिलोभांणो। हिवैं तीज खेलि घरे गयां। ब्राह्मण भद्रजक्षरै देहरै जाय धरणौ दीयौ। जे उवा स्त्री मिली नहीं तौ तो उपर मरीस। तीजै दिन जक्ष कह्यौ। उठ आज तोतला रै देहरै नवलखै बाग मैं वा तोनुं मिलसी। तद उठा उठ सिनांन जप भोजन कर तोतलै रै देहरै जाइ बैठौ। इसै अवसरै सातेही इच्छा पूरण नी सखी। सो सहर बाहिर जक्षरै देहरै जाइ आप आपरी इच्छा हुई सो मांग्यौ। एकै कह्यौ मोनुं भलो पुरुष जु दीयौ तौ जंहर चढ़ाईस। बीजी कह्यौ मोती चढ़ाईस। तीजी कह्यौ पटोलौ चढ़ाईस। चौथी कह्यौ केसर सुं पूजीस पांचमी कह्यौ सुगंध पहराईस। छट्ठी कह्यौ सवामण चूरमो करीस। सातमी रूपी कह्यौ। मोनुं उ बांभण नव लखै बाग मैं मिलै तौ तोनुं आलिंगण द्युं। युं आप आप इच्छा मांगी देहरा रौ संकेत करि आप आप रै मुहै जाई वन मैं मारग बाधी। रूपी तोतला रै देहरै गई। आगै रामचंद बैठौ छै। आ जाइ मिली। एकांत भाव सजण जा मिल्या। दुहो। सजण मनका भावता। मन सुखसुं मिलीया। आजूणा दिन ऊपरा बीजा बलिहार कीया।१। हिवैं उठा सुं सब सुख भोगवैं नैं पाछी आई। बीजयां ही पाछी आई, भेल्यां हुआं। रूपी जाय जक्षनुं आलिंगण दीयौ। जक्ष सकाम हुइ रूपी रौ होठ कपड़ राखीयौ। ताहरां बीज्यां जाय कामसेन नुं कह्यौ। जो थे म्हांनु भूम्यां जांणि नै म्हां उपरै आंणि थी घणु बाली करि राखीयौ तिका जक्ष रै देहरै जाय जोवौ। देवतांही सुं गुदरै नहीं तो मांणस कुण छै। चौलै दीह नागी हुइ जक्ष सुं भूबी छै। जक्ष पकड़ राखी छै। कुंवरजी जावै देखै। कपड़ा पहिरावै। ताहरां

कामसेन जाय लोकांनु अलगा करि मनमैं विचारीयौ कासुं कीजै। बलरौ काम नहीं। बुधिरौ काम छै। यतः। यस्य बुधि बलं तस्य। निर्बुद्धिस्य कुतो बलं। वने सिंहो दोन्मंत:। सिसकानिया तित।१। ताहरां विचारीयौ खांचीजै तौ होठ टूटै। सहज वालीजै तौ पाछारा। कासुं कीजै। इम विचारीयौ। कुंवर नाजो होइ रूपीनुं भूवीयौ। ताहरां जद्धतंसी यौ। रूपी रौ होठ छूटो। काम सेन रूपीनुंले पाछै आयौ। तौ माहाराजा ऽस्त्री इसी दुष्ट है छै। पहां ऊपर परसी थी। धणुं ही सीख देतो। तौही इणा भांति सुं किरती। तौ जाणीजै ऽस्त्री कहीं वासि आवै नहीं। तिण रौ वेसास क्युं आवै। इति दंपति विनोदे सूवा कथा अष्टादशः।१८। वले म

वले माहाराज सभा मजोडि बैठा छै। खांन सुरतांण सु सरब जुडीया छै। राजा सारो सामो जोइ कहै सूवौ कासुं कहै छै। तद सारो कहे माहाराजा अजे खबर न पडी सूवौ असत्य भाखी छै। भले सुणौ। कामावती नगरी अंग जीत राजा राज्य करै तिण नगर मांहै सेतो साह रहै। वडौ व्यापारी। तिणरै हलधर नाम बेटौ। वडौ ग्यातो। बत्तीस लक्ष णो। वरसां १४ रौ हुवौ सो कहै आप दीठो व्याह करीस। तो माइत आपरै घर री होड होड परचानो करै। हलधर कहै जिका नित्य प्रत प्रात समै म्हारै हाथ रा ७ खला खाइ तिणानु परणसुं। इसी वात सुणे सो नेडौ नावै। दूहो। एह व्याह करसी तिको। जिणरै न हुवै नाक। हालत चालत आद मी। साजे पूंदे आक।१। यूं करतां घणां दिन हुवा। तद उणहीज नगर मैं गौरदत सेठ तिणरै दीकरी कमलावती। तिणानुं मांगा गया। ताहरां मावीते कह्यौ घर सरखौ वरसखौ पिण खासडा कुंण खाइ। ताहरां कन्या मावीतांनुं कह्यौ थे सगाई करौ हुं समझाइ लेईस। भावी छै सु आय मिलसी

ताहरां माईतां हलधरसुं ब्याह कीयौ। परणीज घरै ले
गयौ। पश्चाति समै हलधर बाइरै ७ खासडा दीया। ला
जती बोली नहीं। बीजैं दिन खासडो लेउठीयौ ताहरां बायर
बोली। बडा साह अजे तौ घालरो खारीसो क्युं ही खाधौ
न छै। थांहरो कमायौ खावूं ताहरां खुसडां मोर। तितरै
नामौ मांडतौ जा। दूहो। जगमैं राखैजतन सुं। आपआपरी
नारि। तिणरैं तू द्यै खोसड़ा हलधर अकल अपार।१। ताहरां
हलधर विचारीयौ। जो सच कहै छै। इस्यौ सोच कितेक दिन
मांहि माईतां सुं सीखकरि बाइ सुं सीख करि। घणौ द्रव्य
ले दीवनुं चालीयौ। आगै जातां जातां चूतार पाटणि गयौ।
जठै चूताराज। ऽलोकचूतारा वसै। सो हलधर उरौ करि पोसा
ख कर सहर मांहे तमासौ देखण गयौ। आगै काणौं
मिलीयौ। तिण पूछीयौ साहजी कठा आया कठै वसौ। तद
हलधर रा चाकरां नांव गांव कह्या। तद काणौं कहै। साहजी
म्हैं आंखरै वास्तै थांरै पितानुं हजार रुपीया मेल्हीया था।
सो आंख मेल्ही नहीं। हिवैं साहजी पे आपा। आंख द्यौ। ऊ
डौकर दरबार गया। राजा काणौं नुं रुपीया दिराया। आगैं जातां
एक वेस्या बैठी छै। सो खेटै खेलै छै। राजानुं चौथाइ भरै
छै। सो साह हलधर नुं अपूरब देख छोकरी साथ तेडायौ।
परदेसी जांगणि कह्यौ साहजी। राति सुपनेमैं संजोग कीयौ।
रुपीया हजार दस मांगूं। कनैं हुतो सो खोसलीयौ उपराहत
गोलो करि राखीयौ। सो वेस्या रै पांणी भरै। इसा केई गोला
कीया छै। युं करतां हलधर माईतां नुं कागल मेल्हीयौ। हूं
दोहरो छुं। वैस्या रैं पांणी भरुं छुं। विपत्ति भोगवुं छुं।
म्हारी वेगी वाहर करज्यो। ताहरां हलधररी बाइर पीहर थी।
मांटीरैं कागलरी बातां सांभली। तद मरदानौं वागौ पहरि
घोडौ लीयौ। बैहल लीवी। चाकर आदमी १०० राखनैं तठासुं

छानैं चाली। चूतार पाटणा गया। तलाव उपर डेरौ कीयौ। दिन पांच रह्या चास भा लीवी यूं करतां एक दिन हलधर रै माथै पांणी री मटकी देख नैं उठो तेड़ीयौ। बातां पूछी मां। छवद कथा हलधर री सुणी। तद कह्यौ थारौ माल पिण दिरासां तोनुं गोल परोइ मुं ई छुडासां। कोई पूछै तो कहै मांहरा ठाकुर छै। म्हे ईयां रा बांणीयां छां। इणारा चकां व्यापार करां छां। गुमासता छां। युं कहि नै चाकर राखीयौ। इसौ तरदोज कर बाजो पहर तमासौ देखण नुं जाइ छै। इतै वेस्या देख तवौ कर उभी रही। तुं सपनें मिलीयौ ...ा टका मांगू। झगड़ा करण लागा। ताहरां टका अरगांया। ढेरी करि ऊपर आरीसो राख्यौ। कह्यौ आरीसा मांहीता काढ़लैं। वेस्या कह्यौ औ कासुं। कह्यौ सुपनेरी बात सुपने हीज होसी। वेस्यानुं बां धि डेरै ले जाया। राजा कने पुकार हुई। राजा तेड़े कह्यौ साहजी जोर न करौ। साह कह्यौ माहाराजा धरती मांहै तपा वर छै छै। औ मांहरौ कारणौत छै। पईसा लीया छै सो पाछा ल्याव। क्या मार नाखीस। यूं करि वेस्या कन्हा पईसा लेअत कांणौ ही बोलायौ। कहीयौ थारी आंख काढि नैं आंखि तुं मिराले। नहीं तो दाम दुणा दे। तद कांणो हारीयौ। दाम दुणा लीया। हिवै उठा चालीया। हलधर साथ चाकरी करै छै पगे दुइ बडी देवै। चोकी पोहरो देवै छै। जादे कामावती नेडा आया ताहरां दालीयारी गोठी कीवी। सारानुं धपाय जीमाया। हलधरनुं आपरै ढोलीयै आगै सुवांणी पौ पांणी री डेरै मैं तेग चाइ कीवी। हलधर नुं तिस लागी उठ जोवै तो पांणी नहीं। पांणी री ठाम जोवतां ताजणौ वाह्यौ। पछै तिस मरतै हुकैरौ पांणी पीयौ। पछै परभात हुवै रुपया हजार १ दीया सीख दीवी। चाकर छंडाइ दीयौ। डत्री छानैं सै आगै आई। पाछा हलधर पोसाख करियै

आवौं। वधाइ वंटी। पीहर सुं बहू बुलाई। राति मालीयैं गया
तठै रुपीया हजार बाइर आगै मेलीया। कह्यौ खांसडा दीया।
थारौ वचन संभालि। तद स्त्री मूरख समझावणी चणीं
ही दीवी। समझै नहीं। ताहरां राजाऐ दिखालीयौ। इके रै
जांणीरी बात कही। सरमंदौ होइ चुप करि रह्यौ। सो माहा
राजा मांटी इसौ बेअकल है तिण रौ वेसास क्युं आवै।
इति श्री दंपतिविनोदे सारो कथा एकोन विंसः।१९।
वलै राजा विक्रमादित्य सभा जोडि बैठौ छै। आगैं बडा
बडा बाणीया ऊभा छै। यथा पूर्वोक्त सभा विराजै छै।
तठै राजा सूवा साम्हौं जोइ कहै छै। सारो कासुं कहै
छै। सूवो कहै माहाराज चिरंजीव स्त्रीरी बात क्युं मानणी
आवै। दूहो। हीर कहै हिरणांयां। मकरौ को वेसास। दिन
कागा सुं डरपती। साप सूवौ ले पास।१। संध देसमैं एक
महीयार बलोच रहै। तिणरै सोहणी नाम स्त्री महा
रूपवंत। सो नदीपार एक महीयार सुं लागी। सो नित्य
रातिरी नदी तरि नैं उठै जाइ। विभचार सेवै घरणा
घरणा ही पालै पिण रहै नहीं। यु करतां घणां दिन हुवा।
घड़ा सूं तरै पार जाइ मित्र सुं मिल आवै। दूहौ। सोलै
पतन छतीस तिड़। तिड तिड बाघ प्रुरत। आवंणा जावंणा
आसकां नहीं काम बीयन।१। सो नदी रै कांठै एक का
जी रहै तिको राति कुरांण साहिब हेत पढै। सो एक दिन
सोहणी कामरी मातीकाजी ऊपर पग देनीकली। काजी
कह्या आदमी तो देख। सोहणी कहै। काजी पढै कुरांण
नहरतौ रहमांण सुं। जौ थारो जैं धारा। मन लगौ महीयार
सुं।१। यु सोहणी नित्य आवै जावै। एक दिन सासरै
वांसैं चाली। मारगमैं सीह आयौ तिणानुं सोहणी मारियो
नदी जाय पडी छाती आगैं दे तिरणा लागी। इसै एक मछ

आयौ। मछरौ मरम दाबि चालती रही। सास इसा चिरत देख घरे आई। परभाते केरडौ छूटौ। सास कहै बहू केरडो बांधो। तद सोहणी कहै हूंतो डरूं। तद सासू कहै। सीहमार रा नय तिरणा। मछां लहरा मरम। साप घणा डरपै केहा। देखि असाडै भ्रम। इक दिन सासू रीस करि नै जिको घडौ सोहणी लेजाती थी तिको छिपाय उठै औरकाचो घडौ मेलीयो। सोहणी उतावली घणी घड़ा रौ फौहम कीयौ नहीं। काचौ घडौ ले नीकली। नदी रै उपकंठ जोवै तौ घडौ काचौ। तद कहौ। मैं जांणदी सिरकीयौ काचौ कुंभ कुचीन। तिरांत सायर उतरां मरां तौ कारण मि।१। इसौ विचार साहस करि नदी मैं पैठी। अधबीच घडौ फिस जायो सोहणी डुबण लागी। दूहो। वरसुं वच कीयौ है। मन लायौ महीपार सुं। जेहो कमायौ। तेहौ पायौ सोहणी।१। सोहणी डूब मुई। महियार राति वारै जोइ रहीयौ। दूहो। दूधासुं दहीयां पया। सच कुमलाणां। अजौ न आई सोहणी कोई झोलावगांणा।१। महीयार नदी ऊपर आय जोवै तौ सुगंध आई। महीयार कहै। आज सुगंधो वाहला कसतूरी महमहै। का घरा डूबी सोहणी का इगलीमौ गांधी हट।१। महीयार विलाप करि रह्यो। वांसआही माइति सासू सुसरां मोटी धणुं टी पाली पिण रही नहीं। इसी दुष्ट रौ वेसास क्युकरि आवै। या बात प्रताषि देखौ। इति दम्पति विनोदे सूवा कथा बीसमः। २०।

भले माहाराजा विक्रमादित्य सभा विराजे छै। वागीया प्रधांन सर्व सेवा करै छै। इसा मैं सारो साम्हौं जोमराजा कहै सूवौ कासुं कहै छै। सारो कहै माहाराजा चिरंजीव सूवा री बात सो सांभली वणाई बातां छै म्हारी वात वले कहूं। दूहो। जनम पाय जनीत पै। ताहि कुंद पीठ। कूस दे

फुनिहु दीयौ। तै ना उपजै इंद॥। माहोर नाम नगर तठै राजा बछराज राज करै। तडौ सूरवीर राजा। एकदा प्रातव बाग री सैल करण गयौ थौ। तठै एक देहरौ दीठौ। तिणमैं देव कुंवरी। असुर कुंवरी। नाग कुंवरी नाटिक करैं थी। इसै राजा मच्छी री सिकार खेलतौ देहरै आयौ। अपच्छरायां राजानुं देखि उडती थी। एकैरी वेणी राजारे हाथ आई। सो जोरसुं खुसि आई। वेणीपर राजा आसक्त हुवौ। पूजण लागौ। नाग कुंवरी कोप हुई। मारण आई। आगै पूजा करतौ देखअर बापनुं कह्यौ। मोनुं राजा बछनु परणावौ। तारै राजा बछ नुं परणायौ। तिणसुं वेणी बछ कहाणौ। तिणसुं सुख भोगवतां कुंवर हुवौ। सो त्रिगैसेन कुंवर बडौ सूरवीर बहादुर। तिणनुं पांच स्त्रीयां परणांयां। तिके देव कुंवरी सरीखी महा सुकुमाल। कमलरै फूल पग उपर पडीयौ पग जखमी थौ। दूहौ। चंपकली सिरपर चढी मेरे पीतम आइ। पीय बाहप करत नहीं। गाडै जाते चार मांहि।१। एक सी। चांपा चांन चडंतौ सबद सुणी पाडोसण चा साथ। तिते पडी जब मुझकुं छाला। पडीया हाथ।२। टेक कसीदहीं मांहि अगुली फटी। क्युंकर निकसै राम। जतन कीयां निकसै कदा। जोर तणौ नहीं काम।३। एक इसी। सरद समै सूती निसा। ऊटर्यु नइया नीर। चरण किरण लागी तहां छाला भया सरीर।४। एक इसी। जुलवै मारवी उडवै। आयी पीयाजु पास। पांख पवन उड कै चली। पडी कोस पंचास।५। वार्ता। कुंवरै इसी स्त्रीयां सौ पिण लोड़ थी। सो कुंवर सिकार चढीयौ थौ। सिकार खेल आवतौ थौ। उफ्तलाते घाम सुं व्याकुल थकौ सहरमैं हरदत्त साहरै महल हेठैं आइ उभौ रह्यौ। महल सामहौं जोवतां साहरै बेटी बहू दीठी। माहो मांही नजर विलोकन हुवौ। चित भंगा

पाछौ आपरै महल आयौ। मन उपे रहौ। चिंतातुर बैठौ॥ बोलै नहीं यु करतां दिन ५ ८ वितीत हुवा। ताहरां बिना रीसौं कोइ उपाय कीजै। ताहरां मनमोहणी दूती बोलाई। सनमान दे अर कह्यौ। रतनसेठ हरदत्तसेठ रै बेटैरी बहू मिलावौ। तौ मांगौ सो देवां। उठ तुं जिण मागस। सो देस्यूं। दूती साहरी बहू सुं जाय मिली। पूछीयौ थाहरां भरतार चालीयां किताइक दिन हुवा। कवै छै। दूती बौहत संतोष मांडीयौ। नित्य आवै। कदि मला फूल ल्यावै। कदि मला फूल ल्यावै। कदे क्युं ही भली वसतां आंण भेटि करै। एक दिन सोहणी बोली। हे मन मोहणी तुं घणां घणां आवै वसतां ल्यावै सो किसै वास्तै। ताहरां दूती कहै थे रीस न करौ तौ कहूं। कह्यौ कहि। तो बाईजी राज सुं विजै सेन कुंवर झरोखे मैं दीठी थी। तठा सुं अन पांणी छोड बैठौ छै। कहै छै उवा मिलसी तो जीवस। बडौ पचीण छै। नहींतौ प्राण तजसी। चतुर छै राजा रौ कुंवर छै। इसी भांति सुं दूती कहै ज्युं घणी घणी बातां कही। ताहरां रीस करि बोली। हे दूती कुंवर रै तौ पांच स्त्री इसी छै जिणारै हुं नख बाधी स्तो मुं। हुं तौ आगौ पैठी छुं। म्हारै धणी मनुं भागवी छै। तेनु चाहै सौ भलो कठा। ।दूहा। दूती मतकर वड पणौ। मम कहि चतुर सुजांण। सेष विसेषै हैं भखै। कै वाईस कै स्वान। इसी भांति जाब दे पाछी मेल्ही। तौ ही कुंवर रहै नहीं। दूतीवले आई बात चलाई। ताहरां नायका उठ दूती रै पूठ मैं पाटलै दे परी काढी। ।दूहो। रख रूखी समझै नहीं। मुगधाई रै जोस। जो हुइ जैसे भाजनैं। पानि रहै जब सोस।१। दूती कुंवर पासि गई। कुंवर सोरा पाछि बैठौ। सो कहूं युं महाराजा चिरंजीव। मरद इसौ अचेष्ट है। तिण रै किसौ वेसास आवै। इतै दंपति विनोद

सारो कथा एक विसेम। २१।

फेरि माहाराजा सभा बैठा छै। सर्व सांजित सुं विराज
मान छै। इसैं सूवा साम्हौं जोय कहै छै। सारो कासुं
कहै छै। तहरां सूवौ कहै माहाराजा चिरंजीव ऽस्त्रीजन
रौ वचन साच आसौं छै। श्लोक। अनृतं साहसं माया मूर्ख
त्व अति लोभता, असौचं निर्दयत्वं च स्त्रीणां दोषस्वभावजा।
।१। जिणामैं स्वभावहै ही दूषण तिणा रौ साच कठा ताई।
हाजीपुर पटण तठै देवी संघ राजा राज करै। बडौ तेजस्वी।
तठै आदित्त सेठ रहै। तिणा रै श्रीया इसै नांम स्त्री तिण
रै हरिभद्र नाम बेटौ सो कुंवर पदै रहै। घर रा काम
काज री फिकराई नहीं। बडा सुख भोगवै। सौ एकदिन
उन्हालारी राति छै। गरमी रा दिन छै। सो साहरौ बेटौ सं
पाडौ करै छै। स्त्री सिंगार कीयां मुंह आगै ऊभी छै। इसैं
मैं बुंतुलीयौ आयौ ज्युं स्त्री मालीयैं मैं दौडि छिपी। साह
रौ ~~जेऊ~~ डील सरब धूडि सुं भरीयौ। साहरै दिलमैं आई
जो म्हारी अर्द्ध सरीरी हुंत तौ म्हारै ऊपर छाया करंत। मोनुं
छोडि जावंत नहीं। इसौ जांणा अरु कासीकरवत लैणानुं
गयौ। कितेक दिने कासी गयौ। जाय कह्यौ मोनुं करवत
दौ। दूहौ। योहीज घर माता पिता। अर्द्ध सरीरी गेह। काइक
आगलि इम कही। विश्वनाथ इह देह। १। युं काइ करवत
लीयौ पश्चाति स्त्री उठ जोवै तौ भरतार नहीं। सकोई जोइ
जाइ रहा लाभै नहीं। तांसा स्त्री पग लेनैं कासी गई।
जाइ पूछीयौ किणी पुरुष आज काले करवत लीयौ। तद
उवां कह्यौ। इसैं इह नामौं हरिभद्र नाम बकाल हाजीपुर
रौ वासी तिण करवत लीयौ। इसौ जाब सुणि स्त्री अंदोह
करि पाछी आई। सासु सुसरां सुं बात कही। सगलां ही
अंदोह कीयौ। जो म्हांनौ क्युं कह्यौ नहीं किसै वास्ते करवत

लीयौ। युं कहि रह्या। हिवै आर्यादत्तरी बहू श्रीमा नुं आधान रह्यौ पूरे दिने पुत्र जायौ। वीर भद्र नाम दीयौ। युं करतां बरस १२ रो हुवौ तारां परणायौ। देवदत्त सेठरी बेटी रतना वती माता रूप वंत। पतिव्रता सो उणासुं सुख भोगवतां उस्नकाल आयौ। एक दिन सातरौ बेटौ पछलै पोहर रौन्हावणा बैठौ छै। स्त्री पासै ऊभी छै। इसामैं खुलतीयौ आयौ। युं सातरी बहू भला वीर पहिलां ऊभी थी। तिके भार्ता रा डील सुं वीर ऊभी रही। तारां सात कह्यौ थारां वीर खेरुं हुवै छै। तोनुं रजी लागौ छै। तद स्त्री कहै जो वीर राजिसुं तौ भला छौ नहीं। तद सात जाणीयौ अर्द्धसरीरी सही छै। इसा चिन्ह देखि देवकी निसासो खायौ। वीरभद्र आगली बात जाणि रतनावती नुं कह्यौ। आ भोजाई तिका म्हारी स्त्री थी हुं इस भांति न्हावतौ थौ पुहीज खुलतीयौ आयौ तरै जाइ छिपी तद मैं जाइ कासीकरवत लीयौ। पोहीज घर माता पिता अर्द्धसरीरी स्त्री मांगीयौ सो पायौ। तारां देवकी सुणि निसासो नाखीयौ। तद वीरभद्र हसि रह्यौ। हिवै निसासो खायौ किसुं छै। इसौ देवकी प्रछन थकी सुणि मन मैं विचारीयौ। जे इणानुं भोड़ खराब करुं तो बाप जाई। मोसुं इण खोट कीयौ। दूहौ। काय थकामण कामणि। कालौ साप किराड़। पै पोंचेही पदि करि विरता करै विगाड़। १। पछै देवकी दूतीसुं जाइ मिली कह्यौ कोई भलौ सौ पुरुष ल्याव। तोनुं मणी न सो देईस। तद कुटणि कह्यौ तूं अनपूर्णा रै देहरै जाइ बैसि। हुं भलौ सो पुरुष जोइ ल्यावुं छुं। देवकी देहरै जाय बैठी। दूती कोई पुरुष जोवै छै। रात घडी १८ २ गई छै। इसै वीर भद्र पांन फूल लीयां बाजार मैं जातौ थौ। दूती आय पलौ पकडि कह्यौ। चालौ थांनुं अंनपूर्णा

जी रै देहरै तमासौ दिखवुं/वीरभद्र ख्यालीयौ हुती रै
लार गयौ/तद देवकी दीठौ औ तौ घर रौ हीज आयौ/तुं
फैंटे पकड़ रोवरा लागी/रे फिट हरामखोर तैं १ घड़ी धूड़
पड़ी सिन्तांन मैं तिरा वासते तैं म्हारौ भव बिगाड़ीयौ/अर
तुं इसा करम करैं/चाल तोनुं थारा माईतां नुं दिखालुं
पंचानुं दिखालुं/दरबार लेजासुं/वीरभद्र इस्त्री रै पगै
पड़ीयौ पिरा रहै नहीं/राजा पासि ले गई/माथे डंड करायौ
पंचामैं फजीत कीयौ/सो माहाराजा चिरंजीव स्त्री इसी
इन्याइरा है/तिरारौ किसौ वेसास आवै/इति दंपति बिनोदे
स्वा कथा द्रावीसम/२२/
वले राजा सभा ज्युं पूर्वोक्त बिराजे छै/तब सारो सांम्हौ
जोइ बलौ सूवौ कासुं वहै छै/माहाराजा चिरंजीव
स्वाउी इसी बातांरी परतीत क्युं आंरारौ छौ/हुं कहुं
वलै सुरारौ/गुजरात देस खंभाइत नगरी/अनंग सेन
राजा राज करै/तठै सर्व साहां मुख्य कोडीधज श्रीमंत
साह रहै/तिरारै ७ वासौतर/सो १ वासौत पीव/१ पारस
एक जूनेगढ/१ श्रीनमाल/तीन गुजरात/तिरा श्रीमंत साहरै
बीजड़ नाम बेटौ/माहा रूपवंत कामावतार/सो बीजड़ बरस
१२ रौ हुवौ/तिरानुं वीवरै वासौत श्रीपाल साहरी बेटी बिजोगरी
नाम तिका परणाई/माहारूपवंत चतुर/इसौ/इसीनै सीता
रामरौ/इसीन गोकल चंद/इसीन सूर्य सुंदरी/इसी नरोहिरा
चंद/१/ इसी रूप लावराय बिराजे छै/सो एक दिन बीजड़
सासरैनुं चालीयौ/जाय जिहाज बैठो/सासरै गयौ बधाई
हुई स्त्री सुं जाइ मिलीयौ/इहौ/आप तरा स्त्री तरा मतछ
भांजन मांन/जो नीर पाहेरा मिलै/तौ सुख देव समांन/१/
दिन १० तठै रहि घरारौ दाइजौ ले/बीजड़ न बिजोगरी
बेउं जिरा बैठे घरां नुं चालीया/तिचै राते आड़ी/तठै

हेक पहाडी थी तिरा हैहैं जिहाज जांगलीयौ। रातं उहैही जरह्या तद बीजड नैं बिजोगरणीं बेहू पापाहाडी रै तमासौ जोवतां जोवतां एकै भली ठौड सोइ रह्या। दरियावरी लहर सुं नींद आइ गई। पाछली रात जिहाज चाले गयौ। सायरां नुं खबरि नहीं। बीजड बीजोगरणी सूता रह्या। परभात हुई बीजड जागीयौ देखै तौ जिहाज नहीं। दोनुं ही पश्चाताप करण लागा। फिगरि हुवा कासुं करै जोर कोई चालै नहीं। हिवैं दोनुं पातडी ऊपर रहै। बन फल खाइ। उण ठौड कोई जिहाज आवतौ देखैं। मुं पातडी ऊपर रहितां खाडी १ लाल पांणीरी दीठी १ सबज पांणी री दीठी। हाथ घालि देखै तौ लाल पना। हिवैं बीजड लाल अरु पना री पांड बांधा। पाडी ऊपर बैठा जिहाजरी बाट जोवै छै। दूहौ। जीजा पडे अब अब पडी। सास। सहै सरी। फूलै वीटी ही डूलप्यौ। पांरौ नहै करीर। १। कितरेक दिने जिहाज १ आयौ। सो सौदागर जिहाज ऊपर बैठौ तमासौ संमदरौ देखै छै। तद बीजड नैं बीजो गरणी सौदागरनुं कह्यौ। धरम रौ काम छै तुं म्हांनैं तिह पौहचाइ। सौदागर बिजोगरणीं नुं देख ललचायौ। कह्यौ आनौ। जिहाज ऊभौ राखि पाटीयौ दीयौ। बीजड कहै पैहली तुं चढि। तिजोगरणी कहै पैहली तूं चाढि। मुं करतां बिजो गरणी पैहली चढी। बीजड चढतां सौदागर चूक्तीई कर पाटीयौ खोसि जिहाज चलाय दीयौ। बीजड उथै रह्यौ। बिजोगरणीं नु सौदागर ले गयौ। बीजड उठै कलपै। हिवैं जिहाज आगै जातां राति पडी। सौदागर बिजोगरणीं नुं छलनी मांडी। घणां ही नीहोरा कीया। डर दिखायौ। दिलासा कीवी। लालच दिखायौ। दाय उपाय बौहत कीया। पिण आ मांनै नहीं। पिण विचारीयौ हूं अबला एकली म्हारौ सहाइ कोई नहीं अर औ पापी छै। तरै तद कह्यौ देख रहे तयां एकबाजडी

छै। तठै खेत पाल छै तिणरी जात री अरक छै सो मोहरा घणोसुंदी मिली न छुं। सो खेत पाल नवे नेय पूजीसांघरै जो हुसी सो हुसी। सौदागर मांनी। मन इदरारखीयौ। हिवै जद जिहाज उठासुं चलायो तद बीजड़ कलाप करि कपड़ा पहिरा समंदमैं कुद पड़ीयौ। तद देव संजोग १ पाटीयौ हाथि आयौ। तिण बैसि आवतौ आवतौ सूरत बिंदर आयो। तठै बावड़ी छै। चावंडरौ खेतपालरौ थांन छै। तठै जोगीरौ भेष करनै बैठौ। कनै नग हुता तिका चरतीमैं गाडि ऊपर धूड़ि घाली छै। विभूति चढ़ाइ बैठौ छै। युं करतां सौदागररौ जिहाज फिरा आयो। आइ उतरीया। विजोगणी नव नेवज करि थालीयां भरी छाकरीयां साथ ले अरु चावंड खेतपाल नुं पूजरा आई। बावड़ी ऊपर १ कयंबरो रूख छै। तिणनु देखि विजोगणी दूहौ कहै। ना हरि चढ़ै न घर पड़ै विन्चही वाय विलंब। हम जोबन तम फूलड़े अहुअहले ए कयंब। १। ताहरां सिन्यासीरै रूप बीजड़ बोलीयौ। कमलतु हीरारै कयंब। वासौ मारौ वाय। बीजड़ ~~बिना गणी~~ विजोगणी बिना जोबन अहलौ जाय। २। विजोगणी वाक्यं। बीजड़ चा दुख मुख बसै उसि वहरि किंना सकति। हरख घणौ प्रसन हुई। अबला आतुर अति। ३। बीजड़ वाक्यं। बीजड़ौ समदां बिन्चां परम उतारयौ पार जिनुं अप्छे विजोगणी सही करै मो सार। ४। विजोगणी वाक्यं। जजीजी करि प्रिय जमै। बीच मिलप करतार भलकाजी पपीहा जपै। प्रीय रकात पुकार। ५। इसौ कहि विजोगणी नैं बंजारी थाल्यां नाख हार डोरी तोडि कपड़ा फाडि सिर मैं राखि घालि विपरीत हुई ऊभी। कहै हुं गाऊं नहीं। तद बीजड़ कहौ तूं जा जे खबर हुई तौ मौनुं मारसी। तौनुं लेजासी हिमैं जा। जिण राम इसी बातां कीयां। तिको बीजी ही करसी। बिजोगणी आई। सौदागर

प्रछीयौ तद चाकरां कह्यौ। इराणुं खेतपाल जौहली कीवी।
हिवै बीजड़ उठाउ उठै बजार जाइ नग बराइ घोड़ा लीया।
हथीयार लीया। कपड़ा डेरौ चाकर सर्व सांजाति करि हाकम
सुं जाय मिल्यौ। १ लाल दे कह्यौ। जिहाजां रौ दो मैं मुकातै
लीयौ। रुपीया लाख १ दीया कह्यौ हूं जाणोस सो करीस।
कौल बोल करि जेप बिणजारो उतरीयो थौ तेथ जाय
बैठौ। सर्व दाणि करि बिजोगणी खोसि लीवी। सौदागर नुं
मुसकां बांधि डेरै आणीयौ। कोरड़ा मारि सौह कबूल कीयौ।
हाकम नुं कहि बिजोगणी उरी लीवी। सौदागर नुं दंड कराइ छु
डाइ दीयौ। तठासुं घरै आया। कमाई दे माईतां रै पगे
लागा। हिवै बीजड़ री सर्व लोक हांसी करै। जो बैर एकली
नै सौदागर बिना फोड़ी क्युं राखी हुसी। ताहरां बीजड़
बिजोगणी नुं कहै धीज दे। तद माईते कह्यौ इसी न कहि।
कुल नुं लछण लागसी। तौ ही मानैं नहीं जे रामचंद जी
सरीखे लोकांरा अपवाद सुं धीज लीवी तो बीजा लोक
कासुं छै। ताहरां धीज कीवी। बिजोगणी सीधी। बहुत
सुख हुवौ। तै कहूं छुं माहाराजा चिरंजीव पुरुष इसौ
मन मैलौ हुवै। तिणरौ वेसास क्युं आवै। इति दंपति
विनौदे सारी कथा तेवीसम। २३।
वलै माहाराजा दीवाण जोडि बैठा छै। आगै सरब लोक
ऊभा छै। राजा सूवा साम्हौं जोइ कहै। सारो कासुं कहै
छै। तद सूवौ कहै माहाराज चिरंजीव स्त्री इसी छै। श्लोक।
। रैमंडकमारोदि किं किनखंडीतीत्वया। राम रावण मुंजाद्या
स्त्री भिकेन खंडिता। १। चंदा नगरी चंदसेन राजा राज
करै। तिणरै दोइ कुंवर। एक कुंवरी। तिणरौ नाम रतनमंजरी
तिका देख राजा नुं हरख हुवौ। जो बाई पढ़ाइजै। तद विद्या
निधांन उपाध्याय कनै पढ़ण बैसाणी। एक राजकुंवरी एक

प्रोहितरी कुंवरी / १ मुहतारी दीकरी / १ नगर नायकारी दिकरी
अै च्यार बैठी भेगीती थी / यूं करतां एक दिन राजा फिरा
उपनछ न्यो फिरतौ / आय नीकल्यौ / आगै पोसालमैं बैठी
च्यारेही / आपमैं बातां करै छै / राजकुंवरी कहै संसारमैं
काम मीठो परधांन पुत्री कहै मांस मीठौ / प्रोहित पुत्री
कहै मद्य मीठौ / वेश्या पुत्री कहै कूड़ मीठौ / इसी बात
सांभलि राजा आय बैठौ / अ पूछीयौ बाई थे आ बातां
कहौ सो कासुं जांणौ / राज कुंवरी नुं कह्यौ / तुं काम
री सार किम जांणै / तूं तो कुंवारी छै / आ लज्यायमान
हुई / तरै फेर पूछीयौ सांच कहि / तांहरां दोहौ कहै / भलौ
मनख भमतौ फिरै / कोइ न लेवै नाम / नींच पुरुष हीतेड़जै /
आय पड़ै जब काम / १ / राजा कही सांच / प्रोहितरी दीकरी
नुं कह्यौ / तुं मद्यरी सार किम जांणै / थांहरै तो मद्यसुं छांटौ
लीजै छै / तरै प्रोहितरी दीकरी कहै / / विह्वल ह्वै मद पांनसुं
लोके लहे न मान / सो मीठो युं जाणजै वले करै मद
पान / २ / राजा कही आही साची / मुंहतारी दीकरी नुं
पूछीयौ थारै तौ मांस वापरै नहीं / तुं क्युं जांणौं मांस
मीठौ / तरै मुहतारी दीकरी कहै / जीव परायौ आपणौं / सऊ
सरीखो होइ / तिण कारण परजीय हणौ जो क्युं मीठौ होइ / ३ /
राजा कही आही सांच / फेर वेस्या नुं पूछीयौ / तुं कहि क्युं
मीठौ / कूड़ कुलखण आगबय मतमूला हूं जाय / उदेही ज्युं
लकड़ी कूड़ काया नें खाय / ४ / सो मीठो क्युं / तांहरां वेस्या
सु जाब नायौ / राजा आपरै थानक गयौ / अै च्यारे सोइ
रही / परभाते वेश्यारी बेटी घरे गइ / रातिरौ विरतांत
मांनुं कह्यौ / वै तीन साची हुई / मोनुं कूडी कीवी / बात
सांभलि वेस्या अखाड़ौ रू राजा रै मंडाई / राजा आदर
दीयौ / वेस्या नाटिक कीयौ / राजा खुस्याल हुवौ / वेस्या

वेनती कीनी। माहाराजा सलांमत आसौजी प्रतम रै दिहाड़ै इंद्र महोछव होसी। म्हारै घरे इंद्रजी आवसी। माहाराजा पिण दरस नुं पधारज्यो। इसौ कहि सीखमांगि घरे गई। सूत्रधार तेड कह्यौ जो जागै सौ ~~कह्यौ~~ त्यौ ऊंच मूहरा मैं छतीसे वाजा मांडौ इसी काले बणावौ। जो काले दाबीयां सुं छतीसों बाजा बजै। युं कहि कोहरी संवराई। वाजांरी काले बणाई। ऊपर भला भला जरब फत सुं बणाव कीयौ। देहरा सर आगौ सरवरी पौली बणाई। फेर जाइ राजा नुं कह्यौ। म्हाराज आज म्हारै इंद्र जी आवसी। अगम वाजा बाजसी। राजी पधारौ। राजा चढि आयौ। वेस्या रै घरे आया ताहरां वेस्या कह्यौ। १ राजा १ मुहतो १ दीवांण १ कोटवाल ए च्यार जणां मांहे आवौ। बीजा बारैं रहौ। ४ जणां माहे ले गई। पछै कल दाबी बाजा बाजण लागा। वेस्या जै जै करि उठी कह्यौ इंद्रजी आया। माहाराजा देखौ। जो एक माबाप रौ होकं होसी। सो देखसी। राजा मुंहतै साम्हौ जोवै। मुहतों दीवाण साम्हौं जोवै। आपस मैं जोइ रह्या कुण त्रिजात है। सको जै जै करि उठीयो दरसण हुवौ कल राखी बाजा बाजता रहिगया। कह्यौ हिवै इंद्रजी इंद्रलोक पधारीया। वेस्या घणीं भेट करि राजा नुं सीख दीवी। बीजै दिन राजा रै मुजरै गई। तद राजा वेस्यारी स्तुति करण लागो ताहरां वेस्या कह्यौ माहाराजा इंद्र दीठौ तौ कहौ किसौ रूप थौ। हिवै कासुं कहीजै। ताहरां वेस्या कहै कूड बडौ। किरीयाणौ। औ कौ केल विजाणौं। राजा राणा राजवी सब कोई बखांणै। वेस्या कहै माहाराजा युं कूड मीठौ हिवै सूवौ कहै माहाराजा चिरंजीव स्त्री इसा परपंच करै। तिणारौ वेसास क्युं कर आवै। इति दंपतिविनोदे

सूवा कथा चोवीसम /२४/

फेर राजा विक्रमादित्य सभा जेम पूर्वोक्त विराजै छै जिण भांति राजवी सोभै त्युं सोभै छै/सांो साम्हौं जोड़ कर्हे छै/सूवो कासुं कहै छै/तद सारो कहै माहा राजा चिरंजीव इसी तौ बातां चून्त छै तिकै बणाइ कहै ईज/ पण माहाराजा परतीत आणौं छौ तो वलै सुणौं/ चंपावती नगरी चंपकसेन राजा राज करै/बडौ सूरवीर बडौ ग्याता/वडौ प्रतापी/ तिणरै भुर्यन सुंदरी रंगीली चतुर वडौ रूप तिणरै सुख निधान मुंहतौ बडौ अकलदार/ एक समै राजा सिकार चढ़ीयौ/सिकार खेलतां धूप बोहत लागै/ तद वृक्ष छाया बैठौ/तिसै एक भाट आय आसीस दीधी/ राजा आदर दे पूछीयौ/कठा आया/भाट कहै देस परदेस तमासा जोवत फिरां छां/राजा कहै काई भलीसी वात कहौ/काई भली स्त्री दीठी होइ सो कहौ/ भाट कहै पृथ्वीनाथ घणां ही देसांतर विषै भांति भांति तमासा दीठा पिण तंबावती नगरी तंबसेन राजा तिणरै मदनावती कुंवरी/ इसी देखी जो भूतो न भविष्यति/ राज लायक छै /दोहो/ नखसिख लौं छबि रूप की मोपैं कहीन जाय/अंग अंग छबि देखिकैं अपछर रही लजाइ/१/अति उजल मीमल नयंण कीरि मृग राज कुमारि/ मुख ससि दाम्युं दसण/ रही मैनका हारि/२/ इसी वात सुणि राजा रैमन मदमावती वसी/ भाट नुं साथ ले घरे आया/हिवै राजा नुं रात दिन मदमावती रौ ध्यान रहै/युं कितेक दिने एक समै राजा सूतौ छौ/ पाछली रात सुपनौ दीठौ/जो बडै आचार आडंबर सुं जान करि चढ़ीयां छां/मदमावती परणीयां सुखसेज पोढ़ीयां छां/सो राजा आंख खोलै नहीं/ मति सूपनौ होवै तौ/ दिन पोहर १ चढ़ीयौ/ दरीखानां री वेला

हुई। उमराव लोक सौह भेला हुवा। राजारी बार जोवै छै। इसै मुहतौ आयौ। स कोई कहण लागा। राजा दरबार ना आया कासुं जाणी जै। मुंहते जनानेरी खबर ले भीतर जाइ पगे हाथ दे। राजानुं जगायौ। राजा जागतौ ही काल कोप ह्वौ। तैं मनैं पदमावती सुं क्युं विछोड़यो। खड़ग काढ़ीयौ हूं तोनुं मारीस। मुहतै खमा खमा करि घणां ही समझा यौ पिण राजा मानैं नहीं। तद मुहतै कह्यौ क्युंही बसौ। राजा कहै जे पदमावती मिलावै। तौ बगसुं। मुहतै कह्यौ इण बात रौ कासुं छै। सुपनैरी बात सांप्रति कर दिखालुं तौ रावलौ बंदौ। तद राजा खुस्याल होइ मुहते नुं सिरपाव दे। दोनुं बाहिर आया। दीवांण कीयौ। दीवांण बोहड़ायौ तद मुहतौ घरे आयौ। मुहतैनुं फिकर हुई। हिमैं कासुं कीजै। तद मुहतै रै सूवौ हुतौ तिण पूछीयौ आज चिंतातुर क्युं। मुहतै कह्यौ सूवा राजा सुपनो वाच्यौ पदमावती रौ। सो पदमावती परणाई चाहीजै। नहीं तौ मारै तिण चिंता छै। पदमावती आगै मांगी छै। सो किसी भांति परणाईजै। किसी भांति आपां मिलां। मैं तौ परणावण री हंमल भरी सिरपाव ले आयौ। श्लोक। चिंता चिंता समाख्याता। चिंता तद्दचितकाधिका। चिंता दहत निर्जीव। चिंता सजीवतं देह।१। तिण चिंता छै। सूवौ कहै राजि इति चिंता न करौ। जे राम कीयौ तौ वीवाह करावुं। नहीं तौ खबर तो आणि देईस। तद सूवौ सीख मांग मालुधरी नैहं लीयौ। कितेक दिने तांबावती गयौ। जाय आसा पूरणी रै देहरै रह्यौ। इसै समैं सात सैस खीयां सुं पदमावती देहरै आई। वडा इतमांम सुं। दूरि दूरि करती हाथे आवध लीया। सखी एक कांगां नु बंदूक चलावती थी। तिण सूवै कह्यौ महाराजा चंपकसेनरी

दुहाई छै। बंदूक माते चलावैं। जीव सोह सारीखो छै। हाथी कीडी राजा रंक जीव सा बराबरि छै। दोहा। आप जीव परजीव सम। जाणो विग्य विचार। करुणा रस भीना जिके भवसुं उतरे पार। ।१। तुं तो राज कुल जनमी छै। जीव हंसा न कीजै। इतो सुण मद नावती कहै। रे तुं कुंण चंपकसेनरी दुहाई देवै। कहै हैं किण रौ चाकर। तद सूवौ कहै चंपावती नगरी जाणौं इंद्र पुरी। चंपक सेन राजा इंद्र सारीखो तिणरौ हुं चाकर छुं। इसी बात सुणै मदनावती सूवा नुं डेरै ले गई। वातां पूछी सूवै राजारै सप नेरी बातां सब कही। तिणा वासते थां कन्है मेलीयौ छै। वात सुणा अनुराग ऊपनो। कुंवरी कागल लिखी सूवारै गलै बांधे विदा कीयौ। लिखीयौ जो राजा मुहतौ सूवैनुं लेनैं आवज्यो। इसौ लिखी दीयौ। सूवौ कितेक दिने चंपावती आयौ। कागल मुहतै ळपु ओरीण राजानुं दीयौ। राजा कागल बांचि खुसी हूवौ। हिवै राज मुहतै री दीकरै नुं भलाय नैं। राजा मुहतौ। मनवेग पवनवेग घोडै चढि घरणी खरची ले सूवै नुं साथ ले चालीया कितेक दिने चंबावती जाय पौहता मालीरै डेरौ कीयौ सुखै रहै छै। सूवै जाय खबर दीवी। राजा मुहतौ आयौ छै। सूवौ परच्छानौं करि एक दे आसा पूरणी रै देहरै। कुंवरी नुं ले आयौ आगै राजा मुहतौ संकेतवादि बैठा था। आणि मेला कीया। चूड़ा ढिगला करि परणीया। चढि नै खडीया कितेक दिने चंपावती आय बाग मैं उतरीया। घरे २ वधाई हुई। हाट बाजार सिणगारि घणी भांति पैसा री करि बधाया वडी खुस्याली सुं राजा घरे आया। हिवै राजा राणी सुख भोगवै छै। बीजीयां रांणीयां सौ त्याग कीयौ। तु बीजीयां खेद मांडीयौ। कहै कोई उपाय कीजै। छल छिद्र जोवैं। मदनावती रै तो नित्य नेम चवदस आठम आसा पूरणी नुं जुगो करै।

सो दस आदमी भेला करै।चक्र मांडै होम करै।जप जाप करै।इसी भांति भांति सुं पूजा करै।तद लोकां राजानुं भरमायौ।थांनु कामण करै छै।राजा मानैं नहीं।तदले जाइ दिखाली थी।राजा मद नावती री त्याग कीयौ।मुहतैं घणुंही समझायौ।पिण समझै नहीं।सो कहुं छुं माहाराजा चिरंजीव।या बात प्रतखि देखी पुरुष इसौ बेपीरहै बिना अपराध छोडि बैठौ।कठी री कलौ इमानीयौ नहीं।तिणरौ किसौ वेसास।इति दंपति विनोदे सारो कथा पंचवीसम।२५।

भलै माहाराजा विक्रमादित्य सभा मध्य विराजै छै यथा पूर्वोक्त सभा बणी छै।राजा खुस्याली सुं सूवा साम्हौं जोय कहै छै।सादो कासुं कहै छै।सूवौ कहै छै माहाराजा अजे सारो री परतीत आवै छै।तौ वलै सुणौ।दूहो।[illegible]यर बपु मुरारि पियं।[illegible] हजे वड़ हजे वड भाव।लछी टीडै घरि घर।महिला रुह सहावी।१। सहो पाटणी तठै विजैसेन राजा राज करै।वडौ तेज प्रताप।तठै वडां व्यारीयां सिरै वकुरौ साह रहै।तिणरै च्यार दीकरा।एक दीकरी।तिणरो नाम रुखमणी।सो अति रूपवंत।दूहो।नैंण विसाल सुंकांति मुख।चंद विराजै भाल।दस नक हीरा सारिखा।अधर प्रवाली लाल।१।तिण रुखमणीं नु वड नगर रौ वासी निहालचंद साह तैरै बेटै श्रीभांण नुं परणाई।सो महा ग्याता चतुर।वर्ष १६ रौ।चढ़ती ज्वान।सो रुखमणी अरु श्री भांण वडौ सनेह।सो लौलीशयको रहै।सो सासरै बडा सुख भोगवै राजारै तलाव तेथ जाय।बाग वाडी जाय गोठ मजलस करै इसी भांति रहतां घणां दिन हुवा।तद सासरै आंणीयौ जमाई तौ इता या[illegible]रै हुवौ।ताहरां जेथ जमाई आवतौ

तेपण भींत दूहौ लिख्यौ। स्त्री पीहर नर सासरै संजमीयां
न्हवास। ख्या। होइ अल रुखमणी जो बोलै चौमास।१।सासरौ
सरग वासरौ। दिन दोइ का च्यार। आगैं होइ अनादरौ
पडीयौ ढाढाचार।२। अति परचै आदर नहीं। जिम मालिया
चल वास। चंद बालै भीलणी। तिम जग सहू विमास।३।
ईसै दूहा श्री भांवण वांच। चितकै हुवौ। राते समैं स्त्री
सुं मिलि कह्यौ मोनुं सीख द्यौ। हूं व्यापार करण परदेस
जाईस। स्त्री कहै हुं ई साथै आईस। श्री भांवण कहै तोनुं
कठै ले जांउ। हूं तौ थांरा बाप नुं ही मिलुं नहीं। मैं कमाइ
नही खाच्यौ। माईतारै माथै सुख भोगवीयौ छै। हिमैं
करम परीक्षा करण जाउं छुं। दूहौ। करमैं लछमी संपजै
करमैं लछमी जाइ। करमैं सुख दुख संपजै करम विछोहा
थाय।१। ये परणौ सत सील मैं रहीज्यो। राति इसौ कराति
इसौ कहि सू रह्या। प्रात समैं उठ सासू सुसरां सुं सीख
करि चालीयौ। गो दीवडायौ कोठी मांडी। वासैं रुखमणीं
नु विरह उपनौ। दिन पांच सात तो लमैं रही। आगैं
रह्यौ न जाइ। तांहरा दोहौ कहै। दोहो। मरण भलो कुं
विरह तैं। यह विचारि चित जोइ। मरण मिटै दुख एकरौ
विरह दुहुं दुख होइ।१। एक दिन अपणी सासैं हुती तिण
सुं जाइ मिली। उणारैं जोइजीयौ तिसौ आंण मेलीयौ।
इण भांति वरस ५ सात वितीत कीया। हिवैं कितेक
दिने श्री भांवण द्रव्य कमाइ दीव सुं चालीयौ। जिहाज
बैठौ। कांठै आइ उतरीयौ। तठै ~~कोपरी~~ कोपरी १ आदमी री पडी
दीठी। तिणमैं इसौ लिख्यौ। गाहा। जामो तिलंगदेसे। आंण
मरणं वीक्रम नयर मझ मिं। मरबां समुद्र तीरे अजे किं किं
भविष्यति।१। गाहा वांचि श्री भांवण नुं अचरिज उपनौ
जो हिवैं कासुं हुसी। कोपरी उरी लै परणौं पाटबारै

वीटी बुगचे बांधी। कितेक दिने सरसै पाराणी आयौ सासु सुसरां सुं मिलीयौ। राणि रुखमणी नुं मिलीयौ। भला २ गहणा कपड़ा दीया। दोनुं ही खुस्याल हूवा। कितराक दिन रहि वड नगर नुं चालीया। घरे आया। माईतां नुं मिलीयौ। द्रव्य कमायौ थौ सो आगै मेल्हि पावे लागौ। हिवैं एक दिन श्रीभोंरा कोई एक तमासौ देखण गयौ थौ तासैं उस्त्री बुगचौ छोडीयौ। जोवतां जोवतां कोपरी निकली। ताहरां विमासीयौ जो कोई इणी प्यारी मित्रणी थी सो तिणरी कोपरी छै। पिसा इणानुं बांटि जीमाउं तौ सही स्वाद लाभै। इसौ विचारि कोपरी पिसी जिमाइ खीर मैं घाले नै। श्री भोंरा प्यार सुं बोल्यो। आजरी खीर भली सवाद हुई छै। तद रुखमणी कहै स्वाद क्युं न हुवै। थारी प्यारी हुती। श्रीभोंरा सम चौ नहीं एक दिन बुगचौ संभालीयौ तौ कोपरी नहीं तद स्त्रीनुं पूछीयौ इणमैं वसत थी सौ कठै। रुखमणी कहै न खीर मैं जीमाइ तद मीठी लागी। भूल गया। थांहरी तौ प्यारी मित्रणी थी जिणरी कोपरी ही बुगचे बांधी श्री भोंरा चुप करि रह्यौ। पछै आश्चर्य पाय कहै। रांडां हुवै जुक। वे काजे पाडा गहैं। खोडो हुवै ज ऊंठ। गादैडैनुं डोभ दै। १। तै कहूं छुं। माहाराजा सलांमत स्त्री इसी छै। आप इसा करम करैं भोरां सिर दूसरा धरै। तिणरौ वेसास क्युं आवै। इति दंपति विनोदे सूवा कथा पावी समी:। २५।

वले माहाराजा दीवांण विराजै छै। सभा जुडी छै खुस्याली सुं सारो सामहौं जोइ कहै। सूवौ कासुं कहै छै तद सारो कहै। माहाराजा चिरंजीव सूवा री केसी बात मुंह री वताई। हुं तो शास्त्ररी बात कहुं छुं। वले सांभलो।

आरराय वन है विषैं रिषीसर वडा २ महंत रहैं/मार्क
डेय/भारद्वाज/श्रृंगी रिष/अगस्त/पिपलादि इत्यादिक
मोटा २ रिष रहै/तठै गरुडजी दरसण निमत आया/
सौनाके रिष आगैं ब्रह्मा विष्णु महेस बैठा देख गरुड
आय पुनछ आगै बैठौ/धर्म चरचा करतां दोइ प्रश्न
पूछीया/जो नारायण लिप्त छै कि निरलेप छै/ताहरां
पुनिछ कहै/श्लोक/निरंजनो निरालंबो/निर्लेपो निर्वि
ग्रह/निर्गुणो निष्कलोनंतो/नीसी नीहो व्यपो क्षय/१/
एकदा प्रस्तावे गोपांगना रै मन इच्छा उपनी/जो
अगस्त जी छ मास तपस्या करै छै/सो पारणौं कराणौं
सो सोलह सहस गोपांगना छ मास तांइ पकवान
कीया/जाहरां तपस्या पूरी हुई ताहरां/पकवान सुं
छाब भर ले चाली/अरु श्री कृष्णजी सुं पूछीयौ/आगै
जमनाजी जोरि बहै छै/पैडौं किसी भांति पावस्यां/
तद ठाकुरां कह्यौ थे हाथ जोडि कहिज्यो/जे श्री कृष्ण
गोप्यां सुं आलिप्त छै तो पैडो द्यो/ताहरां गोप्यां हसी/
नैं चाली/आगै जमनाजी वहै छै/इणां हाथ जोडि कह्यौ
जे श्री कृष्ण म्हांसुं अलिप्त छै तो पैडो द्यो/तद जमना
जी फाटि पैडो दीयौ/इंणा जाय अगस्त जी नुं पारणौं
करायौ/फेर अगस्तजी सुं वेनती कीवी आवतां तो
इसी भांति आयां छ्यां/जातां किसी भांति जावां/तद
अगस्त जी कहै थे हाथ जोडि कहिज्यो/अगस्तजी निर
आहार छै तो पैडो द्यो/ऐ आश्चर्य पाय चाली/आगै
जाय जमनांजी सुं वेनती कीवी/पैडो दीयौ/सो नारायण
निर्लेप छै/आलिप्त छै/निर्गुण निराकार निरंजण छै/सो
पुनछ अरु गरुड इसी चरचा करै छै/तिसै वेल विधाता
आय निकली/ताहरां गरुड रौ मित्र चूचू पासै बैठौ थौ/

विधाता देख माथो धूणीयौ। गरुड पूछीयौ थे माथो क्यूं धूणीयौ। तद विधाता कहै। इण चूचूरी मौत आज बिलाड रै हाथ छै। औ थांकनै बैठो छै सो अचरज छै। विधाता गयां पछै गरुड चूचू नुं ले नवालाख जोजन समुद्रमें देहरा छै। तिणमैं ले बैसाणीयौ। आड कपाट दीया। देखां किसी भांति बिलाड मारसी। गरुड मेल्हनैं डेरै आयौ। वासैं देहरामैं बिलाड रहै तौ थौ तिण मार खायौ। विधाता फिर पाछी आई। तद म कह्यौ गरुडनैं आफे लेजाइ दीधौ। चूचू उठै बिलाड मार खायौ। उण रौ भख थौ। गरुड जाय देखै तौ पांखां पडीयां छै। गरुड पछितावौ करण लागो। लिखियौ न मिटै। भले उणहीज ठौड पुनिष्ट अरु गरुड चरचा करै छै। तिसै विधाता आई। पुनष्ट पूछीयौ। आज कठै कठै चालीया। विधाता कहै आज छीपैरै घरै थांरी स्त्री रो जनम हुवौ छै सो लेख च्यांतरण जावां छां। पुनष्ट विचारीयौ भलौ दैव या तपस्या फली अछे पाछिपरणासुं ज होसी। तरै विचारीयौ हुं उणनुं मारुं तौ भली। युं करतां वरस ५ री छोकरी हुई। भातौ ले घार जाइथी। पुनष्ट दीठी। मारि नदी मैं चलाइ दीवी। आप जाइ मठ बैठौ। आ वहली २ किणी तापसरै मठ आगे जाइ अटकी। स्त्री। तद रिषीसरां उठा लीनी। पटा बांधे साजी कीवी। पाल पोस मोटी कीवी। वरस १२ री हुई तद पुनष्ट नुं नालेर मेल परणायौ। ताहरां वलै विधाता आई कह्यौ। म्हारा लिख्या अन्यथा न हुवै। पेर सहिनाण जोवौ। पुनिष्ट जोइ न त्याग कीयौ। आप जाइ बारै बरसी तपै छै। स्त्री हीयौ फूट मुई। हिरणी हुई। सो वन मैं रिषरै साम्हैं आइ बैसै। कितेक दिने पुनिष्टरै कानां मैं चिड़ियां आला कीया।

सो चिडी चिडौ दोवुं चूरा नुं नीकल्या था। तिसैं भाव आई। चिडौ जोर सुं आइ आलै पैठौ। चिडी आयनसकी। सो राति बारैं रही। प्रभाते चिडौ बेसरा न दै। तुं राति किंणारै गई थी। घरणा वेस्वास कीया तद आलै मैं तोआवणा दीवी। पिरा वचन मानैं नहीं। ताहरां चिडी कह्यौ जे तूं मोनुं कूडा कलंक दे छै। तौ पुनश्वरैं पाप लीजैं। तद पुनश्व कानां आडा हाथ देनैं कह्यौ हूं पापी किसी भांति। तद चिडी कहै तुं बाल कन्या रा वधनैं समवी हुवौ। निर्प राध स्त्री छोडी। सो हीयो फूटि मुई हिरणी हुई। तद रिष कहै ओ पाप किसी भांति उतरै। चिडी कहै बालक हत्या स्त्री हत्या कदी न उतरै। पिरा हिरणरूप हुइ आशा पूरै वा त्रिपती व्है तो कदा चीत पाप उतरै चिडीरैं कहै हिरण रूप हुइ। क्रीडा निमत फाल सांधी। तिसरै जापंड सिकार खेलतौ आयौ। बांण सुं हिरण मारीयौ। हिरणी सराप दीयौ। राजा इण विजोग तुंहीज मरजे। सो कहुं छुं माहाराजा इसौ मोटौ तपसी ग्यानी पुरुष तिकौ ही बाल कन्या रा वध नैं हुवौ। विना अपराध इस्त्री छोडी। तो बीजां अग्यांनी किसी कहूं। तौ पुरुष इसौ दुष्ट व्है तिणरौ वेसास क्युं आवै। इति दंपति विनोद सारो कथा सप्त वीसां२८।

फेर माहाराजा सभा विराजै छै। अनेक न्याव नीवडै छै। सूवा साम्हौ जोर राजा कहै छै। सारो कासुं कहै छै माहाराजा चिरंजीव वलै साभलौ। दूहौ। ग्यान होवै आपरणौ। जोवौ सोच विचार। तन थी मन थी वचन थी सीस दीयौ सु विचार। १। एकदा प्रतावैं श्री नारायण जी गरुड नुं हुकम कीयौ। जे नवकुली नाग लिंयार। हुकम पाइ कर गरुड उडीयौ। तद अष्ट कुली संहारी। नवमी कुली पंडूर भागो। पैठाण पाटण माहे हरदेव नाम रजपूत राजा तै

भाई तिणारै घरमैं जाइ परणीयौ तिणा हरदत्तरी बेटी चंद्र
मती भलौ पुरुष देखनैं परणाई। सो अत्यंत प्यार
रातिदीह एकठा रहे। काहे ही विछरै नहीं। चंद्रमती
सहेल्यांमैं घणौ सुख सुं खेलै। इसौ नाग पंचमी आई
तद सहेल्यां नाग पूजण चाल्या। चंद्रमतीनुं कहै। तुं ही
आव नाग पूजण जावां। सो पंडूर उणारौ विरह
खम सकै नही तद पंडूर कहै। थे कठै जासौ। उणा कह्यौ
म्हे नाग पूजण जासां। पंडूर कहै जाय कायुं करसौ मोनुं ही
पूजौ। कहीनुं कहौ मतां। आप नाग रूप हुइ दिखायौ। आ
पूजा करि खुसी हुई। हिवैं गरुड़ देस देस सोझतौ फिरै छै।
कठै ही पावै नहीं तद विचारीयौ जौ परहण का आंतरा
इयां दोनु बायरां सुं बात हाथ आवसी। इसौ विचारि
परहण जाइ बैठौ। युं करतां प्रात समै सखायां चंद्रमती
नुं परहण री गैल ले नीसरी। तठै पूछीयौ काई नाग पूज
ण क्युनाई। ताहरां मुलक रही। यां फेर चाड कर पूछीयौ
तद चंद्रमती कहै थे कठैही कहीकहौ मती। म्हारौ भरतार
नागरूप छै। उहीज पूजीयौ। श्लोक। स्थले जलं जले रेखा
बहु बुद्धि करे फलं। स्त्रीया गुह्यं तथा लक्ष्मी न भवति
चिरायुष। १। इतरी वात गरुड़ सुणी तद चिड़ी रूप हुइ
चंद्रमती री मटकी उपरआइ बैठौ। चालीयौ चालीयौ घरे
आयौ। देखैं तौ पंडूर बैठौ छै। पंडूर चिड़ी नुं मटकी
बोटतां देख माली सुं उडावंण लागौ। ताहरां गरुड़
कहै। श्लोक। सेख शब्द भोरे नदं। हयहत्ती सुरतालका। से
पंखी न बैठो राजा। ने टुडैं करता लिका। १। गरुड़ कहै चोर
लाधौ। घणी मुंड आयौ। हिवैं आपो प्रकासि इसी बात
सुणतां पंडूर साप हुवौ। गरुड़ आपरूप हुइ। चूंच सुं ले
उड्यौ। चंद्रमती विलाप करती रही। पंडूर मुंडीयां जायछै

तिसै गरुड कहै/आपा छउं विड विड वसै नारी ग्रभ करइ/ते नर पुंडर नाग ज्युं पडे विलयां जाइ/पंडुर वाक्यं/असी भेद न दीजीये/जबलग उगै सूर/जचंवव होडीयौ/इम जंपे पंडूर/१/ गरुड कह्यौ कासुं कह्यौ/इणा फेर कह्यौ ई दोहो/ गरुड खीर्वाचौ/ इसै वैताढ लेजाइ गरुड पंडूर नुं मारंण लागौ/ताहरां कहै किसी भांति मारूं/पंडूर कहै गुरु नैं मारे त्युं मार/ गरुड कहै गुर क्युं/ पंडुर कहै/ श्लोक/ एकाक्षर-प्रदातारं/यौ गुरु नैव मन्यते/स्वानयो निशतं गत्वा/चांडाले श्वापि जायते/सो एक अक्षर दै सोइ गुरु/मैं तौ तोनुं बत्रीस अक्षर सिखाया छै/इतौ सुणं गरुड छोड दीयौ/अष्ट कुली मारी पंडूर कुली आयाप छै/तिण कहुं छुं माहाराजा चिरंजीव स्त्री इतौ वेअकल छै/पेट मैं वात रहती नहीं/तिणरौ वेसास क्युं आवै/इति दंपति विनोदे सूवा कथा अष्टाविंसः/२८/वले महाराजा सभा विराजै छै/इद्र समान सोभै छै/तरै सारो साम्हौ जोइ कहै सूवौ कासुं कहै छै/तद सारो कहै/ अवर कथा कैसी कहूं/ सुणौ कान धर वात/गवरी पती माधौ मिलै/जे कीनौं अवदात/१/ माहाराजा माहादेवजी सुं कीयौ तौ मारणसरौ कासुं छै/ राजा कहै आ किसी वात छै/सारो कहै/एकदा प्रस्तावै कैलास परबतरै विषै माहादेव पारबती सुखैं रहै/तिसै मैं एक तिपुर नामैं दैत्य आयौ/ पारबती नुं देखि लोभाणो/आ किसी भांति म्हारै हाथ आवै/तद सेवा करणा लागौ/सेवा करतां बारे बरस हुवा/एक दिन माहादेव तुष्टमान हुवा तिरपुर नुं कह्यौ वरं ब्रूहि/२/इण कह्यौ सत्यमेव/तिपुर मनमैं खोटौ छौ/इसौ वचन पाइ माहादेवरै हाथ रौ भसम कडौ मांगीयौ/जिणरै माथै राखै सो भसम होइ/भोली

नकवै कड़ो दीयौ। इण दीठौ घात आई। ओहीज
कड़ौ ईणारै माथै मेलि भसम करि पारवती उ(ठी) ज्युं
दैत्य कड़ौ ले माहादेवरै माथै मेलण लागौ। ज्युं
माहादेव नाठौ। पाछै तिपुर दोडीयौ। आगे माहादेव
वासैं तिपुर। घणां डर गया। तद माहादेव विसंु नुं
याद कीया। तद विसंु माहादेवनुं संकट पडीयौ जाण
रुपा सरूप मोहणी पार्वती रौ रूप करि तिपुर आडौ
आय फिर्यौ। कहै कठै जाइस मरजै नुं जोराद अव हुं
थारै आइस। तद तिरपुर खुस्याल हुवौ मोहणी रूपनुं
कहै आव म्हासुं संग करि। तद मोहणी रूप कह्यौ माहा
देव म्हारौ कह्यौ करतौ सु संगति करुं। इण कह्यौ कहि।
तदकहै माहादेव तौ नागौ होइ जीमणौ हाथ माथै धरितौ
डावो हाथ भसम कडौ थो। भसम कड़ो माथै आयौ
दैत्य भसम हुवौ। कड़ौ ले विसनु माहादेव नुं जाय पौहता।
आगौ माहादेव नाठौ जाइ छै। विसनु बोलाय कह्यौ कठै
जासौ ऊभा रहौ। महादेव कहै मोनुं जाण दो वासैं तिपुर
आवै छै। विसनु कहै मैं तिपुर मारीयौ छै धीरज राखौ।
माहादेव ऊभौ रह्यौ विसनु आय मिल्या। पुछीयौ थे
तिपुर क्युंकरि मारीयौ। तारा विसनु पार्वती रौ मोहनी
रूप करि दिखायौ। माहादेवरौ मन डुल्यौ विसनुं नुं
गरभ रह्यौ। हिवै दोनुं ही विमासता फिरै। औ गर्भ
कैठै दीजै। कासुं कीजै। युं फिरता फिरतां प्रात समैके
कंथा अंजनी रै आया। अंजनी घणी आगो तिसा जति
करि भोजन कीया। तद महादेव विसनु कहै म्है म्हारै
जीमां नहीं। तुं निगुरी जे गुरु करै तौ जीमां। तारां
अंजनी कहै म्हारा और कुंण गुरु जोवां। थेहीज दिक्षा
देवौ। तद विसनुं अंजनी रै कान मैं फूंक दीवी। गर्भ ऊतरि

गयौ / तद अंजनी बोली वाह वाह महाराज थ्रौ कुंराकाम
कीयौ / थे महा पुरुष कहावौ अरु म्हारौ सील खंड्यो
हुं किरावौ नाम चरीत्र / महादेव विष्णु कहै थारै पवन
भरतार / पछै हनूमांन जायौ / तै कहुं छुं माहाराजा
चिरंजीव पुरुष इसा है छै / जे इसा माहा पुरुष तिके
इंद्रसा छल छिद्र करै तो बीजां रौ वेसास क्यु आवै
इति दंपति विनोदे सारो कथा एकोन त्रिंश: /२९/
फेर माहाराजा सभा विराजै छै / तरै सूवा साम्हौं जोइ
कहै सारो कासुं कहै छै / सूवौ कहै माहाराजा स्त्री री
जाति शास्त्र मैं किं आंखी / सास्त्र री बात हूं कहुं स्त्री
रै वासतै राजा जनमेजय किसा वाना कीया तौ ही
आपरारी न हुई / सूवौ कहै छै / हथनापुर नगर राजा
परीक्षित रौ पुत्र राजा जनमैजय राज करै / वडौ धर्मीक
राजा / सु एक दिन राजा व्यासजीरै वेदव्यास आया / सो
आगौ माहाभारतरी कथा करै छै / सो एक दिन राजा
व्यासजी नुं पूछीयौ / महारिष जी राज सरीबां मांहि थकां
महाभारत हुवौ सो क्युं / तद वेदव्यास कहै राजा म्हे
कासुं करा / हूंणी होइ सो टलै नही / दोहा / लाख सयापणा
कोरि बुधि कीया करौ सब कोइ / अणहूंणी हुंणी नही
हूंणी होइ सो होइ /१/ का० / न भूत पूर्वं न कदापि वार्त्ता /
हेमं कुरंग न कदा र इष्टवा / तथापि तृष्णा रघुनंदनस्य
विनासकाले विपरीत बुद्धि: /१/ इस्यां बातां कहि कहि
घणां ही समझायौ / फिरा राजा कहै माहा रिष जी
थांसुं ही भावी न टलै / तौ थांह रौ किसौ करतब / व्यास
जी कहै करता हार कहै / अरु भावी आगांना मानै तौ
म्हे कासुं करां राजा म्हे थांनुं ही कहां छां परा पेटी भावी
करि मांनसौं नहीं / राजा कहै नास जी थे पालस्यौ सो

नहीं करां। तौ राजा कहां छूं इति वातां मति करौ नै
मावी पदार्थ करस्योइ। सुणौ उत्तर दिसा घोडारी सौबति
आवसी पे देखण मति जावौ। पिण जास्यौ। जावौ तौ
जल घोड़ी गर्भ सुं छै सो मत लेज्यो। पिण लेस्यो। घोड़ी
ल्यो तौ घोडीरै बछेरौ होसी तिण मति चढ़ौ। पिण
चढ़स्यौ। चढ़ौ तौ सिकार मती जावौ। पिण जास्यो। राजा
कहै ना राजि नहीं जाउं। व्यासजी कहै राजा मावी छै। पा
पुं हीज हुसी। जे सिकार जावौ उत्तर दिसा वाग में मती
जावौ। पिण जाईस। वं वाग मैं चंपारौ रूख छै तिण
मैं देव कन्या छै। तिणनुं मतल्यावौ। पिण ल्याईस
ल्यावैं तौ जिग मति करैं। पिण तुं करीस। जिग करैं
तौ बालक ब्राह्मण मती वरे। पिण बालक वरीस
बालक वरै तौ क्रोध मति करैं। पिण करीस। इतरा
बोल सर्व पालीयो रहीस नहीं। भावी छै सो नहीं टलै।
इसौ कहि वेदव्यास उठीया। हिवैं कितरक दिने घोड़ांरी
सोबति आई। चाकरां कह्यौ पालीया छै तो मोल नहीं
ल्यां। देखतां कासुं लागे छै। सौबति देखणि गया।
आगे घोड़ी सरवरी दीठी। चाकरे कह्यौ राजी घोड़ी
सरवरी छै। राजा कहै व्यासजी पालीया छै। पालीया
छै तौ बछेरै मति चढ़ौ। घोडी ले हुई रै बंधाई।
बछेरौ जायौ। बछेरौ मोटौ हुवौ तद मुजरै आंगीयौ।
माहाराजा घोडौ चढ़ण जोग छै। व्यासजी पालीयौ छै।
पालीया छै तौ सिकार मती जावौ। जीण मंडाय राजा
घोडै चढ़ीयौ। घोडै असवार तस मेल हुवौ सिकार
गयौ। सिकार खेलतां उत्तर दिसरै बागमैं गयौ। वाग
मैं चंपारौ रूख छै। रूखमैं देव कन्या दीठी। मन लागौ
बांह पकडे घोडैं चढ़ाइ घरे आयौ। हिवैं घोडौ कन्या

देख राजा रौ मन उदार हुवौ। जिग कीजै तौ जीवत सफल व्है। इसौ विचार जिग आरंभीयौ। बूढौ ब्राह्मण कोई जुड़ै नहीं। तद कहै जुडै सो ल्यावौ। क्रोध नहीं करां तद मोटीयार बालक ब्राह्मण जिगमैं आंरा बैसारणीयां। जिग होवै छै। इसै ब्राह्मण कोई आश्चर्य देखि हसीयौ। राजा कोप होइ खडग सुं ब्राह्मण रौ मस्तक छेदीयौ। बीजा कूदि जिग कुंडमैं पडीया। पडंता श्राप दीयौ। राजा नुं कोढ़ी हुए। जिग विणास हुवौ। हिवैं राजारै सरीर ~~दुगंध~~ दुगंधि आई। तिण करि कुंवर राणी प्रधान सर्व लोक नैं दुगंधी ऊपनी। तरैं सगलां ही मिलि राजानुं एक अरवी माहे राखीयौ। जठारौ पवन ही जावै। ब्राह्मण एक राजानुं री सेवा नुं राखीयौ। हिवैं कितेक दिने राजा पासे व्यासजी आया। उणा राहि कहै तुं कुण किसी अवस्था। तद कहै हूं अपराधी। राजा जनमेजय। तौ राजा मोनुं उलखौ हूं वेदव्यास राजा पगे लागौ। व्यासजी बोलीया राजा तोनु पालीयौ छो। हूं तूं इता काम मति करैं सो तैं क्युं कीया। राजा नै कह्यौ थे थां पर्छ। महाभारत क्यों हुवौ। सो भावी पदारथ क्युं मिटै। राजा कह्यौ महारिषजी कहैं सो सत्य। हिवैं रिषजीरौ दरसण हुवौ सो निर्फल नहै म्हारौ उधार करौ। तद व्यासजी भागवत महाभारत बांचण लागा। कह्यौ राजा संसे मति करैं। व्यास वाचता गया। कोढ़ झगड़ता गया। व्यास कह्यौ टींटोडी रा इंडा एक वीरथंर नीचे दबीया अर एक रवीरथंर नीचे ~~भार डं~~ भारंड पंखीरा इडा दबीया। सो अजे जीवै छै। राजा नुं संसे आयौ। अजे कठा जीवै। रिष जी कह्यौ राजा संदेह भागौ नहीं। राजा कहै जा रिषजी

कोई संदेह नहीं। आगै वाचतां कह्यौ भारथ हुतां भीम हाथी चलाया सो अजेस धरती न पड़ीया। राजा उन्नौ जोवरा लागौ। व्यास पवन खांची लीयौ। हाथीयां रा खालड़ा धरती आय पड़ीया। राजा बात मांनी। सोलै कोड़ झड़ीया दोइ कोड़ रह्या। तैं कहुं छुं महा राजा चिरंजीव जिरा स्त्री रै वास्तै इतरा उदमाद हुवा तिरा स्त्री नुं पवन ही सुलारौ नहीं। तिरारौ वेसास क्युं आवै। इति दंपति विनोदे ... कथा त्रिंसम: ।३०।

फेर माहाराजा सभा विराजै छै। वडा वडा न्याव नावडै छै। राजा सारो साम्हौ जोइ कहै सूवौ कासुं कहै छै। सारो कहै माहाराजा सूवारी अजै परतीत आराौं छै। जे पुरुष भलौ छै तो कुंवरी लीलावती पुरुष मुख त्याग क्युं करै। राजा पूछीयौ या बात क्युं करि छै। सारो कहै माहाराजा सलामत एक सुखसेल नाम वन छै जठै भला २ भांति भांति रा वृक्ष छै। अनेक फूल फल बारै मासी छै। अनेक पंखी वसै छै। तठै एकरा आंब ऊपर सूवा रौ मालो छै बचा छै। सूवो सूहरी दोनुं सुखै रहै छै। सो एक समै वन मै दावानल लागौ। आवतौ आवतौ सूवारै मालै आय लागौ। सूहरी कह्यौ प्रै बचा संभाड़ ज्युं बचा ले आपां और ठौड़ जावां डरु दौं नेडी आई। ज्युं सूवौ नासरा नु त्यार हुवौ। सूहरी कह्यौ तुं म्हानुं कष्टमैं मेलि न जा। मरस्यां तो भेलाही मरस्यां। सूवौ कहै। श्लो.। भानुश्च मंत्रीदयता सरस्वती। मृतंगतां सानुप केनवेन। जंगा गते सा पुनरेव लेभि। जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यत।१। इसौ जांराी सूवौ चालतौ रह्यौ। सुई विलाप कर मुई। बचा भेली बली मुई। सो सारस पुर रौ धराी राजा सारंगधर

तिंरारैं लावरा सुंदरी रांराी। तिरारैं पेटि लीलावती नाम कुंवरी हुई। महारूप चतुर विचक्षरा। तिरारैं रहरा नुं राजा नवौ मोहल करायौ। अनेक गोखजाली कोरराी भांति भांति रा चित्रांम। सो एक दिन कुंवरी महल देखरा आई। एके कारीगर वाहीज जुगति मांडी छै। वना आंबौ सूवारौ मालौ। बचा। मुंहीज दौ लागी सूवौ उडतौ। इसी भांति सुं लीलावती दीठा। जाती सनरा जांणीयो पछालौ भौ याद आयौ। तरैं पुरुषरौ मुख त्याग कीयौ। इसौ परा घालीयौ जे पुरुषरौ मुंह देखूं नहीं। इरा मोसुं इस कीवी जे माइत परराजरा रौ कहै तैंरानुं चित्रांम देखालै मो मैं आ कीवी। पुरुष इसौ दुष्ट वै। तद राजा कहै हां सारो तुं साची छै। पुरुष इसौ हीज निठुर वै छै। इति दंपति विनोद सारो कथा एक त्रिंसम:। ३१।

वलै राजा इराहीज भांति सभा विराजै छै। सारो नुं सांची करि सूवा सामहौं जोइ कह छै सारो कासुं कहै। तद सूवौ कहै माहाराजा सारो नुं साची कीवी सो कासुं जराी यौ। ऽस्त्री तौ इसी वै छै। विशाला नगरी विमल सेन राजा राज करै। वडौ सुधर्मी राजा। तिरा राजा एक देहरौ करायौ। सो देहरौ बोहत सरवरौ हुवौ परा ईंडौ समौ न चढै। तद राजा कहै ओ कासुं जारापी जै। सूत्रधार कहै माहाराजा पतिव्रता ऽस्त्री चाढै तौ समौ चढै। राजा सहरमैं ढंढोरो फेरीयौ। तिरा सहरमैं गोमो साह रहै तिरारी स्त्री कहै हौं पतिव्रता छुं। सो गोमै पड हो कहयो घरे आयौ। तद गोमैरी मां लखमा कह्यौ। बेटा तैं कासुं कीयौ। गोमै कह्यौ म्हारी स्त्री पतिव्रता छै। माता तोनुं खबरि नहीं। माता कह्यौ बेटा

किमाड उठ बैसि आरी स्त्री रौ पतिव्रत परचौ दिखाडे।
जोमौं उरे बैठौ। बहू बोलाई। कह्यौ पांणी धराणी पडीसौ
धणीयौ छै तुं तुं लाज राखि। जे पतिव्रताव्रत मैं भंग
न छै तौ ईंडौ चाढि। तिरा कह्यौ पतिव्रत मैं भंग क्युं।
तिसमा कह्यौ। जिका स्त्री इकवीस पुरुषसुं रमी होइसा
सुध पतिव्रता कहावै। तद बहू कहै। सोलैसुं आगै रमी
पांच रमुं फिर आज। सासु चिता मति करौ राखुं पति
री लाज। जोमौं सुराणी खिसाणौ पडीयौ। सैहर मैं हासी
हुई। राज सभा सर्व हसीया कहैं धन्य पतिव्रता। तौ
कहूं छुं माहाराजा स्त्री तौ इसी वै छै। मृतकमछलांनु
आभडै नही। कहैं औ पुरुष छै हुं सती परपुरुष
भीटूं नही मृत कमछलौ हंसीयौ फूलांरी छडी सुं टालि
पडी। महावत चाबखा मारीया तद मूर्छा नाई सो माहा
राजा स्त्री इसी वै छै। तिरानुं राज साच कासुं जोरा कहै
छै। दूहौ। कहा अपराधि कहा पारकी। ना अति कीजैप्यार
नारी सेती नेह चित। धरैं तियां धिकार।१। वले महाराजा।
राजा भरथरी जोग क्युं लीयौ। तिका पिंगा आपजाणौ
छौ। रांणीसुं किसौ प्यार थौ ऽरु रांणी जाय महावत सुं
प्यार कीयौ। इसी नीच संगी वै छै। वले माहाराजा धनै
सेठ्री स्त्री रौ कासु चरित्र दीठौ। वले कोची कंदोइरा
राजनुं किसौ चिरत देखालीयौ। जिरा उपरि माहाराजा
सारोरी बातां नु साची कहै छै। जो स्त्री भली होवै तौ
माहाराजा आपरी उभां गुरांरी चौसठ जोगणीयां नु भक्ष
क्युं देवौ। इसा घणा२ पयोग दिखाया। तद राजा
कहै सूवा तुं कहै सो साच। स्त्रीरो वेसास न आवै। हिवै
राजा विक्रमा दित्य सूवा सारो दोनुं ही खुसी कीया।
कहै थे वडा पंडित। वडा ग्याता। थांहरी आवंरा क्युं हुवौ।

सो वात कही। तद पूर्व जनमांतर कथा कहवै छै। जो म्हे गंधर्व हुता। श्री इंद्र आगै नाटक करता। एकदिन इंद्र भूलतां देहिरैविषै सर्बभग देख हसीया। इंद्र कोप होइ श्राप दीयौ। जावो थे मनुष्य लोकमैं पंखी हुवौ। हुइ दुख भरौ। तद वेनती कीवी मांहरौ श्राप कद उतरसी। ताहवां इंद्र कह्यौ जे मनख लोकमैं राजा वीर विक्रमादित्य कलयुग रौ इंद्र छै तिणरी सभामैं कतूहल वार्त्ता करसौ तद गंधर्व देवता हुसौ सो माहाराजा रै प्रताप मांहरौ श्राप मोख हुवौ। म्हे देव पदवी पाई। माहरा मनोरथ फल्या ज्युं सगलां ही रा फलज्यो। सोरठो।

जालग सूरज ईस। तालगि राज थिर रहौ। देई सबै असीस। सूवौ सारो चालीया। १। यह चरित्र नीकै कह्यौ भाषा जोसी राइ। सब ग्रंथ की भांति लई। सुनत सबै मन भाय। १। इति दंपति विनोदे द्वात्रिंसम सूवा कथा ३२। संपूरण। शुभं भवतु। कल्याणमस्तु। श्री।

BIRLA COLLEGE LIBRARY

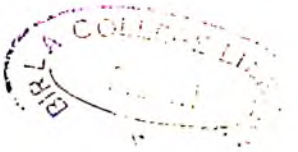

—·—

प्रतिलिपिकार — दीनानाथ

असाढ संवत १९९१
जुलाई सन १९३४